



गाधीजीकी अपक्षा



# गाधीजीकी अपेक्षा

[ राष्ट्रपिता द्वारा लोक प्रतिनिधियोंसे रखी गई अपेक्षाएँ ]

मो० ए० गाधी

समाह्व

हरिप्रसाद व्यास



नवजीवन प्रकाशन मंदिर

अहमदाबाद-१४



# गांधीजीकी अपेक्षा

[ राष्ट्रपिता द्वारा लोक प्रतिनिधियोंसे रखी गई अपेक्षाएँ ]

मो० क० गांधी

समाहक

हरिप्रसाद श्याम



नवजीवन प्रकाशन मन्दिर

अहमदाबाद-१४

मुद्रक आर प्रकाशक  
जीवणजा डाह्याभाई दसाई  
नवजावन मुणालय अहमदाबाद-१४

© नवजीवन ट्रस्ट १९६६

पहला सस्करण २०००

## प्रकाशकका निवेदन

गांधीजीका वाय-पद्धतिका निराक्षण करने पर उमका एक मुख्य लक्षण महत् ही ध्यानमें जाता है। मावजनिक हितके प्रश्नोंका विचार करत समय उनके तिणय किमी विगप विचारमरणीक आधार पर अथवा किमी निश्चित मिद्धातस फलित नहीं हाने थ। उनका ध्यान केवल -मी बात पर केन्द्रित रहता था कि सत्य और अहिंसाके मूठ भूत मिद्धाताकी दगाके शासनसम्बन्धित कामकाजमें व्यवहारका रूप कम लिया जाय। कांग्रेसका और कांग्रेसके द्वारा भारतीय राष्ट्रका उद्धान जा मागदान किया उम समझनेके लिए यह बात खास तौर पर ध्यानमें रखने जसी है।

गांधीजीने स्वरायकी स्थापनाके लिए कांग्रेसजनाका अपनी वाय पद्धतिका तात्मीय दी थी इतना ही नहीं स्वरायकी स्थापना होनक बाद स्वरायमें राय प्रवृत्त कस किया जाय इन विषयमें कांग्रेसजनाकी दृष्टि और समझका भी उद्धान विकास किया था।

१९३७ में भारतकी जनताकी प्रातीय स्वरायके मर्यान्तित अधिकार प्राप्त हुए उस समयमें आरभ करके १९६७ में शासनकी सपूर्ण सत्ता और अधिकार भारतके लोगका मिल तब तक और उमके बाद भी गांधीजीन अपना यह वाय जीवनक अन्तिम दिन तक धारू रखा था।

स्वनत्र भारतीय राष्ट्रकी राज्य-व्यवस्थाक बारेमें गांधीजीका मूल आग्रह यह था कि जिन सबका पर देगाके शासनकी जिम्मेदारा है उद्दा वाताका मग पूरा ध्यान रचना चाहिये (१) उद्द एक गराव राष्ट्रकी राज्य-व्यवस्था बनानी है और (२) उम चलत हुए उद्दें भारतक रिठे हुए और गरीब जन समुदायके हितका सबसे पहलू



खयाल रखा है। गांधीजी १९१५ में स्थायी रूपसे भारतमें रहनेके लिए दक्षिण अफ्रीकासे लौटनेमें उ होत यह समझाना शुरू कर दिया था कि यह कार्य कैसे किया जाय। इसलिए पहले १९७ में जीर फिर १९४७ के बाद गांधीजीन भारतका राजकाज चलानवाक जनसेवकोंको यह बताया था कि उनकी जिम्मेदारी क्या और कितनी है।

इस पुस्तकमें गांधीजीके इस विषयसे सम्बन्धित भाषणा जीर लेखोंका संग्रह किया गया है। इन लक्षा और भाषणोंमें उहान स्पष्ट रूपसे यह दिखाया है कि कांग्रेसजनोन भारतका शासन तत्र हाथमें लेकर कमी जिम्मेदारी अपन सिर उठाई है और इस जिम्मेदारीको व किस प्रकार भरीभाति अंग कर सकने ह।

गांधीजीकी रीति आदेश देनेकी नहीं थी। और न उहान कभी यह माना कि कांग्रेसजनाका आदेश देनेकी कोई सत्ता उनक पास है। व कांग्रेसियोंने भीतरकी सदभावना और अच्छाईसे अपील करत थे और यह विश्वास रखते थे कि उनकी अपील व्यय नहीं जायगा।

जनसेवकोंको भारतकी शासन-व्यवस्था द्वारा भारतीय जनताकी कितनी और क्या सेवा करनी है इस सम्बन्धमें गांधीजीकी जागाओ और अपेक्षाओका दान हमें इस संग्रहमें होता है। ऐसा लगता है कि आज मूलभूत बातोंको कुछ हद तक भुलाया जा रहा है और राजनैतिक तथा सांख्यिक कार्योंको कुछ मिथ प्रयोजनस कार्य करते दिखाई देते ह। ऐसे समय यह संग्रह हमें जाग्रत करनेमें बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

जागा है भारतकी शासन-व्यवस्थाका जिम्मेदारी अपन कंधा पर लेनवाल संवकास राष्ट्रपितान जो अपेक्षाएँ रखा ह तथा इन गरीब देशका जनताके प्रति उनका जो धन्य है उसका स्पष्ट दान उ हे इस संग्रहमें होगा।

## अनुक्रमणिका

प्रकाशकका निवेदन	२
विभाग-१ प्रास्ताविक	
१ अधिकार-पत्र	५
२ समन्वय शासन-व्यवस्था	५
विभाग-२ विधानसभामें	
३ विधानसभाआमें जाना	६
४ धारासभाएं और रचनात्मक कार्यक्रम	९
५ धारासभाआका माह	११
६ रचनात्मक कार्यक्रम	१
विभाग-३ विधानसभामेंके सम्बन्ध	
७ गणप-पत्रका मसविदा	१६
८ धारासभाओंके सदस्य	१७
९ धारासभाकी सावधानी	१९
१० सविधान सभा फूटोकी सज नहीं	१९
विभाग-४ विधानसभाके सदस्योंका भत्ता	
११ धारासभाके वाप्रसी सम्बन्ध और भत्ता	२१
१२ धारासभाके सदस्योंकी तनवाह	२४
विभाग-५ विधानसभाके सदस्योंकी चेतावनी	
१३ बडे दु खकी बात	२७
१४ एक एक पाई बचाइमे	२९
१५ हम सावधान रहें	३०
१६ वाप्रसजनामें ध्रष्टाचार	३

### विभाग - ६ मतदान, मताधिकार और कानून

१७ धारासभाक सन्स्य और मतदाना	१६
१८ म्त्रिया जीर विधानसभायें	३८
१९ मनाधिकार	४०
२० कानून ास सुधार	४२

### विभाग - ७ पद-ग्रहण और मत्रियोंका कतव्य

२१ काप्रसी मत्रि-मण्डल	४४
२२ कितना मौक्तिक अतर है।	४९
२३ मत्रीपद काई पुरस्कार नही है	५२
२४ विजयकी कसौटा	५५
२५ पद-ग्रहणका मेरा जय	५८
२६ जागेचनाओका जवाब	६१
२७ काप्रसी मत्रियोंकी चौहरी जिम्मदारी	६९
२८ गरावबन्दी	७२
२९ खाना	७६
काप्रस सरकारे और ग्राम-सुधार	८८
३१ काप्रसा मत्रि मण्डल जीर नई तालाम	९४
३२ कित्नी माध्यम	१०२
३३ गालाओमें सगीत	१०५
३४ माहित्यमें गदगी	१०६
३५ जजा वेश्यागूह और घडदौड	१७
६ कानून-सम्मत व्यभिचार	१९
३७ मत्रि मण्डल और हरिजनोकी समस्यायें	११०
३८ आरोग्यके नियम	११६
३९ लाल फोतागाही	११८

### विभाग - ८ मत्रियोंके वेतन

४ व्यक्तिगत लाभका आगा न रखें	१२०
४१ वेतनोका स्तर	१२१

४२ मंत्रियोंका वनन	१००
४३ मंत्रियोंके वननमें वड्डि	१००
४४ हम श्रिष्टि हरूमनका नक्का न बर	१२५

### विभाग-९ मंत्रियोंके लिए आचार-महिता

४५ स्वतंत्र भारतके मंत्रियोंने	१०९
४६ मंत्रिया तथा गवनराके लिए विधि निपध	१०९
४७ दा गळ मंत्रियोंने	११
४८ मंत्रियाको मानपत्र और उनका सत्कार	१२
४९ मानपत्र और फूजके हार	१३४
५० मंत्रियाका चनावनी	१५
५१ गरीमी राजाका बात नहा	१६
५२ अनाप गनाप सत्कारा खच और रिगा	१७
५३ क्या मन्ना अपना अनाज-कपण रागनका दुवानामे हा म्हराणे	१९
५४ सत्कारा आपे मंत्रियाका वार	१६०
५५ वाशगा मन्त्री माहव गग नना	१६१
५६ दगमवा और मन्नाप	१४१
५७ वानूनमें म्स्तगजा ठान नहा	१६२
५८ अनुभववा गगानी मन्ना	१४

### विभाग-१० मन्त्रि-मण्डलाका आलोचना

५९ एक आलोचना	१६४
६० एक मन्नानी परगाना	१६५
६१ मंत्रियाकी टाका	१५०
६२ सरकारका विराज	१५१
६३ मंत्रियाका भावक नही गाना चाहिय	१५०
६४ धमकिया—मंत्रियोंके लिए राजका वान	१५०
६५ सरकारको बमजार न जनाइये	१५४
६६ मन्ना और जनता	

## विभाग - ११ मन्त्रि-मण्डल और अहिंसा

६७ हमारी असफलता	१५५
६८ आत्म-परीक्षणका अपील	१५६
६९ नागरिक स्वाधीनता	१५८
७० तूफानके आसार	१६१
७१ विद्यार्थी और हताश	१६४
७२ क्या यह पिबेटींग है ?	१६७
७३ मन्त्रि मण्डल और सेना	१६९
७४ काग्रसी मन्त्री और अहिंसा	१७०
७५ सन्नमुच नामका बात	१७३

## विभाग - १२ विविध

७६ प्रान्तीय गवर्नर कौन हो ?	१७५
७७ भारतीय गवर्नर	१७७
७८ गवर्नर और मन्त्रागण	१७९
७९ विमान प्रधानमन्त्री	१७९
८० प्रधानमन्त्रीका श्रेष्ठ काय	१८०
८१ विधानसभाका अध्यक्ष	१८१
८२ सरकारी नौकरिया	१८१
८३ सरकारी नौकराकी बहाली	१८८
८४ लोकतन्त्र और सेना	१९०
८५ अनुशासनका गुण	१९२
८६ मन्त्री और प्रमाण	१९४
८७ नमक कर	१९५
८८ अपराध और जल स्रोत	१९६ १९७

● धारानमावे सदम्याको उनका किरामा और भता चाहिय मत्रियाका उनके वनन चाहिय बकीशारा उनका भेटनताना और मुक्कम वाजाता उनका त्रिक्रिया चात्रिय भा-त्रापना अपन लडकके लिए एमा गिप्पा चात्रिय जिसम व मौजूदा जावनमें नामा गिरामा आदमा वन जायें लखपनिया और परात्पनियाको मव तरहका मुविघायें चाहिय जिसम व अपन गग्वा-वरगाका अरखा-वरखा तक पहुचा सकें और वाकाक गोगाका नि मत्व गानि चाहिय। ये मव बडे सुन्दर दाम उम म-यवर्नी सम्याक आसपाम घूमत ह। सत्र काई तात्रामें मन्न ह। काई उसम अपनका मुक्न करनका धिन्ता नही करता। और इमलिए ज्या ज्या उमका वग बढता जाता है त्या त्या व अधिक हर्षो-मन वनन जाने ह। परन्तु व नही जानने कि यह कृतान्तसा ताडव है और उहें जो हर्षो-मान अनुभव हाना है वह उम रगाक हृत्पका तेज घल्वन जमा है जा अपन जावनका जन्तिम सामें धीच रखा है।

हिन्दी नवजीवन १२-३-२२ प० २३७

\*

● जत्र कभा आपके हृत्पमें सन्ह उत्पन्न हों या आप अपन वारेमें अत्यधिक विचार कर तत्र आप अपने सामन यह कथोटा रखें। अपनी आखाम दसै हुए सबस गरीब और मवस दुवक मनुष्यका चेहरा आप याद कर और अपने मनस यह प्रश्न पूछें कि जो कम्म उठानेका विचार आप कर रह ह वह उम गराव और दुवल्के लिए उपयागा सिद्ध होगा या नहा ? उस कदमसे उस कोई लाभ होगा ? उम कदमसे क्या व आपने जीवन पर और अपने भविष्य पर फिरस अधिकार पा सकगा ? दूमरे गलामें बहू ता क्या आपका वह कम्म भूरे और आच्या रिमक दारिद्र्य भागनवाके लोगको स्वरायको त्रिगामें उ जायगा ? उमके चान आप देखेंगे कि आपक मन्देह और आपका व्यक्तितव सबया गुप्त हा गये ह।



गाधीजीकी अपेक्षा



## पाठकोसे

मर लगनाका महत्तस अध्ययन करनवाला और उनमें दिग्दर्शा  
गनवागस म यह कहना चाहता हू कि मुय हमगा एक हा रूपमें  
खिलाइ दनका कोइ परवाह नहा है। सत्यकी अपनी खाजमें मन वत्तस  
विचाराका छाया है और जनक नई बातें म सात्ता भा हू। उमरमें  
भट्ट हा म बूटा हा गया हू ऐकिन मुय एमा नहा लगता कि मरा  
जातरिख विनास होना बन्द हा गया है या दह छूटनेके बाद मेरा  
विकाम वत्त हा जायगा। मुय एक ही बातना चिन्ता है और वह  
है प्रतिष्ण सत्यनारायणका वाणारा अनुसरण करनरा मरा तत्परता।  
इमणि जव किना पाठकको मरे दो खामें विराध जसा गग तव  
अगर उम मरा समजलारामें विवास हा तो वह एक ही विषय पर  
खि लए दो खामें स मेरे दादक लखका प्रमाणभूत मान।

हरिजनवच १०-४-३३

गाधीजी

१

## अधिकार-पत्र

स्वतंत्र भारतका संविधान

म एसे संविधानकी रचनाके लिए प्रयत्न करूंगा जो भारतका हर तरहकी गुश्मीस और किसीका आश्रित होनेकी भावनास मुक्त कर देगा और यदि जहरत पड़े ता उसे पाप बग्नेका भी अधिकार देगा। म ऐसे भारतके लिए काय कहूंगा जिसमें गराबम गरीब आद मियाका भा ऐसा लगे कि भारत उनका अपना देग है — जिसके निमाणमें उनका भा महत्वपूर्ण हाथ है। म एसे भारतके लिए काय करूंगा जिसमें बसनवाल शोगाका ऊधा वग और नीचा वग नहा हागा वह एमा भारत हागा जिसमें सारी कौमें पूरी तरह मेल मिलाप और मिश्रताके साथ रहगी। ऐसे भारतमें अस्पश्यताके अभि शापके लिए जयवा नगीरे पयो और मादक पदार्थके अभिशापके लिए काय गजाइग नहा होगी। उमम स्त्रिया पुरपाके साथ समान अधिकाराता उपभाग करेगी। चूकि हम बाकीकी दुनियाके साथ गातिस रहगे और न हम दूसराका गोपण करग और न अपना गोपण होने देंग इसलिए हमारी ऐमी छाटीस छोटी सेना हागी जिसकी कि बल्पना की जा सक्ती है। उस भारतमें एम समस्त देगी या विदेशी हिताका आन्तर बिया जायगा जितना देगके करोडा मूक नागरिकाके हिताके साथ कोई सधप और विराध नही होगा। म ब्यक्तिगत रूपमें देगी और बिल्गीके भेदसे नफरत करता हू। यल मरे सपनाका भारत है।

इमसे कम किसी चीजसे मुझे सतोप नहा हागा। १

स्वराज्यकी ऐसी गति-व्यवस्थामें जूआ गरावगोरा और दुराचार या बग विद्रोहों लिए काई स्थान नहीं होगा। घना लाग जपन घनका उपयोग बुद्धिपूर्वक उपयोग कायोंमें करण अपनी गति-शासक बढानमें या गारीरिक सुखायी बढिमें उसका अपव्यय नग करण। उसमें ऐसा नहीं हा सकता नहीं हाना चाहिय कि कुछ घना ता रान-जन्ति महंगमें रह और लाखा-कराडा एसा मनहस थापडियामें रान जिनमें हवा और प्रकाशका प्रवेश तक न हा। अहिसक स्वराज्यमें यायपूण अधिकारोका किसीके भी द्वारा कभी अतिक्रमण नहीं हा सकता और इसी तरह किसानों कोई अयायपूण अधिकार भी नग हा सकता। सुमगठिन राज्यमें किसीके याय्य अधिकारोका किसी दूसरक द्वारा अयायपूर्वक छाना जाना जसभव हाना चाहिय और कभा एसा हा जाय ता अपत्याका अपदस्य करणक लिए हिसाका आशय उनकी जरूरत नहीं होनी चाहिय। २

### सबे लोकतंत्रके विकासक साधन

भारत सबे लोकतंत्रके विकासका प्रयत्न कर रहा है जिसमें हिंसाके लिए कोई स्थान नग हागा। इस प्रयत्नमें हमारे पास वहा हाय जा सत्याग्रहके हैं—अर्थात् चरखा ग्रामाद्याय हाय उद्याय द्वारा दी जानेवाला प्राथमिक शिक्षा जलमता निवारण कौमा एकता श्राव वदा और जहमत्यागकी तरह मजदूरोंका अहिसक संगठन। इनका जय है सामुदायिक प्रयत्न और सामाजिक शिक्षण। इन कायोंक संचालनक लिए हमारे पास बग बग संधार्ये ह। य सब गड्ड एचिठक ह और इनका एकमात्र गच्छल है भारतके छोटेसे छोटे आत्माना सग। ३

## संसदीय शासन-व्यवस्था

स्वराज्यस्य मया अभिप्राय है लोक-सम्मतिक अनुसार हानवाला भारतवर्षका गामन। लोक-सम्मतिक निश्चय देशक वालिग लागाका बडाम बनी सरयाके मतके द्वारा होगा फिर व स्त्रिमा हा या पुरप वसी दगक हा या इस दगमें आकर बम गये हा। वे लाग ऐसे हाने चाहिये जिहान अपन गारीरिक् थमके द्वारा राज्यका कुछ सेवा का हो और जिहान मतगताजाकी सूचीमें अपना नाम लिखवा लिया हो। १

फिन्हाल मेर स्वराज्यका अब होगा भारतकी आधुनिक व्याख्या वाता मनग्य शासन-व्यवस्था। २

आजका मरी सामूहिक प्रवृत्तिका ध्यय ता हिन्दुस्तानका प्रजाका इच्छाक अनुसार चल्नेवाग पार्लियामेन्टरी पद्धतिका स्वराय पाना है। ३

मन्तीय गामन-व्यवस्थाके अभावमें हम कहीक न रहेंग।

तत्र हमारी मसद क्या करेगी? अत्र हमारी मसद हा जायगी तब तमें महान भूल करने और उह सुधारनेका अधिकार हागा। प्रार भिक अवस्थाओंमें बग बडी भूठ हमस हागी हा। ब्रिटेनकी लोक सभाका इतिहास बडा बडी भूलाका इतिहास है। एक अरबी कहावत कहता है कि मनष्य भूलाका अवतार है। स्वरायका एक परिभाषा है भूण करतरी स्वतन्त्रता और का हूई भूणका सुधारनेका कतध्व। और एसा स्वराज्य पार्लियामेंट — मसद — म हा निहिा है। उसी पार्लिया मन्त्री जाग हमें जरगत है। आज हम उमके योग्य ह। ४

३

### विधानसभाओंमें जाना

मैं आपसे कहूँ कि धारासभाआ (विधानसभाआ) का वहिष्कार सत्य और अहिंसाका तरह कोई गारुवत अथवा सनानन सिद्धांत नहा है। उनके प्रति मेरा जो विरोध भाव था वह अज बहुत कम हा गया है। लकिन इसके य मानी नही ह कि म पहलेकी सहयोगका स्थितिकी ओर त्रोट रहा हू। यह तो गुद्ध युद्धकलाका प्रदन है अमक समय पर सबसे जरूरी क्या है बचल प्तना ही म कह सकता हू। क्या म वही असहयोगी हू जा कि १९२ में था? हा म वही असहयागा हू। परंतु आप लोग यह भूल जाते ह कि म इस जयमें सहयोगा भा था कि असहयोग मन सहयोगके खातिर किया था और तब भी मन कहा था कि यदि म देशको सहयोगके जरिय जाग के जा सकू तो मय सहयोग करना चाहिय। धारासभाओंमें जानकी मन अज जो सलाह दा है वह सहयोग देनेके लिए नही बलिक सहयोग देनेके लिए दी है।

यदि धारासभाओंके चुनावकी लणार्ईका अथ सत्य और अहिंसाकी कुरवानी हो तो प्रजातंत्रको कोई एक क्षणके लिए भा नहा चाहगा। जनताकी वाणी परमेश्वरकी वाणा है और यह उन ३० करोड़ मनुष्याकी वाणी है जिनका कि हमें प्रतिनिधित्व बग्ना है। क्या सत्य और अहिंसाके द्वारा ऐसा करना सभव नहा? जो लाग जनताके प्रतिनिधि नहा ह जो जनताके सेवक नहा ह उनकी जाबाज जग हो सकती है परंतु उन लागोकी नहा जो ३० कराड मनुष्याक सबन हानका दावा करत ह।

हमारे देशके लोगोंकी बहुत बड़ा सख्याको वाट (मत) देनेका अधिकार प्राप्त हो गया है—उन्में म करीब एक तिहाई भाग वाट द सकते ह । इन चुनावान हमें उनके पाम कायसेका मारा कायक्रम ले जानेका मौका मिया है । यदि यह बात थी तो गांधी-भद्रा-मधक मन्त्र्य क्या अन्ग पन् रहते ? इसमें एक नहा कि हम रचनात्मक कायक्रमका प्रतिनासे बध हुए ह । परन्तु क्या यह देखना हमारा कतव्य नही कि हमारे नाम पर जो लाग धारासभाओंमें जाते ह व रचनात्मक कायक्रमको वहा पूरा करते ह या नहा ? यान रखिय कि अगर रचनात्मक कायक्रमके कोई भी राजनीतिक कायक्रम टिक नहा सकता । उह सारा कायक्रम मत्य और अहिंसाका प्रतीक है और यह रखना गांधी-मेवा-मधका सबसे पहला काम है कि उन कायक्रमका किसी तरहका क्षति ता नही पन्च रहा है ।

यह बात ध्यानमें रखिय कि मरा मतलब यह नही है कि आप अपने सन्ध्याको धारासभाओंमें एक अपरिहाय विपत्ति (बुराई) ममझ कर भर्जें । वह तो आपका एक कतव्य होना चाहिय । आज जो धारा सभायें ह व हमारी ह उनमें हमारा जनताके प्रतिनिधि ह । हमें बहा अपन मत्य और अहिंसाके मिद्धाताका पालन करना है । म कायक्रमस जा हट गया ह उमके पीछ बुछ तास कारण ह । यह मने मन्त्रिय मिया है कि कायक्रमको म और भी अधिक मन्त्र ले सकू । जब तक मत्य और अहिंसा पर आधार रखनेवाल १९२० के कायक्रमका प्रनिषा पर कायक्रम कायम है तब तक मरा मारा समय और सारा क्विन् मका मयाके लिए अपित है ।

किन्तु यह प्रश्न पूछा जाता है कि जिन धारासभाओंमें हमन मुग्गात्पन की उनमें हम क्या करें ? तबको धारासभाओंमें जायका धारासभायें भिन्न ह । हम उन नन् नहा करना चाहत नन् ता म उस मिस्टम — पद्धति या प्रणाली — को करना चाहत ह जिस चरानके लिए य धारासभायें बनाई गई ह ।

हम वहा सत्य और अहिंसाका कुरवान करनेके लिए नहा बल्कि उद्वेग वहा स्थापित करनेके लिए जाते ह। आज कांग्रेसका चुनाव पर कुछ लाख रुपये खर्च करने पडे ह। लेकिन देगमें जब हम एसी ताकत पदा कर देंगे जिसका कोई मुकाबला न कर सक तब हमें एक पार्टी भी खर्च नहा करनी पडेगी। लेकिन सच बात तो यह है कि हम जब सर रचनात्मक कार्यक्रमको बातें ही किया करते ह। जब तक असरमें हमने कितना हासिल किया है? राष्ट्रीयताके आज कितने विघ्न हमारे पास ह? यदि सम्पूर्ण रचनात्मक कार्यक्रम हमने पूरा कर लिया होता तो आज किसी भी प्रांतकी धारासभामें सिवा कांग्रेस पार्टीके कोई दूसरी पार्टी न होती।

लेकिन मन जो यह सब कहा है उसका यह मतलब नहीं कि आप सबके सब आज धारासभाओंमें जानकी बात साचने में। सबका ता बात हा नहा गांधी-सेवा-संघका एक भी आदमी धारासभामें जानका प्रयत्न न करे। मेरे कहनेका मतलब तो यह है कि अगर मौका आ जाय ता कोई उससे पहलू न बचाय। धारासभामें जानके लिए कानूना धारीकियाका जान जरूरी नहा। साहस और रचनात्मक कार्यक्रममें अचल उदा धस इतना ही वहा जानके लिए जरूरी है। आपमें से जो लोग धारासभामें जाय, उनसे मुझे यहा उम्मीद रखनी चाहिय कि आप वहा अपनी तबली चगाना जारी रखेंगे और मध्य निपथ तथा रचनात्मक कार्यक्रमके लिए आप वहा काम करंगे। लेकिन वहा सत्ताके लिए छाना झपटा नहा होना चाहिय। उसका मतलब ता हमारी बरबादा होगी। केवल वही लाग धारासभामें जायेंगे जिन्हें कि गांधी-सेवा-संघ जानके लिए कहेगा। म इससे इनकार नहा करना कि धारासभामें एक भारा प्रभाव न ह व करार करीव गराबका दुकानें ही ह। स्वाथ साधनवांग और नीकरियाके पीछे पडे रहनेवालाको वे मौका देती ह। किंतु कांग्रेसका प्रसता काइ गांधी-सेवा-संघका सदस्य इस गदे उद्भवको लेकर धारा सभामें नहा जा सकता। कांग्रेसका नेता कांग्रेसके कार्यक्रम पर ध्यान

दन्तक लिए उन्हें बाध्य करता रहगा और नाजायज तरीकासे उसमें किमोदा जरा भी हाथ नहा डालने दगा। इस तरहकी प्रतिभा लेकर लोग बड़ा कृत-य-बुद्धिस जायेंगे न कि उसे एक अपग्रिहाय विपत्ति समझकर। अगर हमसे हा सवा ता ग्यारहा धारासभाआकी हमें एस धार्मियाम भर दना है जा फौलादज जसे सच्चे हा लोकसेवा जिनका प्रत हा और जिनका अपना कोई स्वाथ न हो। १

४

### धारासभाए और रचनात्मक कार्यक्रम

धा किगोरलालकी शका और भय यह है कि धारासभा (विधान सभा) का कार्यक्रम हमारा प्रगोभनावा उभाडता है और मनुष्य हमस अपना भूल जाता है अत उसका सत्य और अहिंसाको भूल जाना स्वाभाविक है। म मानता हू कि धारासभाका कार्यक्रम मनुष्यका लाज्मानाना उभाड सरता है और उस बड बड प्रलोभनामें डाल सफता है। पर क्या सा बजहस हमें उससे अपना पहलू बचाना चाहिये ? हम स्वयं प्रगोभनारा प्रतिरोध क्या न कर ?

हमारा कार्यक्रम बेबड गव ही है — और वह है रचनात्मक कार्यक्रम क्वाकि स्वराय इमी पर त्तिभर करता है। किन्तु धारासभा आमें गानमें सत्य और अहिंसाका हम जरा भा गुरवान नही करग। वहा जाकर भी हम रचनात्मक कार्यको मदद प्चवाना चाहत ह। म आपस कहता हू कि यदि हम सबन करवको बुद्धिपूर्वक चलाया हाना तो हम स्वराय हासिल हो गया होना और हमें धारासभाआमें नहा जाना प्ता। अभी तक हम चरणक साथ या ही खेते रह। हमन उस बुद्धिपूर्वक चगाया न्सा है। अज अगर हम उस बुद्धिपूर्वक चलाना चाहत ह ता हमें तीन बराड मतताताआक प्रतिनिधियाक घनिष्ठ सारमें जाना ही चाहिये। इसका यह अर्थ नहा कि अगर यह बात



है तो हम सभाको धारासभाओंमें जाना चाहिये या हममें से जा जाना चाहें उन सबको जानकी इजाजत मिल जानी चाहिये। हम एक एक बारमें अच्छी तरह जाच करगें। इमका यह अर्थ था कि हम सघका दरवाजा धारासभाके सभी सन्स्याके लिए नटा गान गटे ह। हम तो सिर्फ उन्हीके लिए खाल ह जा रचनात्मक कार्यक्रमकी प्रतिष्ठा क्रिय हुए ह और जिनके बगर कांग्रेसको धारासभाका एक जगह खो देनका अदेगा हो। हम चाहते ह कि अगर हा सकें ता धारासभाओंमें सब एस ही आदमी भज जाय जो चरखमें विश्वास रखत ह।

धारासभाके कार्यक्रमको दाखिल करके हम जहिंसाका दिगाम एक कदम आग बट रहे ह। सत्य और अहिंसा मठवासा सया सियाके ही धम नहीं ह धारासभाआ जदान्ता और अय व्यवहारामें भी य सनातन सिद्धांत लागू हो सकते ह। जापकी श्रद्धागत बहुत सप्त परीक्षा होनवाणी है परंतु इस सप्त परीक्षाके डरस हा जाप उससे अपनको न बचायें।

सारा ही रचनात्मक कार्यक्रम — हाथ-बताई जीर हाथ-बुनाई हिंदू मुस्लिम एकता अस्पश्यता निवारण और मद्य निषेध — सत्य और अहिंसाकी शोधके लिए है। धारासभाओंमें जानका अगर हमारे लिए कोई दिग्दर्शनी हो सकती है तो वह सिर्फ इसालिए हो सकती ह किती और कारणसे नहीं। सत्य और अहिंसा साधन भी ह और साध्य भी ह जीर यदि अच्छे और भच्चे जात्मी धारासभाओंमें भजे जाय तो वे सत्य और अहिंसाकी ठाम शोधका साधन बन सकती ह। अगर व एसी नहीं हा सकती ता यह उनका नहीं बल्कि हमारा दोष हागा। जनता पर हमारा सच्चा काबू हो तो धारासभाए सत्य और अहिंसाकी शोधका साधन अवश्य बनेंगी दूसरा कुछ हो ही नहीं सकता। १

## धारासभाओका मोह

म मानता हूँ कि धारासभाओं में या अन्य निर्वाचित सभ्याओं में किसी न किसी कांग्रेसीको ता जाना ही चाहिये। पहले मैं इस मतका नहीं था कि जहाँ चुनाव हा वहाँ कांग्रेसियाका उम्मीदवारा करना ही चाहिये किन्तु अब मैं इस मतका हूँ। मरी यह आशा सफल नही हुई कि सत्र कांग्रेसी धारासभाका बहिष्कार करगे। अब जमाना भा बदला है और स्वराज्य नजदक आया है। यदि ऐसा है तो जहाँ चुनाव हाता हा वहाँ कांग्रेसी उम्मीदवार हान ही चाहिये। इसमें सम्मान कभी हतु हा ही नही सक्ता सवा ही हतु हा सक्ती है। कांग्रेस जमा सभ्याकी यह प्रतिष्ठा होना चाहिय और है कि जिम वह पसन्द कर वही चुनावके लिए खडा हो जिस आत्मीको वन्द पसन्द न कर उस दुःख ता हाना ही नही चाहिये, बरिन् उम दूसरी सवाक स्थिति मिलनकी सुगी होना चाहिये। वास्तवमें एसी स्थिति नही है यह दुःखकी बात है।

दूसरे चुनाव ठहलमें कांग्रेसक पसा सच करनेका जम्मत हा नही होनी चाहिये। लाकप्रिय सभ्याके उम्मीदवार ता घर बडे चुने जाने चाहिये। गरीब मतदाताओंके लिए सवारीका इतजाम घर बडे हाना चाहिये। उदाहरणके लिए पटनाक गावक मतदाताओंका नजियाना जाना पडे ता गरीबोंका किराया पेटलाके सगहाल लोग दें। सगग्नि गामसत्तात्मक अहिंसक सभ्याकी यह एक निगानी है। पस पर नजर रखनेवागी सभ्या गरावाका सवा कभा नही कर सक्ती। अगल गमाकी लाल पसेस जीतो जा सक्ती ही तो अप्रजी मस्ततन जा अपास पमा लष कर सक्ती है और करता है सवस प्रिय मानी जायगी। किन्तु ह्वाकत यह है कि गहा नीकर भी जा थन थन तनगाहू त्त ह

आ तर विभिन्न मन्त्रणाया या कौमाङ्क पारस्परिक व्यवहाराका नियमन ननाआन अपना मरजास विय ह्वा समझोता या रायक जब रत् ग् ह्वा समझोता द्वारा करना एक बात है और आम लाग एन-दूमरक घमों और वाहरा व्यवहाराक प्रति आन्तर भाव रखन लगे यह विन्तुत्त दूमरा बात है। धारागभाआके सम्म्य और वाप्रेसक कायवता गाववि लागामें पहुचकर जब तक उन्हें परम्पर सहिष्णुता रखना नहा सिखायेंगे तब तक यह चीज सम्भव नहा है।

फिर कानूनक बल पर श्राव बन् कराना — और यह तो करना न हागा — एक चाज है आर मद्य निषेधका स्वच्छाम पालन करवा कर म्म त्रिकाय रमना विन्तुत्त दूसरा चीज है। निराग और बठ ठान गग हा यह कहन ह् वि मर्चींग और भारा जामूगी पद्धतिक बिना मद्य निषेधका काम चन् नहा सकता। अगर कायवता ग्रामजनकि पाम जायें आर जहा जहा गग श्राव पात ह् बहा उमक घुर परि णाम गगारा जच्छा तर समझायें तथा गाथ करनवा विनाम गग वना लनक कारण गाज निवा और गगारो महा मान करायें तो मद्य निषेधका काम बिना किमा सचक चन् सकता है। न्तना ही नहा उमम मनाश भा हा सकता है। यह काम स्थिया विनाम रूपस कर सन्ता ह्।

यहां बात अस्पश्यताका भा लागू होना है। अस्पश्यताक दुष्परि णामारा कानून द्वारा हम भन् नष्ट कर दें, और यह करना हा है परन्तु जब तक गग अपा त्रिम छजाछूनका भावनाओ नहा निवागे तब तक हमें सच्चा स्वतंत्रता नहा मिन् मवती। जब तक आम जनताक ह्दयम अस्पश्यताकी भावना दूर नहा जना तब तक वह एकताका भावनाम और एक ह्दयम बन्पि काम नहा कर सकता।

इम प्रकार अस्पश्यता निवारणका काय तथा इस रचनारमक कायक्रमक अय तीना अग ओकगिणास भरे हुए ह्। और अब ता तान करा स्त्री-मुष्पाके हायमें — सहा या गलत रूपमें — सता सौप

नी गई है इसलिए यह काय तात्कालिक महत्त्वका हा गया है। यह सत्ता चाह जिनना अल्प या सीमित हा ता भां कायसवादिया और दूमराके हाथमें — जिह इन मतदातायामे वोट लन हा — इन तान करा मनुष्याका सही या गलत सम्तेस शिक्षा देनेकी शक्ति है। जा वस्तुए उनके जीवनके साथ अत्यत निकटका सम्बन्ध रखती हं उनमें उन लगानी बिल्कुल ही उपेक्षा करना गलत भाग हागा। १

७

### शपथ पत्रका मसविदा

श्री ब्रजलाल नहटन हरिजन में छापनके लिए शपथ-पत्रका जा मसविदा भजा है वह नाच लिया जाता है

इस शपथ-पत्र पर हिन्दुस्तानकी सनिक और जमिनिक मरकारो नौकरियाके सारे सत्स्याका केद्रकी प्रातका या स्थानीय नौकरियाके सारे उम्मात्काराका इन सरकाराक मानहत दूमरो बडी बडा तनखाहावागे नौकरियाक लिए अर्जी कर्नवाका को तौर विधानसभाआन सत्स्याके साथ सविधान-सभाक सत्स्या को ना हस्तागर करन हाग।

म ईमादारीक साथ यह शपथ लता हू

१ म भारतीय सघरा नागरिक हू जिसक प्रति हर गलतमें बफागर रहनका म बचन देता हू।

२ म इस सिद्धातको महा मानता कि हिंदू और ममलमान ना जलग राष्ट्र ह। मेरा यह राय है कि हिंदुस्तानके सब गग — फिर के कित्ता भा जाति या धमक हा — एक ही राष्ट्रक जा ह।

३ म अपन सारे कायों जीर भाषणा द्वारा एना प्रमल कदगा जिसस इस प्राचीन जीर पवित्र देगके सब गगाका एक राष्ट्रीयताके विचारको गक्ति मिले।

४ अगर कित्ता समय म इस प्रतिनाका तोडनका अपराधी साबित हाऊ तो मझे उस समयकी अपनी कित्ती भा बग तन साहकी नौकरा या पन्से हाग दिया जाय।

इस समय-समयके कामों सुधारकी गुंजाइश ही सकती है। लेकिन अगर हम राजनीतिक क्षेत्रमें बन्दवाले रोगमें मुक्त होना चाहते हैं तो इस मतविदेमें रनी भावना सचमुच प्रशंसाक लायक और अपनाये जमा है। १

८

## धारासभाओके सदस्य

जो कांग्रेसी बिना धारासभाका सदस्य है वह वहा बिना भी पद पर क्या न आसीन हो कांग्रेसका अनुगामन माननेके लिए वह बधा हुआ है और कांग्रेसका जो भां हीनायतें समय समय पर जारी हैं उनका पालन उस करना होगा।

मेरा समयमें तो जो कांग्रेसी धारासभाओके सदस्य हैं चाहे वह बंबल सदस्य हों या मंत्री हों या अध्यक्ष हों उन्हें अपने प्रत्येक काममें इस बातका ध्यान रखना होगा कि कांग्रेस विधानके अनुसार उन्हें साथ और जीहिमा पर कायम रहना है। इस प्रकार जब किसी धारासभामें कोई कांग्रेसी अपने विरोधियोंके साथ पग आये तो तबका यत्नकर बिबुल इमानदारीका और विनम्रतासे युक्त ही होना चाहिये। इमानदारीसे दूर रूढ़वादी गदा राजनीतिज्ञा वह सहारा न ग्या कभा नाचना पर नहा उतरेगा और अपने विरोधियोंकी बढिनाइसे गभ नहा उगायेगा। धारासभामें जितना ही बग उसका पद होगा उतनी ही अतिव इन विपदाओं उसकी जिम्मेदारी होगा। धारासभाका सदस्य अपने निर्वाचन-अत्र और अपने दलका प्रतिनिधित्व बरगा है स्वमें तो कोई मन्हे ही नहा। लेकिन इसका साथ वह अपने समस्त प्रांतका भी प्रतिनिधित्व बरगा है। मंत्री अपने दलकी उन्नति ता उन्नत करता है परन्तु कुछ मिलाकर अपने राष्ट्रकी हानि पढ़चाकर नगा। निश्चय ही वह कांग्रेसकी उसा हूँ तर उन्नति करता है जिस हद तक वह राष्ट्रका उन्नत करता है क्याकि वह जानता है कि अगर

विन्ती गान्वास यह युद्ध नहा कर सनता ता अपन राष्ट्रक अर हा अपन विराधियसि भी यह युद्ध नहा टानगा । और खुवि धारा सभा एर एसा जगह है नहा सज जातिया वे पसल कर या न कर परस्पर मिन्ती ह इमलिए नहा वह अपने विरोधियाको जीत कर एसा गविन पन् करनकी जागा रख सनता है जिस अदम्य बनाया जा सके । धारासभानो केर गवनमेट आफ इडिया एक्टकी परिभाषामें हा न लेगा जाय बकि एक् एसा साधन समझा जाय जिसका उपयोग एस प्रान हल करनमें किया जा सकगा है जिह ह करनरी राष्ट्रक विभिन्न सप्रणायोंके प्रतिनिधियास आगा रखी जा सकती है । यदि उ ह जमर्यादित अधिकार हा तो साप्रणायिक एक्ता सन्ति हमारे राष्ट्रकी सारा समस्यायें उसमें हूँ वी जा सकती ह । और यह तय है कि गवनमेट आफ इडिया एक् एसी जनक समस्याकाको हल करनमें धारासभाका प्रयोग करनकी मनाही नही करता जो उनक काय क्षम तो बाहर ह परंतु राष्ट्रीय प्रगतिके सिण जरूरी ह ।

स दृष्टिकोणसे देखें तो धारासभाके अध्यक्षकी स्थिति प्रधानमन्त्रीस भा वन्त ज्यादा महत्वपूर्ण है क्यकि जब वह अध्यक्ष आसन पर आसन होता है तब उस यादाधीनका कतय पानना हाता है । उसे निष्पक्ष और वायपूर्ण निणय दन होत ह । उसे बवन्तरे बीच भी गात रहकर सदस्याके बीच गिष्टता और सौजय बनाय रखना पटता है । इस प्रकार विराधियाको जीतनकी उसे ऐसी सुविधायें प्राप्त ह जसा अय किसा सम्पका गायद ही हा ।

ऐसी हालनमें सभा भवनक बाहर यदि कोई अध्यक्ष निष्पक्ष न रहकर दन्तकीके चक्करमें पन् गाय तो सभवत उमवा वसा असर नहा पन् सनता जसा हर जगठ उमके निष्पक्ष और गात बन रहन पर पन् सकता है । म यह दावा करता ह कि अगर कोई अध्यक्ष अपने अत्यन्त मोमिन क्षेत्रक बाहर भी वसा ही निष्पक्ष रहनकी आदत डाल ता वह कायसकी प्रतिष्ठा ही ब्यायेगा । इस पन्के कारण उस जो अनोखा

अमर मित्र है उस यदि वह समय - ता वह ऐसा करके हिन्दू मस्तिष्क तनातना तथा दूसरी भा अनक समस्याओंके हलका रास्ता तयार कर सकता है। इस प्रकार मरी समयमें अव्ययको जमा सभा भवनमें बसा जा यदि समय बाहर भी रहना हा तो उसे प्रथम श्रणाका कायेती हाना चाहिये। मनप्यक रूपमें भी उसका चरित्र ऐसा हाना चाहिये कि कोई उस पर अगुगी न उगा सके। यह जरूरी है कि वह योग्य निम्न स्वभावतः योगी और इन मसल अधिक मन-वचन-वमस सच्चा और अहिंसक हो। तब वह जिस प्लेटफारम पर खड़ा रहना चाहगा उस पर खड़ा रह सकता। १

९

### धारासभाकी सावधानी

श्री पानवासवायका नजरबन्दाके लिए दरअसल बाइ कारण समयमें नहा आना। बगल सरकार लाकमतके प्रति जिम्मेदार है। यह हा ना नहा सकता कि उसका बिना जाने हा गवतरीन रुक जायी कर दिया हो। वह भारत एसा कानूनका अमल मनमाने गस नहा कर सकता। उस जनो के कारवाइका जनताके सामने उचित साबित करना चाहिये। अगर धारासभा अपने अस्तित्वकी योग्यता सिद्ध करना चाहता है तो उस उत्तरदायी मन्त्रि मन्त्रके काममें और उनका कारणसे परिचित रहना चाहिये। १

१०

### सविधान-सभा फूलोकी सेज नहीं

यह नमस आराम करनेका या मोज गौरमें लिन मिलानेका नग है। मज ५० जगहरण नेहरूम कहा कि व राष्ट्र के सातिर काटारा राज पहनें और उन्होंने मरा बात स्वाकार की। सविधान बनानेवागी



सभा आप सबके लिए फूगेवी सेज नहा परन्तु निरे बाटावा सेज साबित हानवाला है। लेकिन आप उसकी जिम्मेगरीस बच नहा सबत।

परन्तु इसका यह मतलब कभी नहा कि आपमें स हरणवका बहा जाना ही चाहिय। बहा सिप उही लोगानो जाना चाहिय जा अपनी बाननी गिशाक कारण या दूसरा किसी बिगप याग्यताके कारण बहा जान और सभाका काम करनेकी क्षमता रखते हं। अपनी बुरदानिया के बन्धमें मिलनेवाले इनामके गयालस बिसीकी सविधान-सभामें नही जाना चाहिय। बहा ता धम समझवर इस तयारीसे जाना चाहिय मानो फासी पर लखना हो या सबाक यज्ञमें अपना सबस्व होम देना हो।

इसके अगवा आप गोगाके सविधान सभामें जानका एक और भी कारण है। अगर आप मझसे पूछें कि सविधान सभामें सम्मिठित गानके प्रस्तानको आप लोग अस्वीकार कर दें या वह सभा बन ही न पाय तो क्या उस हालतमें म लोगानो यक्तिगत रूपम अथवा सामूहिक रूपमें सत्याग्रहकी लडाई गरू करनेकी सगह दूगा अथवा क्या म स्वय उपवास गरू करूगा तो मेरे पास आपके इस प्रश्नका एक ही उत्तर है नहा म एसा कुछ नहा बटगा। म उन गायामें हू जो अकेले चलनेमें बिश्वास रखत हू। म ससारमें म अकेला जाया हू दुखक समद्र जस इस ससारमें म अक्ला तरा हू और समय जान पर म अकेला हा यहास चल दगा। म यत् भा जानता हू कि बिन्कुल अक्ला हान पर भी म सत्याग्रहना लडाई गरू करनेमें पीछ नही हटूगा। पहले म एसा कर चका हू। परन्तु यह समय न ता सत्याग्रहकी उन्ई छडववा है और न उपवास आरभ करनेका हू। सविधान बनानवाती सभाक कायको म सत्याग्रहना स्थान लेने वाला काय मानता हू। बट रचनात्मक सत्याग्रह है। १

गदम्याके सामन यह प्रश्न कई बार जा चुका है। हममें से बन्ना का ऐसा रगता है कि या तो भत्ता बढ़ाया जाना चाहिये या हममें जा गरीब लोग हूँ उन्हें धनवानाक। ए मन्तन छाँकर निकल जाना पडगा। आपकी तो यह जानकर दुःख आ कि धारासभाके कुछ सन्स्य भत्ता अपन ही काममें ल रहे हूँ। परंतु मन आपके सामन तसबीरका दूसरा पहेलू पना किया जिससे आप हमें रास्ता दिखा सकें। यह भी याद रखनी बात है कि कांग्रेसकी जाना मानकर हमन जो चुनाव लूँ उनमें हममें से बहुतका वज्र पना पडा था।

दूसरी जिस बातकी आरंभ आपका ध्यान दिखाना चाहता हूँ वह है कांग्रेसमें फर्की हुई गदगाबा सवाक। इसके अर्थ का कारण तो हूँ ही साथ ही धारासभाकी सन्स्यताका लालच भी कांग्रेसके साधारण कायवर्तियोंका बहुत बडा है। इससे लोग बतमान सन्स्यका हटा कर उसकी जगह सन्त आनकी कोशिश करते हूँ और इसके लिए अवसर बुरे उपाय काममें आने ह। अगर यह समझ लिया जाय कि जिन सन्सयान अच्छा काम किया है उन्हीको फिरसे खडा किया जायगा तो वह अच्छी बात होगी। ऐसी नीतिसे धारासभाके कामके लिए कायवर्तियोंका एक तालीम पाया हुआ समूह जरूर पना रहगा। सन्सयानो यह अनुभव भा अच्छी तरह हा जायगा कि धारासभाको बान्द उन्हीं रचनात्मक काय भा करना है।

तासरी बात जिस पर प्रकाश दिखानकी आपस नम्र प्रार्थना है यह है कि बड बड कांग्रेसियाका भी पश्चिमा लगे रहन-महन विचार और सस्वृतिकी आरंभ जरूरत पकाव हो रहा है। खतर पहाते हुए भी उनमें से बन्तरे अपना दली सस्वृतिमे बिलकुल दूर रहते हूँ और उन्हीं जो भी प्रकाश मित्रता है वह पश्चिमसे ही मित्रता है।

जहां तक सदस्याक भत्ता सम्बन्ध है उसके पक्षमें दा गई कांग्रेस म कांग्रेस नहीं हुआ है। अल्पता सभा मामलमें कुछ कांग्रेसी तो कष्ट होता ही है। परंतु ऐसे उदाहरणामें नियम बनाना अच्छी बात नहीं है। या यह कि धारासभा पर कांग्रेसका ठका नहीं है। वरन् वह कांग्रेसके प्रतिनिधि हान है। इसलिए सिर्फ कांग्रेसकी मुविधाका ही खयाल नहीं रखा जा सकता। परन्तु यह मान बंध है कि प्रत्येक सदस्य धारासभाके कामका विशेष रूपमें ध्यानमें रखकर अपना मारा समय राष्ट्रीय सवामें उगाना है। इसका जय यह था कि धारासभाके सदस्याका राजनीति ही एक धारा ही गया है और धारासभाके पास तौर पर उनके लिए सुरक्षित स्थान बन गई है। मेरा बस चर ता म ये बातें राजनीति दशम ही कर लू। मैं जानता हू कि इस प्रश्नमें कठिनाईया भरा पड़ी है और इस पर पूरा तरह तथा गातिमें चर्चा होनी चाहिये। पर मन जो बात उठाई है वह बिल्कुल छोटा है। जब धारासभाका काम एक तरहस बन ही तब सदस्य लग कुछ भी भत्ता क्या है? जाच की जाय तो पता चलेगा कि बहुतस सदस्य धारासभामें चन जानस पता इतना नहीं कमा रह थे जितना कि व अब कमा र ह। धारासभाका को अपनी मामूली कामतमें अधिक कमाईका साधन बना रना खतर नाक बात है। प्राताके जिम्मेदार लोगोंने मिलकर मोचना चाहिये और कोई ऐसा नियम करना चाहिये जिससे कांग्रेसका भा गाभा बढ और जिम कामके लिए वे खप रह ह उसका भी गोभा बढ।

परन्तु वहने वतमान सम्म्याका स्थायी उम्मीदवार बना दनका जो प्रश्न उठाया है यह मेरे हाथकी बात नहीं है। इस मामलमें मुच कोई अनुभव नहीं है। इसका गहराईमें जाना कांग्रेस कायममिनिता काम है। र्हा बात परिचमस प्रकाण लाकी आन्तकी। ना अगर मर मारे जावनम किसीको काड रास्ता न मिला हा ता अब और म क्या रास्ता बना सनता हू? प्रवाग तो पूरस नियम कर मन्त्र फला

करता था। अगर पूवका भडका साला हा गया है ता यह स्वाभाविक है कि पूवका पदिचमसे प्रकाग उधार नना पडगा। मझे ता आश्चय है कि प्रकाग यति प्रकाग हा हा और वार्द राग न हा ता क्या बट कभा भा सनम हो सकता है। बचपनमें मन पना था कि प्रकाग अर्थात नान नस बडता है घटता नही। कुछ नी हा मने ता इसा विवाम पर अमन किया है आर इसलिए वापनायाकी पूजा पर हा अपना यापार चलाया है। म कभी घाटमें नही रहा। लेकिन इसका यह मतक नही कि म कुएका मेटक बन जाऊ। अगर प्रकाग पदिचमस आय तो मने उससे लाभ उठानमें कोई आपत्ति नना है। म इतना ध्यान जरूर रखूगा कि पदिचमका तडक भडकक बगाभूत म न हा जाऊ। मुन भूलसे इस तडक भडकको ही सचा प्रकाग नहा समज रेना हागा। प्रकाग हमें जीवन प्रदान करता है और तडक भडक मौतक महमें ल जाता है। १

१२

### धारासभाके सदस्योकी तनखाह

प्रश्न — धारासभाके एक सम्पका माहवार तनखाह २०० रुपय है। चकि वह बस्वमें रहता है इसलिए धारासभाकी वठनाक दिनाम वह १५ रुपय रोजका भत्ता पानका अधिकारा है। इमक अलावा जिस दिन वह धारासभाकी वठनमें हाजिर रहे उम दिनके लिए बन् सवारा भत्तक ढाई रुपय ले सकता है। साथ हा जपन रूतक स्थानम गहरमें जाते पर उमें प्रथम बगके डचौन विरायके दिनास सपर सचना भत्ता भी मिा सकता है। किन एक ही दिनके लिए बट सफर-खचका भत्ता जोर दनिक भत्ता नना नहा ले सकता।

१ (अ) क्या गरीबाक प्रतिनिधि जोर सबकक नात गम जाओमीरो यह तनखाह लेना चाहिये ?

(जा) अगर वह अपना पूरी तनखाह स्थानीय कायस कमगानो या जिस सम्पामें वह काम करता है उस रचनात्मक कायक लिए २६ ता क्या वह इस दोपम मुक्त है मकेगा ?

(इ) अगर ऐसा है ता क्या इसका यह मतलब न हागा कि "यमन" गुद्ध होनेसे उस प्राप्त करनेका साधन भी गुद्ध ठहरता है ?

२ धारासभाके अधिवेशनके दिनमें सदस्यका गहरमें रहना हागा और धारासभाके सदस्यके नाह अपने फजों और जिम्मेदारियाको अन्त करनेके लिए उसे कुछ खर्च भी करना पन्गा ।

(अ) ऐसी हागतमें क्या वह अपन आत्माके साथ मल बढात हुए इन खर्चोंका पूरा करनेके लिए दनिक भत्ता ले सकता है ?

(आ) अगर ऐसा हो सकता हो और भत्तेका कुछ हा निम्ना दिया न जा सकता हो ता क्या उस पूरा भत्ता पना चाहिये ? और क्या हुई खम अपनी सस्याको जिसके मानहत वर काम करता है दे दनी चाहिये ?

(इ) अगर ऐसा किया जा मके ता क्या अपने आदमक माय मर पगत हुए वह इस तरह बचा हुए खमसे या उमके कुछ भागका अपन परिवारके लिए खर्च कर सकता है ? क्याकि ऐसा न करने पर उस अपने घरका खर्च चरानेके लिए मित्राक दानका सहारा पना पडेगा ।

३ (अ) क्या ऐसा स्थितिमें भी उम मवारा भत्ता पना चाहिये जब कि पतिन भत्तेकी खम उसके मजारा बगराक मर खर्चोंका पूरा करनेके लिए काफी ज्यादा है ? (मवाराका भत्ता ता गहरमें रहने हुए उमके धारासभाका बढनामें शामिल होनेके लिए ही रखा गया है ।)

(आ) अगर वह सामान्यतः द्रामों या मात्र-वामों सफर करता हो तो क्या धारासभाकी वक्तव्यों परावृत्त होने के लिए उस वामना या खर्चीकी सवारीका उपयोग करना चाहिये ?

४ अगर कोई सदस्य सिद्धांतवत् खानिर तासत र्जमें सफर करता हो तो मालव हिसाबस सफर भत्ता उनक मामलमें उस उस स्थितिमें क्या करना चाहिये जब कि उसक लिए पहल र्जके डधीन किरायके हिसाबस भत्ता केना कानूना तार पर सभव हो ?

उत्तर— मेरी रायमें विभिन्न धारासभाआके मन्म्याका जो तनखाह और भत्त दिय जाते ह, व उनकी दंगसबाक लिहाजस हर तरह ज्यादा ह । तनखाहा या भत्ताके जा स्तर निश्चित किय गय ह वे रिटिंग नमूनके ह । दुनियाक इस गरीबमे गरीब दंगका जायके साथ उनका कोई मेल नहीं बढता । इसलिए इन प्रश्नाका मेरा उत्तर यही है कि जब तक मन्त्रि-मंडल सारा खच कम न करे तब तक या तो गी जानवागी तनखाह या भत्ता उस पार्टीको दे दिया जाय जिसके अधीन वह सदस्य काम करता है और वह उतनी ही रकम के जिनना पार्टीन उसक लिए निश्चित कर दी हो । और अगर यह सभव न हो तो वह उतनी रकम के जितनी उसे अपन लिए और अपन परिवारके लिए सचमुच जरूरत मालम हो । और बचा हुई रकमका वह रचनात्मक कायके किसान अगमें या इस तरहके अन्य किसी सावजनिक कायमें लगा दे । तनखाह या भत्तके रूपमें निश्चित की गई रकम लेना जरूरी है लेकिन यह किसी सत्स्यके लिए अनिवाय नहा है कि वह उस रकमको अपन लिए खच भी करे । हा अपना जरूरतके मुताबिक खच किया जा सकता है । ध्ययक गद्द हानस साधनके गुद्ध होनेका प्रश्न यहा उठता ही नहा । १

१३

### बड़े दुखकी बात

बहुतसे लोग सविधान-सभामें जानक लिए इच्छक ह और मंग  
 वस वारेमें पत्र लिख रहे ह। मुग डर लगन आगा है कि अगर यह  
 आम लोगकी दिमागा हालतकी निगानी हो ता कहना होगा कि उह  
 हिन्दुस्तानकी आजादीके बनिस्वन अपनको जागे लानकी हा ज्यादा चिन्ता  
 है। इन चुनावके साथ मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है फिर भा जब मर  
 पास इतने पत्र जा रहे ह ता कायस कायसमितिसे सम्बन्ध पास  
 बितन पत्र जात हाग ? पत्र लिखनवालोंको समझना चाहिये कि म  
 चनावामें कोई लिखस्यो नहीं लेता। कायसमितिना जिग बठरामें उन  
 अजिया पर विचार किया जाता है उनमें म उपस्थित नहा रहता। और  
 अरसर मुझे अलगरास ही पता चलना है कि कौन कौन चुने गये ।  
 नाम ही कभा किसी चुनावके वारेमें मेरा सलाह पूछी जाता है। क्विन  
 आज ता म उम बीमारीकी आर आम आगाभा ध्यान खानक लिए  
 लिख रहा हू जिसकी निगानी इतने पत्र या अजिया ह। इम लिखन  
 में मेरा आगप यह बतानेवा नहा है कि मुझसे इस वारेमें सम्बन्ध  
 कोई आगा न रखा जाय। इन चुनावके वारमें साम्प्रदायिक दृष्टिम  
 साचना गलन है और साथ ही यह सोचना भा गलन है कि सविधान  
 सभामें हर कोई जा सकना है। और यह सवाल बनना ता मरामग  
 गलन है कि ये चुनाव प्रतिष्ठाकी निगाना ह। जा आग इम तरहका  
 सवाक साम्य ह उनके लिए यह सवाका एक साधन है। और आगिरा  
 वात म यह भा कहूँ कि जिनने जिन तम सविधान-सभा अपना काम

करो। उनमें तब तक उसकी बठारमें शामिल होने पर थोड़ा रुपया जमा कर उनका सवाल तो बन्द ही बरी जाय है।

सविधान-सभामें उही लोगको जाना चाहिये जो दुनियाक सब देशक सविधानारी जानकारा रखते हैं और इसमें भी ज्यादा जरूरत यह है कि वे हिन्दुस्तानको जिस तरहके सविधानकी जरूरत है वैसे सविधानके बारेमें कुछ जानते-समझते हैं। यह साचना या समझना कि सच्चा सवा ता सविधान-सभामें जाकर ही हो सकती है एक नाच गिरानेवाली बात है। सच्ची सेवा ता सविधान-सभाके बाहर पना है। इसके बाहर सेवाका जो क्षण पडा है उसकी तो कोई सामा हा नहीं है। जिस तरहकी सविधान-सभा आज बन रही है आजानीकी लड़ाईमें उसकी भी अपनी एक जगह है। लेकिन उस जगहकी कामना बन्द कम है और वह भी तभी कि जब हम बुद्धिमानास उसका अच्छी तरह उपयोग करे। सविधान-सभामें बैठक पानके लिए ही सब भाग-दौड़ करन लग तो बिश्वास रखिये कि एसा सभामे कोई सार नहा निकलेगा। इस भाग-दौड़का देखकर ता डर लगता है कि कहा वह सभा स्वार्थी लोगोकी गिंकारगाह न बन जाय। यह ता मानना ही हागा कि ससनाय प्रवृत्तिका ही सीधा तरीजा आजकी यह सविधान सभा है। स्व. देगवधु चित्तरजन दास और स्व० पंडित मोतागठ महसन धारासभामें जाकर जो मेहनत का उसन मेरी जाख खोल दा और मैं यह देख सवा कि देगका आजानीकी लड़ाईमें पार्लियामन्टरा प्रोग्रामका भी अपनी जगह है। पहले मन इसका बडा विरोध किया था क्योंकि गद्द असहयोगके साथ इस प्रोग्रामका कोई मेल नहा बटना। अकिन गद्द असहयोग कभी चला ही नगा। जो चला वह भा आता खल कर घामा पड गया। अगर कांग्रेसवाल गद्द अहिंसक असहयोगका जनता ता पार्लियामन्टरी प्रोग्राम देगके सामन जाता ही नहीं। यराइक माय अहिंसक असहयोग करनका मतलब है अच्छाईके साथ — जा ना कुछ ज ठा है उस सबके साथ — सहयोग करना। इसलिए



परन्तु सरकारके माथ अहिंसक अमह्याग करनका एक हा अथ हा मक्ता है और यह यह कि अपनी दगा अहिंसक सरकार बनाई जाय । यदि हम पूरा पूरा असह्याग कर पात ता आज हिन्दुस्तानमें अहिंसक स्वराय आ चुका होना । लखिन वसा ता हम कुछ कर नहा पाय । एमा स्थितिमें जिन तराकको दग जानता है और जिस हम छुवा नहा पाये उसका विराध करना व्यय हाता । धारासभामें जाना मजर करजक वात इस नय कर्मका बहिष्कार करना अनुचित हाता । परन्तु इसका यह मतपर हरगिज नहा न हा मक्ता है कि मविधान मभामें घुमनेक लिए प्रारभोके साथ होड की जाय या मायनी मचाई जाय । हरएकका अपना मर्गा ममज्ञाना चाहिये । १

१४

## एक एक पाई बचाइये

मने देवा है कि धारामभाधक मन्म्य अपन निजी कामान लिए भी निहायत कामती गुनगरी निय हए बागजका उपयोग करन । जहा तक म जानता हू अफतराका खिन्का सामान ( ग्रेगनरा ) बगस बाहर नहा न जाया जा मक्ता । दफतरामें भा यजिनत कामाक लिए—जस मिया या रिनेतराका पत्र खिना या प्राग मभावे सन्स्थाका मावजनिज वाय करनेवाले किसा खिन्का माव जनिज सजान भिन्न विमा दूमर कामके लिए पत्र खिना—इसक उपयोगरी इजाजत नहा है । जग तक म जानता हू दुनियाक प्र भागमें इस बानका मनाहा है ।

खिन इस गराव नेके लिए ता म और भा आगे जाऊगा । खिनेर जिग सामानका मने जिश किया है वर हमार एक लिए वन्त मन्गा है । जप्रज दुनियाक मयमे मर्चो देगा गग । व य म भा जानते हू कि हम पर व अपना निता थाक वग मर्के उनना हा उर लाभ है । इसलिए उहाने दफतराके लिए वदन कामना और

वे अपना जान-महचानवा फायदा उठाकर पसा बना रहे ह और मजिस्ट्रेटाकी बचहरियामें पहुचकर 'यायव' भागमें भी खावट डालत ह। जिना कानून और दूसरे माल अधिकारी भी जाजागीस अपना फज बना नहा कर सकत। कासिलके मेम्बर उममें हस्तक्षेप करत ह। काँ इमान्दार अधिकारा म्ब समय तक अपनी जगह पर नया रह सकता। उसका खिलाफ मशियाके पास रिपोर्ट पहुचाइ जानी है जार मती किसा सिद्धान्त का न माननवा एसे स्वार्थी लोगका वानें सुनत ह। स्वर्गाय की गन एक एसी चीज था जिसके कारण सभा स्त्रा पुरुष आपके नतत्वको मानने लग ग। परंतु ध्यय पूरा हा जान पर अधिकतर काग्रेसी रुबयाक नतिक बधन टट गय ह। उन्तसे पुरान यादा जान उनका साथ दे रहे ह जो हमारे स्वातन्त्र्य आदानके बट्टर विरोधा थ। अपना मतलब निवाउनक लिए व लाग जाज काग्रेसम अपना नाम लिखवा रह ह। समस्या दिन ब दिन ज्यादा पचीला बनती जा रही ह। नताजा यह है कि काग्रेसकी जोर काग्रेस सरकारकी बदनामी हो ग्या है। लागका काग्रेस परसे विश्वास हट रहा है। जभा जभा यहा म्यनिमिपण्टीके चुनाव हुए थ। य चुनाव बतात ह कि कितनी तनास जनता काग्रेसक काग्रेसे गहर जा रहा है। चुनावका पूरी तयारी करनके बाद गनूरमें गवल घाडस (स्थानाय सम्थाजा) के मनीका गरुरा सत्ता आनस चुनाव एकाएक राक त्रिय गये।

म समयता हू नि करीब दस सालमें यहा सत्र सत्ता एक नियुक्त की हुई कांसिलक हाथामें रहा है आर अब कगब एक साठस म्युनिमिपण्टीका कामकाज एक कमिश्नरक हाथामें है। अब एसी गत चर रही है नि सरकार गहरकी म्यनिमिपण्टीका कारादार सभाजनक लिए एक कांसिल नियुक्त करेगा।

‘म नूटा हू । मेरी टांग टूट गई है । लकड़ीके सहार लगडाते लगडाते थाडा-बन्त चन्ता फिरता हू । मुझे अपना वाइ स्वाय नहा मायना है । इसमें गवा नहा कि जिल और प्रान्तकी कांग्रेस कमटिया तिन दा गुटबन्धियामें बटा टुट ह उनके मुख्य मुग्य कांग्रेसवागक खिलाफ म कडे विचार रखता हू । और मेरे विचार सब लोग जानत ह ।

कांग्रेसमें फिरकेवाजा, लजिस्लटिव कौमिलक सम्म्याकी पसे धनानकी प्रवृत्ति और मत्रियाका कमजाराक कारण जनतामें विरोहकी वृत्ति पना हा रही है । लाग कहत ह कि इसम ता अग्रजा हुकूमत बहुत अच्छी थी और व कांग्रेसका गालिया भा देने ह ।

आध्रके और दूसर प्राताक लाग इस त्यागी सेवक कहनकी कीमत कर । वे ठीर कहते ह कि जिस बेईमानाका उल्लस उहान बिया है वह मिक आध्रमें हा नहा पाई जाता । परतु व आध्रक दारमें ही अपना निजा जमिप्राय दे सकने ह । हम सब सावधान बनें । २

## १६

### कांग्रेसजनोंमें श्रष्टाचार

दस पन्-ग्रहणका अथ या ता अधिक महान प्रतिष्ठाका आर काम बनाना है या फिर प्रतिष्ठात त्रिलकुल हाय धा पठना है । अपना प्रतिष्ठाका यत्ति हमें त्रिलकुल नहा गवा बठना है तो मत्रिया और धारासमाजक सम्म्याका जपन व्यक्तिगत और सावजनिक आचरणक प्रति जागरूक रहना ही हागा । उनकी हर बात मदहसे पर हानी चाहिये । व वाई एसा काम न कर, जिसस खुद उह या उनके सम्ब धिया या मित्राका व्यक्तिगत रूपमें काद फायला पटुवता हा । अगर व अपने सम्बधिया या मित्राकी किसी सरकारा पद पर नियुक्ति कर गा व-३

१७

## धारासभाके सदस्य और मतदाता

धारासभाके सदस्य सेवक ह

धारासभाके सन्स्य देगेके ग्रासक नही परतु देगेके प्रतिनिधि ह और इसलिए देगेके सेवक ह । १

केवल सीमित सख्यामें ही पुरुष और स्त्रिया धारासभाआके सदस्य बन सकते ह — कहिये कि १५०० । इस सभामें बठ हुए लोगमें से कितने धारासभाके सदस्य बन सकते ह ? और इस समय ३॥ करोडसे ज्यादा लोग इन १५० सन्स्यके लिए मत नही दे सकते । तब धाकाके ३१॥ करोड लोगका क्या ? स्वरायकी हमारी कल्पनामें तो ३१॥ करोड ही सच्चे स्वामी ह और ३॥ करोड मतदाता इन लागोके सेवक ह जो स्वय धारासभाआके १५० सन्स्यके स्वामी ह । इस प्रकार १५० सन्स्य देगेके प्रति बफादार रहकर अपने कतव्यका पालन करें ता वे दोहरे सेवक ह — सेवकाके भी सेवक ह ।

परन्तु ३१॥ करोड लोगका भी अपन प्रति जीर जपन राष्ट्रके प्रति जिसके व्यक्तिपोकें नाते वे केवल छोट अंग ह बफादार रहकर अपना कतव्य पालन करना है । और अगर वे जालसी और निष्क्रिय बन रहें स्वरायके बारेमें कुछ न जानें जीर उस जीतनेके उपाय भी न जानें तो वे धारासभाके इन १५०० सन्स्यके गलाम बन जायगे । मेरी दलीलके लिए देगेके ३॥ करोड मतदाता उसी श्रेणीके ह, जिस श्रेणीके ३१॥ करोड लोग ह । क्याकि यदि वे उद्यमा और बद्धिमान न बनें तो वे १५०० खिलाडियाके हाथके प्यादे बन जायगे — मरे ही वे कांग्रेसजन हा या और कोई हो । अगर मतदाता केवल

हर तामरे या पाचवें साल अपने मत दज करानके लिए ही नादमे जागें और मत ढेकर फिर गहरी नीदमें गो जाय, तो उनके सेवक जरूर उनके स्वामी बन जायगें। २

सत्ता कहा रहती है ?

हम एक अरसेम इस बातका माननेके आदा बन गये ह कि आम जनताको सत्ता सिफ धारासभाका जरिये मिलती है। इस खयालका म अपन लोगका एक गमीर भूल मानता रहा हू। इस भ्रम या भूला वजह मा तो हमारी जडता है या वह मोहिनी है जो अग्रजाक रीति रिवाजाने हम पर डा रकी है। अग्रज जातिके इतिहासके लिच्छ या ऊपर ऊपरके अध्ययनसे हमने यह समझ लिया है कि सत्ता गामन-नयका सबसे बडी समस्या पार्लियामण्टस छनकर जनता तक पहुचनी है। मच बात यह है कि सत्ता जनताके बीच रहती है जनताका हाती है और जनता समय समय पर अपने प्रतिनिधियाका हैमियतम जिनका पमद करता है उनका उतने समयके लिए उस सौंप दता है। जनताम भिन्न या स्वतंत्र पार्लियामेण्टाही सत्ता तो ठीक हनी तक नहा होना। पिछले इकनास बरसामे भी ज्यादा अरससे म यह इतना माधी-सादी बात आगाक गे उतारनकी कोणिग करता रहा हू। सत्ताका जमली भणार ता सत्याग्रहकी या मकिनय कानून भागका गकिनमें है। एक समूचा राष्ट्र यदि अपनी धारासभाके कानूनाके अन्तग चलनम इनकार कर द और इग सिविल नापरमानाके नतीजारा बरलास्त करनेक लिए तयार हा जाय ता साचिय कि क्या नतीजा होगा। ऐसी जनता सरकारकी धारासभाका और उसका गसन प्रममका जहाका तहा, पूरी तरह राक भेगी। सरकारकी पुलिमकी या फौजका तानन फिर बट कितनी हा जवरलास्त क्या न हो पाडे आगाका हा दरानमें कारणर होनी है। क्विन जब कोई ममचा राष्ट्र मर कुछ मन्तका तयार ही जाना है ता उमक दूढ सरलापका डिगानेमें क्विसा पुलिमकी या फौजरी काई जवरलास्ती काम नहा देनी।

फिर पार्लियामण्टके ढगकी गसन-व्यवस्था सभी उपयोगी हाता है जब पार्लियामण्टके सब सन्स्य बन्तमे फम-गवा माननके लिए तयार हा। दूसरे गगमें इस या कहिय कि पार्लियामण्टरी गसन-बद्धतिका प्रयत्न परस्पर जनकूञ समूहमें ही ठीक-ठीक काम देता है। ३

## १८

## स्त्रिया और विधानसभायें

## कस्तूरबा ट्रस्ट और विधानसभायें

२८ २९ और ३ माघ (१९४६)को उम्मा वाचनमें डा बठकें हुइ एक कस्तूरबा स्मारक ट्रस्टके एजन्टाकी और दूसरी ट्रस्टका वाय वारिणी समितिकी। एजन्टाकी बठक अपन ढगकी पट्टी ही थी। बठकमें एजेटान बन्तमे दिग्दर्शक सवाल पूछ। एक बहनन पूछा कि कस्तूरबा ट्रस्टकी एजन्ट बहनें विधानसभाकी सदस्या क्या नहा हो सकती? इसका स्पष्ट उत्तर यह है कि यदि उह अपन कायके साथ योग्य करना हो तो विधानसभाके उत्तम्य पूरे करनके लिए उह समय हा नहा मिल सकता। निश्चित कारण यह है कि यदि ग्रामवासियाको विधानसभाके सदस्याकी आर मन्के लिए ताकना पन् तो यह ग्राम वासियाके लिए एक गलत उदाहरण पना करना होगा। १

## क्यों नहीं?

एक बहनको मेरा यह कहना चभता है कि यदि धारासभाकी सदस्या बहनें कस्तूरबा निधि मडलकी एजन्ट बनें तो वह ग्रामवासियाके सामन एक गलत उदाहरण होगा। वे कहती ह कि अगर यह बात मौजूना धारासभाके लिए हा तब ता ठीक हो सकती है किन जब हमारा गसन हागा तब तो गकूञ बन्त जायगी। धारासभाके सदस्य पय प्रयोग हाग। इसलिए वहा जाना अभ्यायक हा हागा। जिस

कामका करनमें या ही बरसा लग जाते ह, वह काम धारासभाके मारफ्त एक ही बठरुमें हो जायगा।

इस दगलमें तीन गलतिया ह । पह<sup>१</sup> तो यह बान ही गहा है कि मने आजकी और अपने गसन-काममें होनेवाली धारासभायामें कोई भे<sup>२</sup> किया है। ऐमा भद अनावयव है।

दूमरे यह मानना कि ऐसे सन्म्य पय प्रदगव हाग भ्रममूलक होगा। मनगता किमीको धारासभामें इसलिए नहीं भेजत कि उससे मागगान प्राप्त कर वलि<sup>३</sup> इसलिए भेजते ह कि हम उसक गिए जो रास्ता तय कर दें उम पर चलनेकी बफालारी उसमें है। पय प्रग्गक तो हम ह धारासभाके सदस्य नहा। वे हमार सेवक ह स्वामी नहा। जाजका यह भ्रम बतमान गामन पद्धतिका पदा किया हुआ है। अब यह भ्रम दूर हा जायगा तो सदस्य बतनवागका भरमार बहुत कम हा जायगा। धम समझवर जानवाले गोग थो<sup>४</sup> ही हागे। व हमारी इग्गसे वहा जायेंगे। धारासभामें जानकी थगर कोई जरूरत हा सकनी है तो वह जाज है जब कि वहा जावर लोक गसनवे लिए लगना है। लकिन आज तो कुछ ह<sup>५</sup> तक हमने यह भी दख गिया है कि वहा पढ़च कर लाक गसनके लिए लडाई कम हाता है।

तीसरी गलती यह माननमें है कि धारासभायें ही मागगानके सबसे योग्य माधन ह। अपन इग गित देखनस पता चग्ता है कि दुनिया भरमें पय प्रग्गक ज्यागतर तो धारासभाके बाहर रहनेवाके लोग ही होते ह। यदि ऐसा न हो ता लोक गसन सड जाय। क्याकि मागगान करनका क्षेत्र ता गापक और विगाल है और धारासभाका बहुत छोटा। लोक-जीवनकी धारा महासागर है जब कि धारासभा एक बहुत छोटी नगी। २

### प्रश्नोत्तर

प्र० — हमें मागूम होता है कि वाप्रस किमी भी प्रतिनिधि-सस्था या ममितिके लिए महिला प्रतिनिधियाका बढी तागदमें चुननके खिलाफ

है। अमलमें 'यायका तकाजा है कि अलग अलग सस्थाओंमें महिलाओंको ज्याण सख्यामें चुना जाय। इस सवालको आप कस हल करेंगे ?

उ० — एसा बातोंमें मुय समानताका या दूसर किमी तरहक अनुपातका मोह नहीं है। इसमें योग्यता ही मुख्य कसौटी हानी चाहिये। आज तक अगर स्त्रियाँको इस क्षमस दूर रखनका रिवाज चला आया है ता अबस समान योग्यताके आधार पर पुरुषोंके बन्ले स्त्रियाँको तरजीह देनका उलगा रिवाज चानू कर देना चाहिये। इस तरजीहका मन्तबीजा हो सकता है कि पुरुषोंका सारी अगलें स्त्रियाँके हाथमें आ जाय लकिन इसकी काइ चिन्ता नहीं। कोई म्त्रा केवल म्त्रा है इनालिए उसे सस्य बनान पर जोर देना सतरनाक बात होगी। स्त्रिया ही या दूसर कोई दल हो उन्हें किसीका मदद पर आधार न रखना चाहिये। उन्हें यायकी भाग करनी चाहिये न कि पक्षपात या मेहरबानीका। इसलिए स्त्रिया और पुरुषों दोनोंके लिए यही ठीक हागा कि वे अग्रजी या पश्चिमा शिक्षाके बदले अपने समाजमें प्रांतीय भाषाभा द्वारा ऐसी शिक्षाका प्रसार कर जा लोकोको नागरिकोंके सारे फल पूरे करन लायक बना लें। अगर पुरुष इस ओर पहले कदम बन्त ह तो उनका यह काम मेहरबानी नहीं बल्कि स्त्रियाँके साथ बिधा जानवाला याय ही होगा जो बहुत पहले किया जाना चाहिये था। ३

१९

### मताधिकार

मन वालिग मताधिकारका वरण किया है। वालिग मताधिकार एक नहीं अतक वारणामे जरुरा है। और मेर लिए एक निष्ठा मक कारण यह है कि वह मुय न बतल मसलमानानी वन्तु तथा कथिन हिन्दुओंकी वसाइयोकी मजदूराफी और सभी प्रकारके वर्गोंकी सारा उचित महत्वाकाशायें सन्तुष्ट करनके लिए समथ बनाता है। म



इस विचारको सहन नहा कर सकता कि जिस आत्मीके पास धन है उस मतदानका अधिकार हा और जिस आदमाके पास धन या अक्षरज्ञान ता नहा परंतु चरित्र है उस मतदानका अधिकार न हा अथवा जा जात्मा रात दिन पसीना बहाकर ईमानदारीमे कड़ी मेहनत करता है उसे केवल इस अपराधके लिए मतदानका अधिकार न हो कि वह गरीब है। १

जहा तक मताधिकारका सम्बन्ध है म विश्वास दिलाता हू कि २१ या १८ वषका उम्रसे ऊपरके सब वालिग स्त्री-पुत्रपाका मत देनेका अधिकार रहेगा। म अपन जमे बूढोको यह अधिकार नहा देना चाहता। एस लोग किमी कामके नही। हिन्दुस्तान और बाकीकी दुनिया उन लोगके लिए नहा है जा मौतके बिनारे खडे हू। उनके लिए मौत है जिलगी नौजवानाके लिए है। इम तरह म चाहूगा कि जसे १८ वषकी उम्रसे कम उमक लोगाको मत देनेका अधिकार नही होगा उसी तरह एन निश्चित उम्रके बाकके लोगाको—मान लीजिये कि ५० सालसे ऊपरका उम्रके लोगाको भी इमम वचित रखना होगा। २

### वयस्क मताधिकार और अक्षरज्ञानकी कसौटी

अब तक म यह मानता और कहता आया हू कि हरएक वयस्क आत्मीको—फिर वह निरक्षर हो या साक्षर—मत देनेका अधिकार हाना चाहिये। लेकिन काग्रस विधानको जिस तरह अमलमें लाया जा रहा है उसका निरीक्षण करने करने मेरी राय बदल गई है। अब म यह मानने लगा हू कि मनाधिकारके लिए अक्षरज्ञानका हाना आवश्यक है। कम दो कारण हू। मतको एक विधि अधिकारके रूपमें माना जाय और उमके लिए कुछ योग्यता आवश्यक समथी जाये। मानीस सानी योग्यता अक्षरज्ञानकी—चिन्ता पढना आ जानेकी—है। और अक्षरज्ञानवाले मनाधिकारक विधानमे अनुसार बना हुआ मनि मड्ड यदि मनाधिकारसे वचित निरक्षर प्रजाजनाक हितकी चिन्ता रखनेवाला होगा तो आवश्यक अक्षरज्ञान ता उहें देखत देखते हा जायगा। ३

## कानून द्वारा सुधार

लाग ऐसा सावन मासूम हात ह कि किसी बराबरे खिलाफ कानून बना दिया जाय तो वह बराई अपन-आप निमूल हा जाता है। इन सम्प्रथमें अधिक कुछ करनकी आवश्यकता नहा रहती। किन्तु इससे ज्यादा बड़ा कोई जात्म-बचना नहा हो सकता। कानून ता जमानमें फसे हुए या बुरी बतिवाले अल्पसंख्यक शोकाको ध्यानमें रखकर जाता उनस उनकी बुराई छुटवानके उद्देश्यस बनाया जाता है और उसी स्थितिमें वह सफल भी होता है। बुद्धिमान और सगठित जनमत अथवा धर्मका आड लेकर दुराग्रही अल्पसंख्यक लोग जिस कानूनका विरोध करत ह वह कभी सफल नहा हो सकता। १

पहली चीज तो यह है कि हमारे प्रयत्नमें जबरदस्ती या जसमका प्रयोग भी नही होना चाहिये। मेरी नजर रायमें आज तक जबरदस्तीके द्वारा कोई भी मत्त्वपूर्ण सुधार नहा कराया जा सका है। कारण यह है कि जबरदस्तीके द्वारा ऊपरा सफलता हाता भक्त दिखाई दे किन्तु उससे दूसरी अनक बराइया पदा हो जाती ह जो मूल बराइसे भी ज्यादा हानिकारक सिद्ध होती ह। २

एक बार जब कानून अमलमें आ जाता है तब उसे बालनके पहले सभी कठिनाइयाका सामना करना होता है। जनमतके पूरा तरह निर्मित हान पर ही वगमें प्रचलित कानून रद किय जा सकत ह। जिस विधानके मातहत हर समय कानून सुधारे जाते ह या रद किय जात ह उस स्थायी या सुगठित नहा कहा जा सकता है। ३

मुच डर है कि भारतको अगले कई वर्षों तक दबी हुई और गिरी हुई जनताको दुःख और गराबीके बीचसे उठानके लिए आवश्यक कानून कायदे बनानका काम करते रहना होगा। इस बीचडमें उसे एक हद

तक तो पूँजीपनिया जमींदारा जार तथाकथित उच्च वर्गों और वर्गों में ब्रिटिश साम्राज्य बनाया है अन्ततः ब्रिटिश शासकाने अपना यह काम बहुत बानानिक रातिम किया है। अगर हमें इस जनताका उसकी इस दुरवस्थास उद्धार करना है ता अपना घर सुव्यवस्थित करनेकी दृष्टिमे भारतकी राष्ट्रीय सरकारका यह कतव्य होगा कि वह लगातार जनताको ही तरजीह देती रह और जिन वांशाके भारमे उसका कभर टूटी जा रही है उनस उस मुक्त भी कर दे। और यदि जमादाराका जमीराना और उन आगाका जो आज विनाशकार भोग रह ह — किन् वे यूरोपीय हा या भारतय — एसा भाडूम हो कि उनके साथ निष्पक्षताका व्यवहार उहा हो रहा है तो म उनस सहानुभूति रखूगा। किन् म उनकी कोई सहायता नही कर सकूगा क्याकि म तो एस प्रयत्नमें उनकी मद चाहूंगा जार सन ता यह है कि उनकी मदक बिना हम जनताका कीचडसे उद्धार करना सम्भव ही उहा हागा।

इसविषय धन या अधिकाराक रूपमें जिनक पास कोई सम्पत्ति है उनके तथा जिनक पास एमी वाइ सम्पत्ति नही है उन गरीबोंक बीच सधय तो अवश्य हागा। और यदि इस सधयका भय रखा जाता हो और मय वग मिलकर कराना मूक आगाके सिर पर पिस्तौल तान कर ऐसा कहना चाहत हा कि तुम आगाको तुम्हारी अपना सरकार तय तक नहा मियेगी जय तक कि तुम इस बातका आत्मगमन नही दने कि हमारी सम्पत्ति और हमार अधिकाराका कोई आघ नहा आयगी तय ता मुझे लगता है कि राष्ट्रीय सरकारका निर्माण हो हा नही सकना। ४

२१

### कांग्रेसी मंत्रि-मण्डल

पद-ग्रहणक मामलेमें कांग्रेस कायसमिति तथा काँग्रेसवादिपान मेरी रायसे अपनको प्रभावित होने दिया है इसलिए सब-साधारणको यह बताना मेरे लिए गाम्ज जरूरी हो गया है कि पद-ग्रहणके बारेमें मेरी क्या कल्पना है और कांग्रेसके चुनाव घोषणापत्रके अनुसार पद-ग्रहण द्वारा क्या क्या किया जा सकता है। यह बात गायद पाठकोको उस भर्षादास बाहरका मालूम पड जो कि मने हरिजन के लिए अपन-आप बना रखा है। लेकिन इसके लिए मझे माफी मागतका जरूरत नही है। कारण इसका बिल्कुल साफ है। भारतीय गसन विधान (गवर्नमेंट आफ इंडिया एक्ट) हिंदुस्तानकी स्वतन्त्रता प्राप्त करनके लिए बिल्कुल पर्याप्त नहा है यह आम तौर पर सब कोई मानते ह। परन्तु एक द्वारा तलवारके गसनका बहुमतके गसनमें बरग जा सकना है फिर वह कितना हा सीमित और निरल क्या न हो। तान कराड स्वा-मुहपाक विंगल निरिचिन मण्डलका निर्माण करके उसक हाथमें विंगल सना मौपनकी बातको हम और वह हा क्या सकते ह ? यह सच है कि इस विधानमें यह आगा निहित है कि हमारे ऊपर जो कुछ भी जबरदस्ती लाग गया है उसे हम ग्रहण करग यानी अपन शायणको अतमें हम अपने लिए बस्तुन एन जागीवा समझेंग। लेकिन तीन करोड मतदाताओके प्रतिनिधियोंका अपन आपमें काफा विरवास हो और उनमें इतनी बुगलता हा कि अपन हाथमें जाई हुई सत्ताका (जिममें पद-ग्रहण भा शामिल है) व विधान बनानवालाक स्वायत्त आगयका पराजित कर देनेके

उद्देश्यसे उपयोग कर सक तो यह आग निष्फल हो सकती है। और ऐसा करना कुछ बर्तन काम नहीं है बल्कि कि हम कानूना तोर पर इस विधानका ऐसा उपयोग कर जसा उपयोग किये जानेकी उहाने आग नहा रखी है और जसा व चाहते ह वसा उपयोग हम उसका न कर।

इस प्रकार शराबकी आमदनीमें शिक्षाका मन्त्र चलानक बजाय शिक्षाको स्वावलम्बी बनाकर मंत्रि मण्डल तत्काल मन्त्र निषेधको अमलमें ला सकते ह। यह एक चौंका देनेवाली बात मालूम पड़ेगी लेकिन मता इसे सबया यावहारिक और विन्मुक्त उचित समझता हू। इसा तरह जलोको सुधार-मूहा और कारखानाका रूप दिया जा सकता है। उस हालतमें वे खर्चोंले और सजा देनेवाले महकमोंके बन्नेले स्वावलम्बी और शिक्षणात्मक महकमे बन जायेंग। इविन-गाधी करारक अनुसार जिसकी सिफ नमकवाली धारा जय भा कायम है नमक गरावाके लिए मुफ्त मिलना चाहिय। लेकिन ऐसा है नहीं। अब कमसे कम कांग्रेसी प्रान्तामें ता यह हो हा सकता है। इसी तरह जो भी बपडा खरीना जाय वह खादीका ही होना चाहिये। शहराके बजाय अरवा गावो और किसानाकी तरफ ज्यादा ध्यान दिया जाना चाहिये। यतो इधर उधरके कुछ उलाहरण भर हुए। ये सब बाने पूरी तरह कानून-सम्मत ह। परन्तु इनमें म किसी एकके लिए भा अभी तक कोई प्रयत्न नहीं किया गया है।

इसके बाद मंत्रियाके अपने निजी आचरणका मवाल आता है। कांग्रेसी मंत्री किस तरह अपना कतय पालन करग? राष्ट्रपति (कांग्रेस अध्यक्ष) तो तीसरे दर्जेमें यात्रा करत ह। तब क्या मंत्री पहले दर्जेमें यात्रा करेग? इसी प्रकार राष्ट्रपति तो सुरदरे और साय खहरके बुने घाती और जाकिटस ही सताप कर लेते ह तब क्या मंत्री परिचमके रहन-सहनके ढंग और पमाने पर पसा खच करेग? गत १७ वर्षोंमें कांग्रेसियान कठोरतासे सात्गावा पालन किया है। अत राष्ट्र

राज्य हमारी पद्धति का विरुद्ध मित्र है, दोनों राज्याणा प्रतिनिधित्व  
 करनेवाले राजा-गुरु मूल्य एक ही मानव-भारिवाक ह। अब उन्हें  
 एक-दूसरे का सम्पर्क में आना होगा अथवा मित्रता जसा पहल कभी नहीं  
 मित्रता था। मानव-दृष्टि से मन विधानवा जा अध्ययन किया है वह अगर  
 सही है तो उमने जरिये दो दृष्ट — हरणक जपन अपन इतिहास अपनी  
 आधार भूमि और अपना राज्य सामने रखकर — एक-दूसरे का बल्लनके  
 लिए आग बढ़ते ह। जड और आत्मा रहित सस्थायें हाती ह न कि  
 उन्हें बनानेवाले और उनका उपयोग करनेवाले मनुष्य। अगर अग्रज  
 या अग्रजियतमें पल हुए हिन्दुस्तानी कमने कम यदि भारतीय यानी  
 काग्रसके दृष्टिकोणसे भी देख सक ता समझना चाहिय कि काग्रसन अपनी  
 लड़ाई जीत ली और पूण स्वाधीनता हमें एक बूद खून बहाय बिना ही  
 प्राप्त हो जायगी। म जिसे अहिंसात्मक तरीका कहता हू वह यका है।  
 यह तरीका चाहे थककूपी भरा समझा जाय या काल्पनिक अथवा अव्याव  
 हारिक परन्तु यही वह सर्वोत्तम तरीका है जिसे काग्रसिया अथ भार  
 तीया तथा अग्रजाको जानना चाहिय। यह ध्या रह कि पद ग्रहण  
 इसलिए नहीं किया जा रहा है कि किसी न किसी तरह नये विधान  
 पर जमठ किया जाय। यह तो काग्रसका अपना पूण स्वतंत्रताका ध्यय  
 सिद्ध करनेकी दिशामें एक ऐसा गभीर प्रयत्नमात्र है जिसमें एक आर  
 तो खूनी क्रांति यानी रक्तपातको बचाना है और दूसरी आर सवि  
 नय अवनको ऐसे पमाने पर करनेसे रोकना है जिस पर कि अभी  
 तक उसे करनेका प्रयत्न नहीं हुआ है। ईश्वर हमारे इस प्रयत्नको  
 आशीर्वाद दे। १

## कितना मौलिक अंतर है !

जरा सोचनी बात है कि पुराने और नये राज्य प्रबंधमें कितना मौलिक अंतर है। हमने महत्त्वकी पूरी तरह अनुभव करनेके लिए इस नये विधान द्वारा लादी गई तथा प्रबंधकके भागमें वेहूद राडे अट बानवाली मर्यादाजाको हम एक क्षणके लिए मुला दें। पद ग्रहण करनेमें कांग्रेस ठठ परकाष्ठानी सीमा तक चली गई है। पर सवा यह है कि इससे दरअसल उसके हाथमें सत्ता कितनी आइ है। पद मनि मडग पर गवनराका नियंत्रण था अब कांग्रेसका है। अब वे कांग्रेसके प्रति जिम्मेदार ह। अपनी प्रतिष्ठाके लिए वे कांग्रेसके श्रेणा ह। गवनरा और मंत्रि सबसवालाको आज भले ही हम हटा न सक फिर भी वे मंत्रि-मडलके प्रति जवाबदेह ह। तब भी मंत्रियोंका उन पर नियंत्रण एक हू तक ही है। किन्तु इस हदके अंदर रहने हुए भी वे कांग्रेसकी माना जनताको सत्ताका संगठन कर सकते ह। मंत्रियोंके काय गवनराके लिए चाहे जितन अरुचिकर हा पर अब तक वे इस कानूनकी मर्यादामें रहगे तब तक गवार उनका कुछ भी नहा कर सकगे। और अठी तरह परीक्षा करने पर हमें साफ साफ दिखाई दे सकता है कि जनता अगर अहिंसक बनी रही तो कांग्रेसके मंत्रि-मडलके हाथमें राष्ट्रको विकसित करनेकी अब भी काफी सत्ता है।

इस सत्ताका उपयोग करके अगर अच्छे परिणाम लाने ह तो जनताका चाहिये कि वह कांग्रेस और उनके मंत्रियोंका हार्थिक सहयोग द। अगर मंत्री कुछ अयाम कर तो हर आदमी इसकी शिकायत राष्ट्रीय महाममिति (अल इंडिया कांग्रेस कमेटी) के मंत्रीसे कर सकता है और उसके परिभाजनकी माग भी कर सकता है। पर कानूनकी कोर अपन हाथमें न ले।

वाप्रगवाणियों को यह भी अच्छी तरह जान लेना चाहिये कि आज सारा मन्तव्य बांप्रसवे हाथमें है। एक भी राजनीतिक दल ऐसा नहीं है जो उनकी सत्ताके खिलाफ उगता तब उठा सके क्योंकि दूसरे दल कभी गावामें गया हा नहा ह। और न यह काम ही ऐसा है जो एक दिनमें किया जा सके। इसलिए जहा तब म नजर दौडाता ह मुय तो यही दिखाई देता है कि हमारे मंत्रियोंके लिए — यदि वे ईमान्दार, निस्वार्थ, उद्योगशील, सजग और तत्पर ह तथा अपन करोडा भूखा भरनवा भाई-बहनाका सचमुच भला करना चाहते ह — बांप्रसवे पूण स्वतंत्रतावाले घ्ययकी तरफ तेजीसे आगे बढन वतानके लिए यह बडा अच्छा मौका है। नि सदेह इस कथनमें भी बहुत सत्य है कि इस नय कानूनन राष्ट्र निर्माणकारी महकमाके लिए मंत्रियोंके हाथोंमें कुछ भी पसा नहा छाडा है। पर अधिकांशमें यह भी तो एक धम ही है कि राष्ट्र निर्माण केवल पसेसे ही हो सकता है। सर डनियर हेमिल्टनके साथ म भी यही मानता ह कि सच्चा धन सोना-चादी नहीं बल्कि श्रमशक्ति है। धनशक्तिके साथ श्रमशक्तिका होना अच्छा है। किन्तु श्रमशक्ति मुख्य हो और उसके साथ जहा जरूरत हो वहा पसेकी भी सहायता ले ले तो वह अधिक अच्छा है कम तो हरगिज नहीं।

एक अग्रज अथशास्त्री जो कि हिंदुस्तानमें एक बड ऊंचे पद पर रह चुके ह लिखते ह हिंदुस्तानको हमारी सबसे बुरी देा है ये महंगी नौकरिया। पर जो हुआ सो हुआ। मुझ तो अब कोई स्वतंत्र वस्तु टूटकर बतानी होगी। आज जो कुछ पसेके लिए किया जाता है वह अब आग सबाकी दष्टिसे होना चाहिये। डाक्टरा तथा शिक्षकोको भारी भारी तनखाहे क्या दी जाय ? सहकारिताके सिद्धांतके अनुसार क्या नहीं अधिकांश काम चलाया जा सकता ? आप पूजाकी चित्लाहट क्यों मचाते ह जब कि सत्तर करोड हाथ काम करनके लिए तयार ह ? अगर हम सहकारिताके आधार पर — जो कि समाज



वाल्वा एक सगाधित रूप है — काम करें, ता हमें धनकी कमस कम अधिक परिमाणमें ता जरूरत नहा होगा।'

सेगावमें मुझे इसका प्रमाण मिल रहा है। यहाके चार सी वालिंग निवासी बडा आसानास एक सालमें दस हजार रुपये कमा सकत ह वानें कि व मेरे बनाव हुए माग पर चल। पर व चलने नहा। उनमें सहयोगकी कमी है। व काम करत समय बुद्धिसे काम नहा तैत और का भी नई बान सीवना नहा चाहत। छुआछूत उनके रास्तेमें एक बडा जबरदस्त रुकावट है। अगर कोइ उह एक लग्न रुपये भी दे द, तो वे उसका सदुपयोग नहा करगे। तैकिन अपना इम दगाके लिए व लोग खुद ही जिम्मेदार नही ह। जिम्मेदार हम मध्यम बगके लग ह। सगाव तमा ही हालत दूमरे गावाकी भी समस्त लीजिय। तैकिन धारजके साथ प्रयत्न किया जाय, ता उन पर भा सगावका ही तरह असर — भल बहुत पाडा ही क्या न हो — पड सकता है। पर अगर एक पाइ भी अधिक खच किये राय इस लिंगामें बहुत-कुठ कर सकता है। सरकारी अधिकारियाका उपयोग लोगको सतानके बजाय उनकी सवामें किया जा सकता है। ग्रामाणा पर किमा तरहनी जार-अजरदस्ता करनेकी जरूरत नही है। उह ऐसा बानें करनेका गिना दी जा सकती है जिसस कि व नतिक बौद्धिक गारारिक और आर्थिक सब त्रियासे सम्पन्न हो जाय। १

## मन्त्रीपद कोई पुरस्कार नहीं है

विभिन्न प्रान्तों में मेरे पास कई एम पत्र आ रहे हैं जिनमें कांग्रेस के मन्त्रीपद ग्रहण करने पर छुट्टी या अपने किसी मित्रको मन्त्रीपद न देनेकी गिवायतने साथ साथ इस सम्बन्धमें मुझसे बीचमें पडनक लिए कहा जाता है। मेरे खयालमें ऐसा एक भी प्रांत न होगा जहास मेरे पास ऐसी गिवायतने न आई हो। बल्कि इनमें से कई पत्रोंमें तो यह भय भा बताया गया है कि अगर अमुक व्यक्तिके दावा पर ध्यान न दिया गया तो साम्प्रदायिक दंग आदि भयकर परिणाम उपस्थित होंगे।

इस सम्बन्धमें पहली बात तो मैं यह कहूंगा कि मन्त्रियांक चुनाव के किसी भी मामलेमें मैंने कोई दखल नही दिया है। पहला तो मेरी ऐसी कोई इच्छा ही नहीं है फिर अगर इच्छा हो भी तो कांग्रेससे विलकुल अलग हो जानेके कारण मुझ एसा मामलामें हस्तक्षेप करनेका कोई अधिकार नहीं है। कांग्रेसके मामलामें मैं उसी हद तक पन्ता हूँ जहा तक मन्त्रीपद ग्रहण करनेके सिलसिलामें खड हानेवाले प्रश्नांक बारेमें या पूण स्वाधीनताके हमारे लक्ष्यको पहुचनके लिए अपनाई जानेवाली नीतियोंके बारेमें मेरा सलाहका जरूरत हा।

लेकिन मुझ एसा मालूम होता है कि मेरे पास जो लोग लम्बे लम्बे पत्र भेज रहे हैं उनक खयालमें मन्त्रीपद माना पुरानी सेवाओंके बदलेमें मिलनवाले पुरस्कार ह जिनके लिए कुछ कांग्रेसी अपन दावे पैग कर सकते ह। मैं उन्हें यह सुझानका साहस करता हूँ कि मन्त्रीपद तो सेवाके द्वार ह जिन लोगोंको वे सुपुद किय जायें उन्हें प्रसन्नता और पूरी योग्यताके साथ जनताकी सेवा करनी चाहिये। इसलिए इन पदोंके लिए आपसमें छीना-झपटी होनी ही नहीं चाहिय। विभिन्न हिता

को सतुष्ट करनेके लिए मन्त्रापदाका निर्माण करना निश्चय ही गलती होगी। अगर मैं किसी प्रांतका प्रधानमन्त्री होता और मेरे पास ऐसे दाव थात तो मैं अपने निर्वाचकाने कह दता कि वे किसी और आत्मी को अपना नेता चुन ले। इन पदासे हमें चिपट नहीं जाना है बल्कि हलके हाथसे उन्हें पकड़े रहना है। ये तो बाटाके ताज हूँ या होने चाहिये। ये प्रतिद्विके लिए कभी नहीं हो सकते। एत तो यह देखनेके लिए ग्रहण किये गये हूँ कि अपने लक्ष्यकी ओर हम जिस गतिसे बढ़ रहे हैं उसमें इनसे कुछ जल्दी होती है या नहीं। ऐसी मूरतमें अगर स्वार्थी या गुमराह लोगको प्रधानमन्त्रिया पर हावी होकर प्रगतिमें बाधा डालने दी गई तो वह बड़ी दुःखद बात होगी। जिन लोगोंस जत्तमें जाकर मन्त्रियाको सत्ता हासिल होती है उनसे अगर आवासन मागना जरूरी था तो आपसमें एक-दूसरेको समझने, असन्धि रूपसे वफागार रहने और अनुगासनका स्वेच्छापूर्वक पालन करनका आवासन पानेकी दूनी जरूरत है। कांग्रेसजनाने अगर अपने व्यवहारमें काफी निस्वायतता अनुगासन और लक्ष्यप्राप्तिके लिए कांग्रेस द्वारा प्रतिपादित साधनोंमें अपना विश्वास प्रकट नहा किया तो जिन विकट लडाईमें हमारा देग लगा हुआ है उसमें हमें विजय नहा मिल सकती।

भला हो कराचाक प्रस्तावका जिसक कारण कांग्रेसक मातहत ग्रहण किये जानेवाल मन्त्रीपदाके लिए आधिक आकषण नहा हो सकता। यहा मैं यह जरूर कहूंगा कि ५०० रु० की तनखाहको ज्यागसे ज्यादा समपनके बजाय कमसे कम समपना गलती है। ५०० रु० तो आखिरी हद है। हमारे देग पर बहुत भारी भारी तनखाहाका जो बोझ लदा हुआ है उसके हम अगर आना न हो गये होते तो ५०० रु० की तनखाहको हमने बहुत ज्याग समपा होता। कांग्रेसमें तो पिछले १७ सालसे आम तौर पर तनखाहकी कमसे कम दर ७५ रु० रही है। राष्ट्रीय गिना सारी और ग्रामोद्योग कांग्रेसके जो तीन बड बड रचना

रमक अतिल भारतीय विभाग ह, उनमें तनखाहका स्वीकृत दर ७५ ६० माहवार रही है। और इन विभागामें एस व्यक्ति मौजूद ह जा — जहां तब योग्यताका सम्बन्ध है — इतने योग्य ह कि किसी भी दिन मन्त्रीपन्की जिम्मेगारी सभाल सकत ह। उनमें ख्यातिप्राप्त शिक्षागास्त्री वकील, रसायनगास्त्री और व्यापारी ह जो अगर चाहे तो आसानीसे ५०० ६० माहवारसे ज्यादा कमा सकने ह। भला मन्त्रा बनन पर एसा फव क्यो आ जाना चाहिये जसा कि हम आज देख रहे ह? लेकिन थव तो गायन जो कुछ होना था वह हो चुका। मन जो बानें कही व तो मेरी यक्तिगत रायको ही प्रगट करती ह। प्रधानमन्त्रियाक लिए मेरे मनमें इतना ज्यादा आदर है कि उनके निणय और उनका बुद्धि मत्ता पर मं शका नहा कर सकता। उनके सामने जो परिस्थितिया उपस्थित थी उनमें उनके खयालसे नि सदेह मही सर्वोत्तम था। अपन पास आनेवाळ पत्राके जवाबमें पत्रलेखकाको जा बात म बताना चाहता हू वह यह है कि इन पदाको इनकी वजहसे मिलनेवाली तनखाह और भत्तेकी रकमके खातिर ग्रहण नही किया गया है।

और फिर दलमें से उही लोगोको ये पद दिय जायगे जा कि इन पर आसीन होकर इनके द्वारा प्राप्त कतयका पालन करनके लिए सबसे अधिक योग्य होंग।

और अंतमें असली कसौटी तो यह है कि उसी दलके सदस्याको इन पदाके लिए चुना जाय जिसकी वजहसे प्रधानमन्त्रियाको अपना पद प्राप्त हुआ है। कोई भी प्रधानमन्त्री अपने दलके ऊपर अपनी मर्जेके किसी पुरुष या स्त्रीको एक क्षणके लिए भी नही लाने सकता। वह तो इसीलिए प्रमख है कि योग्यता यक्तियाके नान तथा दूसरे जिन गुणासे नतृत्व प्राप्त होता है उनके लिए उसे अपन दलका पूरा विश्वास प्राप्त है। १

## विजयकी कसौटी

मुझ अपनी यह राय जाहिर करनेमें कोई हिचकिचाहट नहा हुई कि काफ़सबे मन्त्रियान अपने लिए जा वेतन लेनका निश्चय किया है वह हमारे — जयन्ति सप्ताहके इस सबसे अधिक दरिद्र देगके — पमाने को देखत हुए बहुत ही अधिक है क्याकि हमारा असली पमाना तो वही होना चाहिये। प्रा० वे० टी० शाहन जल्नी जल्नीमें एक टिप्पणी\* सपार करके मेरे पास भजी है। उसमें उन्हाने बताया है कि हिन्दुस्तानका वार्षिक औसत आमदनी ४ पौंड और इंग्लंडकी ५० पौंड है। दुर्भाग्य

### \* तुलनात्मक आंकड़

इसके साथ दुनियाके भिन्न भिन्न देशाके कुछ मुख्य अधिकारियाको दिय जानवाल वार्षिक वेतन और भत्ताकी याता दा जा रहा है। (ग्रेट ब्रिटन ८००० पौंड अमेरिका १८००० पौंड फ्रांस २८००० पौंड आस्ट्रलिया ८००० पौंड कनेडा १०००० पौंड, भारत १३०००० पौंड।) इन आंकड़ा परमे पूरी स्थिति समझमें नहा आ सकती क्याकि ये वेतन देगकी औसत आय पर कितने भाररूप ह, यह बात ये आंकड़े नहीं बता सकने। आज तकके निश्चित आंकड़े में नही दे सकता, लेकिन मुझ जा याद ह वे लगभग निश्चित ह और उन परसे मैं यह कह सकता हू कि भिन्न भिन्न देगाकी वार्षिक आयके नीचे दिय जा रह आंकड़े बराबर ह। ये इस प्रकार ह

ग्रेट ब्रिटन	पौंड ५०	आस्ट्रलिया	पौंड ७०
अमेरिका	१००	कनेडा	" ७५
फ्रांस	४०	हिन्दुस्तान	" ४ (आजके

भावके अनुसार अधिकतम अधिक)

जापानकी आय भी हिन्दुस्तानका अपक्षा वही अधिक है।  
(हरिजन २१-८-३७, पृ० ०१८) — वे० टी० शाह

रा हमें अब भी कुछ समय अग्रजी विरासतवा योस बनाना ही होगा। अपना शक्तिभर कोटिंग करन पर भा आदग पमाने पर हम आज नहीं पहुच सके। य तनसाहें और भक्त अब बदले नहीं जा सकते। पर अब सवाल तो यह है कि क्या य मंत्री उनक सचिव और धारा सभाओके सदस्य तूब परिश्रम करके अपनका इन उची तनसाहोक पान सिद्ध कर देंगे? क्या धारासभाओके सदस्य भी अब अपना पूरा समय राष्ट्रकी सेवामें देंगे और अपनी सेवाआ तथा समयवा ठीक ठीक हिसाब पेन करगे? काई यह कल्पना करनकी भूल न कर कि जसा भी कुछ हम चाहते ह या जसा जाना चाहिय वसा सब हा गया है।

फिर केवल यही काफी नहा होगा कि मंत्रीगण सादगीसे रह और केवल खुद ही खूब काम करत रहे। उह यह भी ध्यान रखना होगा कि उनके अधीन काम करनवाले विभाग भी ठीक उसी तरह काम कर रहे ह जसा कि वे चाहते ह। उदाहरणके लिए अब जनताको माय जल्गी और कम खर्चमें मिल जाना चाहिये। आज तो वह अमीरोके बिगसकी वस्तु और जुएवा खल बन गया है। पुलिसका भय मिट जाना चाहिय और अब उसे जनताका मित्र बन जाना चाहिय। शिक्षामें भी ऐसी क्रांति होनी चाहिये कि वह साम्राज्यवादी लुटरोकी जरूरतकी नहीं, बल्कि गरीब ग्रामवासियोकी जरूरतकी पूर्ति करने लगे।

अगर मंत्रियोके बसकी बात होगी तो अब शीघ्र ही वे सब कदी छोड न्यि जायगे जिहें राजनीतिक अपराधाके कारण — चाहे वे हिंसात्मक अपराध ही क्यों न हो — बद कर लिया गया था। यह एक गभीरतासे सोचनेकी बात है। क्या इसके मानी यह ह कि अब सबको हिंसा करनकी छूट मिल गई? हरगिज नहीं। यह काग्रेसके अहिंसात्मक उद्देश्यके बिलकुल खिलाफ होगा। "यक्तियोकी हिंसासे जितनी अग्रज सर कारका — जिस काग्रेस उलटना चाहता है — घृणा है उससे वही अधिक घृणा सब काग्रेसको है। काग्रेस इस हिंसाका प्रतिकार सत्ता अर्थात् सुसंगठित हिंसा द्वारा नहीं परन्तु अहिंसा द्वारा करेगी। वह गुमराहोको

मन्त्रीभावमें समझा-बुझा कर और हर प्रकारकी हिंसाके खिलाफ जोर दार जोर विचारपूण लोकमत तयार करके उस दूर करेगी। उसके उपाय निपघात्मक ह दबात्मक नहीं। दूसरे गण्टोमें, कांग्रेस सेनाबल पर भरोसा रखनेवाली पुलिसकी सहायतासे नहीं, बल्कि जनताकी सदिच्छा पर आधार रखनवाले अपन नतिक बलसे शासन करेगी। वह आज जा शासन करने जा रही है उसका आधार शास्त्राशासे सुसज्जित किना महान मत्ताकी दी हुई शक्ति महा बल्कि उस जनताका सबा है जिसका वह अपने हर कायमें प्रतिनिधित्व करना चाहती है।

तमाम प्रकारके साहित्य पर आगई गई बदी भी उठाइ जा रहा है। मग खयाल है कि इस साहित्यमें कुछ एसी भी पुस्तक हागी, जिनमें हिमा अलीलता तथा जातीय विद्रपका प्रचार भी होगा। कांग्रेस रायक मानी हिंसा अलीलता और जातीय विन्धेप फलानकी आजानी नहा है। कांग्रेसका विश्वास है कि आपसिजनक साहित्य पर राब लगानमें मुनिक्षित नागरिक उसका पूरा साथ देंग। मन्त्री भा अगर देखें कि उनके प्रान्तोमें हिंसा जातीय विद्रेप या अलीलता बढ रहा है, तो ताजारात हिं या एसे ही तमाम उपायाका अवलम्बन लेनेसे पहले वे यह आगा कर और चाह कि कांग्रेस कमनिया उनकी तत्वाल और पूरी सहायता करगी। वे कांग्रेस कायसमितिम भी सहायता मांगें। सचमुच कांग्रेसका विजयकी बसोटी तो यही है कि वह किस हद तक पुलिस और ननारो बकार साबित कर देती है। और अगर वह ऐसा न कर नती अगर ऐस प्रसग आ ही जायें जब पुलिस और सेनाकी सहायता नेना अनिवाप हो जाय तो वहना चाहिय कि कांग्रेस बुरी तरह अपपल हुई। इस मौजूदा विधानको तोहनेका सबसे उत्तम उपाय यहा है कि कांग्रेस सेनासे किमी भा प्रकारकी सहायता न ले और यह मिद्र करके निता दे कि वह अच्छी तरह शासन कर सकती है। पुलिसम भी, जिसका मन्त्रीभाव प्रकट करनवाला कोई नया नामकरण किया जा सकता है, वह कमने कम सहायता ले। १

## पद ग्रहणका मेरा अर्थ

श्री शवरराव दय लिंगते ह

आपका पत्र नहीं गीपक आपकी टिप्पणी (ह० स० २८-८-३७) के दूसरे परेमें आपन लिखा है— कांग्रेसके चुनाव प्रापणापत्र और प्रस्तावाकी दृष्टिसे भी म मंत्रीपद ग्रहण करनेका एक सास अर्थ नेता हूँ। इसलिए पद-ग्रहणक अपन इस अर्थका म जनता और मंत्रियोंके सामन न रखू ता वह ठीक नहीं होगा। मन जहा तक आपके आगयको समया है पद-ग्रहणको आपन इसलिए आवश्यक समझा कि इसस रचनात्मक कार्यक्रममें सहायता मिलेगी तथा जनताकी सेवा करन तथा कांग्रेसकी गतिन बढ़ानेका मौका मिलेगा। लेकिन म समयता हूँ कि इस सम्बन्धमें आप अपना आगय जरा विस्तारस समझा दें तो ज्यादा अच्छा होगा।

सही हो या गलत लेकिन १९२० स कांग्रेसके तसे विचार रखन चाहे लाखो-करोडा हिन्दुस्तानियाका यह दृष्ट मत रहा है कि अग्रजी हुक्मत हिन्दुस्तानके लिए कुल मिलाकर शापरूप ही सिद्ध हुई है। और इस हुक्मतके टिके रहनका कारण अग्रजी फौजें तो ह ही पर साथ ही उसके लिए धारासभाए उपाधिया जन्मते शिक्षासस्थाए और अर्थ नीति भी उत्तनी ही जिम्मेदार ह। कांग्रेस अन्तमें इस ननीजे पर पहुची कि हमें बंदूकोसे डरना नहीं चाहिये। इतना ही नहीं बल्कि जनताको उस सुसगठित हिंसाभा अग्रजी बंदूक जिसका एक नमन प्रतीक मात्र ह, प्रतिकार अपनी सुसगठित अहिंसा द्वारा करना चाहिय और धारासभाआ आन्तिका प्रतिकार असहयोग द्वारा होना चाहिय। इस असहयोगका एक मजबूत और परिणामजनक विधायक पहलू भी था जिसे लोग रचनात्मक काय कहते थे। जिस हूँ तक यह १९२० का कार्यक्रम सफल हुआ उमी हद तक राष्ट्र भी सफल हुआ।



और यह नीति कभी बन्नी नहा है। इसकी गनों भी काप्रेसने उठाद नहीं ह। बल्कि मरा ता यह मत है कि तबमे जितने भा प्रस्ताव काप्रेसने स्वीकार किये ह व सन एम मूलभूत नातिके निषेधक नहीं बल्कि पूरक ह जब तक उनकी तहमें वही १९२० वाला बर्तन मौजूद है।

१९२० की नीतिवा मुख्य आधार राष्ट्रकी सुमगठित अहिंसा था। अप्रजा गामन प्रणाली पथरका तरह्ट जड हा नहीं बल्कि राक्षसा भा थी। परन्तु उसके पीछे काम करनेवाल स्त्री-पुरुष एस नहीं थे। इसलिए हमारा अहिंसाका उद्देश्य ता यह था कि हम इस प्रणालीका चलानवालाका हृदय बन्द हें यह नहीं कि उनका नाग बर दें। फिर वे अपना हृदय चाहे खुगास बन्द या मजबूर हाकर। अगर उहान यह दता — मर वे इस न भा चाहत हा — कि हमारा अहिंसाक कारण उनकी बद्रूक तापें और व तमाम चीजें जा उहाने अपनी मत्ताका मजबूत करनेके लिए निर्माण का था बेकार हा गई ह तो व सिवा इसके बर ही क्या सकत ह कि अटल नियतिके सामन अपना मिर सकार या तो यहासे चले जाय या अगर रहना हा पसंद कर ता हमारी गनों पर रहें याना हमार मित्र बनकर हमस सहयाग बर न कि गामक बनकर हम पर अपनी इच्छाएं लादें।

अगर काप्रमवाणी इन मनावृत्तिको केबर धारामभाजामें गय ह और इसी मनोवृत्तिमे उहान पत्र-ग्रन्थ किया है, और अगर अप्रेज गामक भी काप्रमी मन्त्रि मण्डलाको अनिश्चित बाल तक बरदान्त बरत रहें तो समझना चाहिये कि काप्रेस इस कानूनका ताडन और सम्पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करनेक मागमें बाधा ह तक सफल हो जायगी। क्याकि अगर मरी बनाई गनों पर काफी बरस तक मन्त्रि-मंडल कायम रह ता निरक्षय ही काप्रमकी गक्ति न्ति न्ति बन्ती हा जायगी और अन्तमें जाकर वह ऐसा दुःमनीय हो जायगा कि उसक मागमें कोई स्वय नहीं हो सकेगा। पर एस परिणतिकी मवम पहचान और अन्तिमप्य फल हल्ला

जनता द्वारा अहिंसाका स्वच्छापूर्वक पालन । इसका माना है समस्त जातियोंके बीच सम्पूर्ण मित्रता और सहयोग अस्पृश्यताका सम्पूर्ण नाश, नौबानों द्वारा अफीम और शराबका स्वच्छास त्याग स्त्रियाका सामाजिक गुलामीसे मुक्ति, गावामें रहनेवाले कराहा श्रमजाधियाका उत्तरोत्तर कष्ट निवारण निःशुल्क और अनिवाय प्राथमिक शिक्षा — आज बल्की तरह नाममात्रका नहा बल्कि सच्चा जसा कि मन बतानका साहस किया है प्रौढ शिक्षा द्वारा ऐसे अधविश्वासाका प्रमाण निमूलन जो निश्चित रूपसे हानिकर सिद्ध हो चुक है, माध्यमिक शिक्षामें इस दृष्टिस आमूल परिवर्तन कि वह मटठाभर मध्यम बगकी नहीं बल्कि करोडा ग्रामवासियोंकी जरूरतोंकी पूर्ति कर सके — याय विभागके बदर भी ऐसा मौलिक परिवर्तन हो कि जिससे कम खर्चमें शुद्ध याय मिल सके और जलोका सुधार गृहोंमें परिवर्तन हो और बहा सजाके लिए नहीं बल्कि सम्पूर्ण शिक्षा पानके लिए उन आदमियोंको भेजा जाय जिनको जब तक हम गलतीसे अपराधी कहते जायें ह परंतु दरअमल जिनके दिमागमें तात्कालिक शराबा पदा हो जाता है ।

इस लम्बी-चौड़ी काय-योजनाको देखकर कोई डरे नहीं । अगर हम निश्चय कर लें तो भरी बताई हुई इस योजनाके हर हिस्से पर अगर किसी एकावटके हम आस ही अमल शुरू कर सकते ह ।

पद-ग्रहणकी सलाह देते समय तक मन शासन विधानको ध्यानसे पढ़ा नहीं था । लेकिन उसके बादसे अध्यापक क० टी० साहूकी लिखी 'प्रातीय स्वायत्त शासन पुस्तकका मैं ध्यानपूर्वक अध्ययन कर रहा हू । यह पुस्तक नम विधानकी एक जोरदार निंदा है लेकिन कट्टर लोकाकी दृष्टिसे वह एक सच्चा और यायगढ़ निषेध है । किंतु काग्रसके इन तीन महीनके समयने सारे कामुमडलको बदल दिया है । मस एसी एक भी बात इस कानूनमें नजर नहा आती जो मत्रियोंको सुझाये गये मेरे कार्यक्रमका आरम्भ करनेमें बाधक हो । कानूनमें जिन विशेष अधि कारों और सरक्षणोंका उल्लेख है, उन पर अमल करनेका मौका तभी

था सकता है जब कि देशमें हिंसा या अल्पमूल्यका और तयार्थित बंदूकधरक जातिके बीच संध — जा कि हिंसाका दूसरा नाम है — पन हो।

इस कानूनकी हरएक धारामें मुझे यह दिखाइ देता है कि इसक बनानेवालेके मनमें हिंदुस्तानकी अपना शासन खुद करनेकी योग्यतामें घोर अविश्वास और अंग्रेजी हुकूमतको चिरस्थायी बनानेकी इच्छा है। परन्तु साथ ही इसके निर्माताओं जनताको अंग्रेजोंके पक्षमें खड़े होनेके लिए एक साहसपूर्ण प्रयोग किया है और इसमें अगर वे सफल न हुए तो अंग्रेजी सत्ताको खतम करनेकी जनताकी इच्छाक वग होनेकी तयारी भी उनकी है। इन लोगोंका दिल बन्दूककी दृष्टिस ही काप्रसन धारा समाजमें जाना स्वीकार किया है और अगर वह अहिंसा असहयोग और आत्मसहिष्णुकी सच्ची भावनासे काम करती रही, तो मुझे निश्चय है कि यह जरूर सफल होगा। १

२६

### आलोचनाओंका जवाब

ता० १७-७-२७ के हरिजन में छप भरे काप्रसी मत्रि मंडल घोषक लेखकी ओर लोगोंका ध्यान आकर्षित हुआ है और उस पर आलोचनामें भी हुई है जिनका उत्तर देना जरूरी है।

गराबबंदी

बहा जाता है कि पूरा गराबबंदी अगर सभव भी हो, तो वह एवम् बस की जा सकती है? एवदमसे मेरा मतलब यह है कि ऐसा घोषणा तुरन्त कर दी जाय कि १४ जुलाई १९३७ से — अर्थात् काप्रसक पहले मत्रि-मंडलन जबस सत्ता हाथमें ली उस दिनसे — लेकर तीन सालके अन्दर अदर दरारि वगरा भादक द्रव्याकी पूष बंदी हा जायगी। मेरा तो स्यात् है कि गराबबंदी दो सालके अन्दर ही हो

लिए उसना अधिकार ग्रहण तथा साथक कहा जायगा जब वह इस महानागर सुराईक गाय साहस और बठारतास युद्ध छड देगी।

### शिक्षा

शिक्षासत सगल दुर्भाग्यवत गरायक साथ जोड श्या गया है। गरायना आय मशि वर हा जाय तो शिक्षाका क्या होगा? निस्सन्देह नये कर लगानक और भी तरीके हो सकत ह। अध्यापक ग्राह और खवानान यह शिसाया भी है कि इस गरीब दगमें भी कुछ नय कर उगानका गुजाइग है। सपत्ति पर हमारे यहा अभी काफी कर नहीं लगा है। ससारके अय दगमें कुछ भी हा महा तो व्यक्तियोंके पास अत्यधिक सपत्तिका होना भारतका मानवताके प्रति एक अपराध ही समझा जाग चाहिय। जत सपत्तिकी एक निश्चित मर्यादाके बाद जितना भी कर उस पर लगाया जाय उतना थोडा ही होगा। जहा तक म जानता हू इगडमें व्यक्तिकी आय एक निश्चित सख्या तक पहुच जानके बाद उससे आयका ७ प्रतिशत कर श्या जाता है। कोई कारण नहीं कि हिन्दुस्तानमें हम इससे भी काफी अधिक कर क्यों न लगायें? मृत्युकर भी क्यों न लगाया जाय? बरोडपतियोंके लडवे जब वालिग होन पर भी विरासतमें मिली सपत्तिका उपभोग करते ह तो इस विरासतके कारण ही उहे नकसान उठाना पडता है। इस तरह राष्ट्रकी दुगनी हाशि होती है। जो विरासत वास्तवमें राष्ट्रकी होनी चाहिय वह राष्ट्रको नहीं मिशती दूसरे राष्ट्रको इस दृष्टिस भी हाशि हाती है कि सपत्तिके बोझके नीचे दब गानक कारण इन वारिसाके सपूण गुणोका विकास नहीं हो पाता। इस बातसे मेरे तक पर कोई असर नहीं पडता कि प्रांतीय सरकार मृत्युकर नहीं लगा सकती।

परन्तु समग्र राष्ट्रकी दृष्टिसे हम शिक्षामें इतने पिछड हुए ह कि अगर शिक्षा प्रचारके लिए हम केवठ धन पर ही निर्भर रह्य तो एक निश्चित समयके अदर राष्ट्रके प्रति अपन कतयका पालन करनी आगा हम इस पीलीमें तो कर ही नहीं सकते। इसलिए मन यह

सुझानेका साहम किया है कि गिभाको हमें स्वावलम्बी बना दना चाहिये। फिर भले ही लोग मुझ यह कहें कि मेरे भीतर रचनात्मक कायकी कोई योग्यता नही है।

मत्रि मडलावे पक्षमें उनकी योजनाओंको सफल बनानेके लिए सिविल सर्विसकी सुसंगठित बुद्धि चातुरी और संगठन शक्ति भी है। सिविल सर्विसके अधिकारियोंको तो वह बला याद है जिसकी सहायतासे एसी एसी शासन-नीतियों को भी वे अमलमें ले आते हैं जा उनके लिए शकना गवर्नर या वाइसराय बनाकर दे दत ह। मत्री एक निश्चित और विचारपूण नीति निश्चित कर दें। फिर उस पर अमल करना सिविल सर्विसका काम रहेगा। उनकी ओरसे जो वचन दिये गये हैं उनका पालन करके सिविल सर्विसके अधिकारी उन लोगोंके प्रति उत्कृण ह। जिनका वे नमक खा रहे ह।

### जलें

जलाको दण्डगृहाक बजाय सुधार-गृह बना देनेवाला मेरी सलाह पर बहुत टीका टिप्पणी नहीं हुई है। बवल एक टीका मने देखी है। अगर जले बैचने योग्य चीजें बनाने लगेंगी ता वे बाजारके साथ अयायमूक्त प्रतिस्पर्धामें पड जायगा। परन्तु इस कथनमें कोई सार नहीं है। इसकी कल्पना मुझ १९२२में ही थी जब म यरवडा जेलमें बंद था। अपनी इन योजना पर मने तत्कालीन हाम मन्वर जेलके तत्कालीन इन्स्पेक्टर जनरल और ग सुपरिन्टेण्डेण्टके साथ भी जिब मानान उन जिना क्रमग यरवडा जल रही बातचीत की थी। उनमें स एवने भी उम याजनामें कोई दोष नहीं बताया था। तत्कालीन हाम मन्वरको उसमें विरोध लिखरपा हो गई थी। उहान मुझसे अपनी याजना लिखर दतना भी कहा था। गपद उम पर वे गवर्नरका मजूरी भी लेना चाहते थे। परन्तु गवर्नर महान्य एक ऐसे बदीकी बात सुनना मने गवारा कर सवते थ जा कि जेलके ही प्रबंधके विषयमें सूचनायें द रहा हो? इसलिए मरा वह याजना या हा

द्वार बंद ही गई। पर उगने बर्तानो तो आज भी उसमें उता ही विषय है जिनका १९२२ में या जब कि यह पहले-पहल बनाई गई था। मरा याजना नीचे दी जाती है

जेलोंके व सामान उद्योग बंद कर दिये जाय जिससे आवश्यक धान्य व होती हो और सामान जगाने हाथ-बताई और हाथ-बुनाईका काम करनेवाली संस्थाओंमें बन्द किया जाय। जहां संभव हो वहां कपासका सतीकी भी शुरुआत की जा सकती है और ठंड उत्तम कपड बनाने तककी सब क्रियाएँ उनमें हो। म यह सूचित करना चाहता हू कि इस धान्यके लिए आवश्यक हर प्रकारका बुद्धि-वीरल जलामें पहलेसे ही मौजूद है। केवल याजक बद्धि और इच्छाकी जरूरत है। कदियाको अपराधी समझनेके बजाय उन्हें एक प्रकारके अपग समझा जाय। बांडर उनके लिए कोई भयकर जीवके समान व हो। जलके अधिकारियोंको भी कर्तियोंके मित्र और शिक्षक बन जाना चाहिये। हा एक गत जरूर अनिवार्य हो कि जगामें जो सानी वा उस सबको लागत मूल्य पर राय खरीद ले। रायकी जरूरतोंके बावजूद सानी धने उसे कुछ अधिस कीमत पर जनतामें बंध दिया जाय जिससे उसके नफेमें से एक बिन्नी भंडारका खर्च निकल जाय। इस सूचनाके स्वीकारका जलका गावाके साथ निरन्तर सम्बन्ध स्थापित हो जायगा और व गावामें सारीका सदेन पहुंचानका काम करेगी। साथ ही जलसे ग्रिहा हुए कभी राज्यके आदम नागरिक भी बन सकते हैं।

#### नमक

मुझे स्मरण दिलाया जा रहा है कि पूर्वि नमक केन्द्रीय सरकारके मातहतका विषय है इसलिए प्रांतीय मंत्री उस विषयमें कुछ नहीं कर सकते। अगर वे सचमुच कुछ न कर सकें तो मुझे आश्चर्यके साथ दुःख भी होगा। प्रांतीय भूभाग पर भी केन्द्रीय सरकारकी सत्ता भजे ही हो पर प्रांतीय सरकारका यह भी तो कर्तव्य है कि वे अपने प्रजाजनानी अत्यायसे रक्षा कर फिर चाहे वह अत्याय केन्द्रीय सरकार

द्वारा ही क्या न हो रहा हो। इसलिए मंत्रि-मण्डल अपने गणित क्षेत्रमें प्रताप प्रजाक साथ होनेवाले अयायाके खिलाफ जब गिवायत कर तो गवन्तराका यह कृतव्य होगा कि वे अपने मंत्रियाका समयन कर। मंत्रि मंडल सावधानीसे काम ल तो म निश्चयके साथ कह सकता हू कि गरीब धामीणाके अपन लिए जरूरा नमक ल लनमें कद्रीय सरकार द्वारा कोई अनुचित क्वावट नही डाली जायगा। कमसे कम मुये ता एस अतचित हस्त उपेवा जरा भी भय नहा है।

अनमें म इतना ही जोडना चाहता हू कि गरावकी गिस्ता और जलके विषयमें मन जा कुछ कहा है वह इसीलिए कहा है कि काग्र क मंत्रीगण और इस विषयमें रस लनेवाके प्रजाजन इस पर विचार कर। जो विचार लीघ कालसे मेरे मनमें बने रहे ह उहें—भल व आगवकाको कितन हा विचित्र काल्पनिक या अब्यावहारिक क्या न लें—जननामे छिपाये रखना उचित नहा होगा। १

२७

## कांग्रेसी मंत्रियोंकी चौहरी जिम्मेदारी

कांग्रेसी मंत्रियोंकी चौहरी जिम्मेदारी है। व्यक्तिगत रूपमें ता मन्त्रा अमलमें अपने मतनाताआके प्रति जिम्मेदार है। अगर उम यह विश्वास हो जाय कि यह अब उनका विश्वासपात्र नहा रहा है या जिनि विचारके लिए वह चुना गया था व उमने धन्य लिय ह ता र इन्नीफा दे दगा। सामूहिक रूपसे मन्त्री धारामभाव सम्प्राप्त वद मनक प्रति जिम्मेदार ह जा चाह तो अविश्वामक प्रस्ताव या एम हा रिमा न्यायम उह पन्च्युत कर सकते ह। क्विन कांग्रेसी मन्त्री अपन प और जिम्मेदारीके लिए कांग्रेसकी प्रान्तीय समिति ओर महा समिति प्रति भा जिम्मेदार है। जब तक य सांगीवी गारा

सस्याएं मिलकर काम करती रहती हं तब तर मंत्रियाको अपन वनध्य पालनमें आसानी रहती है।

लेकिन महासमितिकी हालती बठवसे मालूम हुआ कि उमव कुछ सन्स्य काप्रसी मत्रि मडलासे और खासकर मन्सतक प्रधानमत्री आ राज गोपालाचायसं विन्बुल सहमत नहा थ। स्वस्य पूरा जानकारीस पूण और संतुलित आलाचना सावजनिक जीवनका प्राण है। एक रावया प्रजाननवाणी मत्री भी जनताकी सतत निगरानीक बिना पथस विचलित हो सकना है। लकिन काप्रसी मत्रि मडलाकी आलाचना करन चाला महासमितिका प्रस्ताव और उसस भी अधिक उस पर हुए आपण सीमास बाहर थ। आलाचकान तय्याका जाननका परवाह नहीं की। श्री राजगोपालाचायका उत्तर उनके सामने नहीं था। वे जानने थ कि श्री राजगोपालाचाय वहा आन और अपने आलोचकाको उत्तर दनके लिए बहुत उत्सुक थे लेकिन मभीर बीमारीके कारण वे आ नहीं सक। अपन प्रतिनिधिके प्रति आलोचकाकी यह जिम्मेदारी थी कि थ इस प्रस्ताव पर विचार करना स्यगित कर देते। इस सम्बन्धमें प० जवाहरलालन अपन विस्तृत वक्तव्यमें जो कुछ कहा है उहे चाहिय कि वे उसका अध्ययन करे और उसे हृदयगम कर। मेरा विश्वास है कि आलोचकान अपनी आलोचनाओमें सत्य और अहिंसाकी सीमाको छोड दिया था। अगर उहोन महासमितिको अपन पक्षमें कर लिया होता ता कमस कम मद्रासके मंत्रियाको तो—जाहिरा तौर पर धारासभाके सदस्याके बहुमतका पूण विश्वास प्राप्त होते हुए भी—इस्तीफा दे देना पडता। निश्चय ही यह कोई वाछनीय परिणाम न होता।

मेरी रायमें इससे भी कही अधिक हानिकर मसूरवाला प्रस्ताव था जोर दु खकी बात तो यह है कि किसीके जरा भी सत्य प्रकट किय बिना वह पास हो गया। म मसूरकी हिमायत नहीं करता। वहा बहुतसी बाने एसी ह जिनमें म चाहता हू कि महाराज सुधार करे। लेकिन काप्रसकी यह नीति है कि अपन विराधीको भी उचित मौका दिया



जाय। मेरी रायमें मसूरवाला प्रस्ताव (देगा रायमें) हस्तक्षेप न करनेके प्रस्तावके खिलाफ था। जहां तक मैं जानता हूँ, वह प्रस्ताव कभी रद्द नहीं हुआ। वस्तुस्थितिके लिहाजसे महासमितिके सामने मसूरका मामला नहीं था। वह एक पूरी रियासतके रूपमें उभर पर विचार करने लगी जा रही थी। वह सिर्फ दमन-नीति पर विचार कर रहा थी। प्रस्तावमें घटनाआका सही स्थितिका उल्लेख नहीं था। भ्रमण गुस्सेसे भरे हुए थे और उनमें मामलका तथ्याका विचार नहीं किया गया था। अगर महासमितिका एसा ही खयाल था, तो अपना फसल मुमानसे पहले उसे तथ्य मानून करनेके लिए ज्यादा नहीं तो कमसे कम एक ही आदमीकी एक कभटी नियुक्त करना चाहिये थी। अगर उसे सत्य और जहिमाका जरा भी खयाल है तो उसे मामलामें वह कमसे कम जो कर सकता है वह यह है कि पहले वह काय समितिके उन पर अपना निणय घोषित करने दे और बादमें अगर जरूरत हा तो यायाधीनके रूपमें उनका जाच करे। अपना यातका सिद्ध करनेके लिए मने जान-बूझकर दाना प्रस्तावके सम्य-धमें तफ सीलमें जानसे अपनेको रोकना है। मैं अपनी परिमित शक्तिका बचा रहा हूँ और साथ ही इन मामलका महासमितिके, जिसने कि १९२ से एसा अपूर्व महत्त्व प्राप्त किया है और जो पद-ग्रहणके प्रस्तावके बाद दुगुना हा गया है सत्स्याकी दूरदर्शिता पर छाडता हूँ। १

## शराबबन्दी

## शराबबन्दी और सरकारी आय

या शराबबन्दीनी तारीफ तो हमें गा हाता हा रनी है। लेकिन सन् १९२० में उसे कायसक रचनात्मक कायका एक मुख्य अग बनाया गया। इसलिए दगके विसा भा हिस्समें कायसके हाथमें सत्ता आते ही वह शराब बगरा मात्रक वस्तुआकी पूरी बन्दा नहीं करती तो कसे काम चलता ? कायसो गसनके छह प्रान्तामें मत्रियाको करीब ग्यारह कराड रुपयका घाटा सहनकी हिम्मत करनी पडी है। परन्तु काय समितिन अपन वचनकी पूर्ति तथा शराब और अन्य नशीली चीजोंके आदी घाट हुए लोगके नतिक और भौतिक कल्याणकी दृष्टिसे यह खतरा भा उठानका साहस किया है।

म जानता हू कि बहुतसे लोगको यह सन्देह है कि शराबकी पूरी बन्दा कसे होगी। उनका खयाल है कि उनके लिए आयके लोभको रोकना बग कठिन होगा। उनकी दलील यह है कि नगवाज लोग तो किसी भी प्रकारसे शराब या मात्रक वस्तुएं प्राप्त कर ही लगे और जब मत्री लोग देखेंगे कि इस बन्दीके मानी तो केवठ सरकारी आयकी कुरबानी ही है—इससे मादक वस्तुओकी खपतमें भले ही वह गर कानूनी हो कोड उल्लेखनीय कमी नहीं हुई है—तो वे फिर पापका कमाई करनेक माहमें फस जायेंगे और वह हालत आजसे भी बरा हागा।

अब सवाल यह है कि शराबसे होनवाली आयका घाटा जो कुछ प्रातामें आयका एक तिहाई हिस्सा है किस प्रकार पूरा किया जाय ? मन तो बगर किसी हिचकिचाहटके यह सुझाया है कि हम शिक्षा पर क्रिय जानवाल खचमें कमी कर ३ क्योंकि जक्सर इसकी पूर्ति आव

काराकी जायमे ही की जाती है। म अब भी यह कहता हू कि शिक्षा स्वावलम्बी बनाई जा सकती है। यह जरूर है कि यदि हम मानें कि शिक्षा स्वावलम्बी हो सकती है तो भी वह एक दिनमें नही हो जायगी। मौजूदा भार और जिम्मेदारियोंको ता निवाहना ही होगा। इसलिए जायके नये साधन ढूँढने हानगे। मर्यु तम्बाकू— जिसमें बीडी भी शामिल है—आदि पर कर लगानकी बात कुछ लोगान मुझाइ है। अगर यह तत्काल असम्भव हो या ऐसा समझा जाय तो फिलहाल खचकी पूर्तिके लिए थोडी मीयादवाले बज तिकाल मा सजते ह। पर अगर यह भी सम्भव न हो ता केन्द्रीय सरकारम प्रायना की जा सकती है कि वह अपन फौजी खचमें कमी करके उस बचतमें से हर प्रातिका उसक अनपातमें सहायता दे। और केन्द्रीय सरकार इस प्रायनाका कभी अस्वीकार नही कर सकेगी खास तीर पर जब प्रातीय सरकारे यह सिद्ध कर देंगी कि कमसे कम उनको जागरिख मुरक्षा और गान्तिक लिए उन्हें फौजकी जरूरत नही है। १

### शराबबंदी और बज

हम देखते ह कि मंत्री राग शराबबंदीका कायक्रम पूरे बनिस फनकी भावनाम बना रह ह। उमम हानवाके घालेका उन्हें ध्यान रहता है। मुझे आश्चर्य हाना है कि अगर मंत्री शराबी और अफामकी एकाएक शराब और अफामका परित्याग कर दें ता मंत्री क्या करगे ? गायन यह उत्तर दिया जाय कि उस हालतमें कुछ-न-कुछ प्रवच तो क करण ही। किन स्वेच्छापूवक क ऐंसा क्या नही कर हालते ? अच्छाई तो निम्ननेह किमी कामकी स्वच्छापूवन करणमें ही है मजदुर हाकर करणमें नया। यह या रचना चाहिये कि भूकम्पा कारण प्रातिका सागना जामनीस अधिक् नकसान हा जाने पर भी विहार-नरकारका काम ठप नही हो गया था। और जब जवाडा तथा वाताम गणाकी तराता और यम्वातो हानके कारण सरकारा आमदनीमें क्या पहता

है तब हिन्दुस्तान भरपी सरकार क्या करती है? म तो यह मानता हूँ कि कांग्रेस सरकार आयक गातिर धराबवणीक काममें दरा करक अपनी प्रतिगावा काममें घाट भग न कर रही हा परंतु उसकी भावना जकर भग कर रही है।

तय कर लगाकर य आय प्राप्त कर सकता हूँ और इसक लिए उहें माननीयक साथ यागिग भा करनी चाहिय। धराबखारा शहरामें घनूत ज्याग है अत इन शहरामें य नय कर लगा सक्ती ह। गराव घनास उन लागारा प्रत्यक्ष मन्त मिलती है जिनक कारखान हात हूँ और उनमें मजदूर काम करत ह। एम लाग यानी कारखानाके मालिक निचय हा धराबवणीसे होनेवाला आमनीकी कमी पूरी कर सकत ह। अहमनावामें कुछ हा महान गराववदीका जो काम हुआ है उससे मात्रिक मजदूर जानिग आर्थिक लाभ हुआ है। इसलिए काई वजह नका कि इस बहुमूल्य सवार लिए मात्रिकास पसा क्या न बमूल किया जाय? इमी तरह आमनीके और भी जनक साधन आसानीस दूँ जा सकत ह।

मन तो यह सुझानमें भा कोई पसोपेग नही किया कि जहा जति रिक्त आयकी कोई जमनी सूरत न हो वहा भारत सरकारमे सहायता या कभसे कम विना याज कज देनकी माग की जाय। २

### गराबवदी और अयमत्री

बम्बईमें गराबवदी होनेस सरकारकी आय बहुत घट जायगी। एकिन अयमत्रीको तो अपना आय-व्यय सतुन्ति करना ही होगा। इसके लिए उह जायके दूसरे जरिय खोजने पडेंग और नय कर उगान पडेंग। अत जिहें यह बोझ बरदास्त करना पड उह इसका गिवा यत नहा करना चाहिय। यह सब कोई जानते ह कि कर बित्तन ही उचित क्या न हा किन्तु काइ उह पसद नही करता। पर मुख मालूम हुआ है कि अयमत्रीन इस सम्बन्धकी सभी उचित आपत्तियाका निरा करण कर दिया है। अत जिन लोगा पर यह बोझ पड व इस महान प्रयोगमें भागीदार होनेका विशेष अधिकार प्राप्त करनका सब अनभव

क्या न कर? अगर सभी नागरिकाव आनन्दके बीच शराबबंदीकी शुष्कता हो तो निश्चय ही वह निम्न बम्बईके लिए बड़े गौरवका होगा। याद रहे कि यह शराबबंदी दूसराकी लादी हुई नहीं है। इसका आरम्भ तो वे सरकार कर रहा ह, जो जनताके प्रति जिम्मेदार ह। १९२० से ही हमारे राष्ट्रीय कार्यक्रमका यह एक अंग रहा है। इस लिए २० वष पहल राष्ट्रने निश्चित रूपसे जो इच्छा प्रकट की था, उसकी ही अवसर मिलन पर यह पूर्ति हो रही है। ३

### मन्त्री और शराबबंदी

मन्त्रियोंका कतव्य स्पष्ट है। उन्हें अपने कार्यक्रम पर अबाधित रूपसे अमल करते चले जाना चाहिये वगैरें कि उनकी इसमें श्रद्धा हो। मद्य निषेध कायदेके कार्यक्रमका एक सवम वंश नतिक सुधार है। पहलेकी सरकाराने भी इसका मौखिक समर्थन किया था परन्तु गर जिम्मेदार हानेके कारण न तो उनमें ऐसा करनेका साहस था और न उनके भीतर उम पर अमल करनेकी प्रेरणा ही थी। वे उम आयकी छोड़नेके लिए तयार नहा था जिम वे विना किसी प्रयासके प्राप्त कर सकती थी। इसके बलविन खोनकी जाच करनेके लिए वे ठहर नहीं सकती थी।

काग्रसी सरकारीके पीछे गामत है। कायसमितिन बहुत साव विचारके बाद शराबबंदीके सम्बन्धमें अपना आत्म निवाला है। इस पर अमल करनेका तरीका स्वाभाविक तौर पर मन्त्रिमण्डले पर छाड दिया गया है। बम्बईके मन्त्री साहसपूर्वक पूरी सफरताकी आगासे अपन कार्यक्रमको अमलमें लानका प्रयत्न कर रहे ह। उनकी स्थिति बहुत कठिन है। किसी न किसी निम्न उन्हें बम्बईका प्रान्त हायमें लेना हा था। तब भी मन्त्रियोंको उहा निहित स्वार्थकी तरफसे जिह शराब बंदीका नीतिस मोधी हानि पहुचनका डर था हानेका विरोधका सामना करना पडता जसा कि आज हा रहा है। काई भी काग्रमजन मन्त्रियोंको परेगान नहीं कर

## मन्त्री और खादी

एसा प्रतीन होना है कि खानावा माना हम मजाक कर रहे ह। १५ जगस्तका किसीन चरखका याद नही किया। मेरा बस चले तो म मन्त्रियासे गपथ विधि करानक पहले उनसे उसी हालमें आधा घन यनाथ कताई करवाऊ और प्राथना करवाऊ। इसक बाद ही गपथ विधि पूरी होगी। १

म यह जानता ह कि खादीमें एसी जीवित श्रद्धा काग्रसजनोमें से बहुत कमको है। मन्त्रीगण कागसा ह। व आसपासकी परिस्थितिस प्ररणा लेते ह। अगर उहे खानीमें सजीव श्रद्धा हो तो वे उसे लोक प्रिय बनानके लिए बन्त कुछ कर सकते ह।

म बताऊ कि काग्रसी मन्त्री और बस सभी मन्त्री इस सम्बन्धमें क्या कर सकने ह और उन्हें क्या करना चाहिय।

एक मन्त्री एसा हो सकता है जिसका एकमात्र काम खादी और ग्रामोद्योगोकी देखभाल करना हो। जत इस कामके लिए एक अलग विभाग होना चाहिय। दूसरे विभाग उस सहयोग देंग। उदाहरणके लिए कृषि विभाग कपासकी पदावारके विकेन्द्रीकरणकी एक योजना बनायगा गावोके उद्योगके लिए कपासकी पदावारके अनुकूल भूमिकी पमाइंग करेगा और पता लगायगा कि उसके प्रांतके लिए कितनी कपासकी जरूरत होगी। वह वितरणके लिए अनकूल केन्द्रोमें कपास जमा करके भी रखगा। भंडार विभाग प्रांतमें उपलब्ध खानी खरीदेगा और अपनी जरूरतके कपडक लिए माग पेश करेगा। उद्योग विज्ञानसे सम्बन्धित विभाग अपनी बढिका उपयोग करके अधिक अच्छ चरख और हाथके उत्पादनके अन्य जोजार निकालेगा। ये सारे विभाग चरखा-सघ और

ग्रामोद्योग सभके साथ सम्पक रखेंग और उह उनका कामका निष्पान मान कर उनका उपयोग करग।

माल मत्री मिलके उत्पादनस खातीकी रक्षा करनके साधन खाज निकालेगा। २

### एक मत्रीका स्वप्न

अगर आप प्रांतीय सरकारा और लोगोका इस भाग्य का संदेगा या सूचना से सब कि तमाम स्कूलामें लड़का और लड़कियोके लिए कताई और बुनाई ज़रिमी कर देना चाहिये तो मेरा विश्वास है कि यान् ही समयमें स्कूलोके बच्चे खद अपना धनाया आ कपडा पहनने लग जायगे। यह पहला काम होगा। आपके आत्मोके विषयमें मेरा जाज भा धमी ही श्रद्धा है और म वह दिन देखनेकी आगा करता हू जब हरएक घर अपना जरूरतका कपडा गुन बना लगा और हरएक गाव भा अपना ग्रामोद्योग तथा गिनाकी योजनाआक अनुसार कवल कपडमें ही नहा बल्कि हरएक जरूरी चीजक सम्यग्घमें स्वाब मत्री बन जायगा। आपनी तरह म भा यह मानता हू कि इस दगमें मच्छा स्वराय तथा म्यापित हा सकता है जब कि प्रांतीय सरकार अथवा भारत सरकारका बजट — जिसक पासे मित्रानेके लिए चालाकिया और करामाते करनी पडता ह — ग्रामवामो जनताक बजटसे मल ग्या जायगा।'

उपयुक्त पत्र एक कागसी मत्रीने लिखा है। भर पाग यदि निरकुण मता हा तो म कमस कम प्राइमरी स्कूलामें तो यनाका अवश्य लाजिमी कर दू। जिम मत्रामें श्रद्धा हा उसे ऐसा करना चाहिये। हमारे स्कूलामें कितनी ही बच्चार चोजाओ लाजिमा बना लिया जाता है तब इस अति उपयोगी कलाको लाजिमी क्या न बना दिया जाय ? रोबिन लाइतनमें हम रिस्ती चोजरा यन्ि वह विस्तृत रूपमें लाकप्रिय न हा लाजिमी नहीं बना सकने। इस तरह लोवनत्रमें अनिवापता नामको

ही हाती है। वह आन्स्यको तो उडा दतो है पर लोगकी इच्छा पर जार-जबरदस्ती नहा करतो। इस प्रकारकी अनिवायता शिक्षणकी एक त्रिया है। म इससे एक हलना रास्ता सुझाता ह। सबसे अछ बातन बाल लके या लकीको इनाम तिला चाहिय। इस प्रतिस्पर्धासे सब नहा तो अधिकांश इसमें भाग लनक लिए प्ररित हाय। किसा भी योजनामें यदि शिक्षाको खद प्रदा न हो तो वह सफल होनका नहा। प्राताय सरकार अगर बनियाली तालीमको स्वीकार कर ल तो कताई आदि शिक्षाक्रमके केवल अग हा नही बल्कि शिक्षाके बाहन बन जायगे। बनियादी तालीम अगर जड पकड ले तो हमारा इस पीडित भूमिमें खादी अवश्य सावत्रिक जीर अपेक्षाकृत सस्ती हो सकती है। ३

### मंत्रियोंका कतध

यह प्रश्न उचित ही है कि अब जब सत्ता काग्रमी मंत्रियोंक हाथमें था गई है तो व क्वानी और अन्य देहातो उद्योगाके लिए क्या करणे। म प्रश्नको व्यापक बना कर भारतकी सारी प्राताय सरकारा पर लागू करना चाहगा। दरिद्रता सभी प्रातामें एकसी है और जन साधारणकी दष्टिस कष्ट निवारणके ल्याय भी एक्से ह। चरखा-सघ और ग्रामोद्योग-सघ दोनाका यही अनभव है। यह सुझाव दिया गया है कि इस कामके लिए एक अलग मंत्री होना चाहिय क्योंकि इसका भत्रीभाति सगर्न करनके लिए एक मंत्रीका उसमें सारा समय लग जायगा। मुख यह सुझाव देते हुए डर लगता है क्योंकि हमन अग्रजी पमान पर खच करना अभी तक नही छोटा है। मंत्री जगसे नियुक्त किया जाय या न किया जाय पर एह अलग विभाग अवश्य ही इस कामके लिए जरूरा है। भाजन और बम्बकी कमीक इस बातमें यह विभाग बडासे बडी सहायता कर सकता है। चरखा-सघ जीर ग्रामोद्योग-सघके मारफा मंत्रियाको विगपन ता उपलब्ध हो ही जायेंग। इस समय कमम कम पूजी और समय लगा कर भारतकी खानीका



कपड़ा पहना देना संभव है। प्रत्येक प्रांतीय सरकारको अपने ग्राम-वासियों यह कहना होगा कि उन्हें अपने उपयोगके लिए अपनी खाद्यान्न तैयार करनी है। इसमें स्थानीय उत्पत्ति और वितरणका बात अपने आप आ जाती है। और कमसे कम कुछ माल निःसंदेह गहराके लिए बच रहेगा जिससे स्थानीय मिट्टी पर भी दबाव घट जायगा। फिर तो हमारी मिट्टी समारके दूसरे भागोंमें कपासकी कमी पूरी करनेमें भाग ले सकती।

यह परिणाम कैसे लाया जा सकता है ?

सरकारका ग्रामवासियोंको सूचना देनी चाहिये कि उनसे एक निश्चित तारीखके भीतर अपने गावाकी जरूरतका खदर तैयार कर लेनेकी आशा रखी जायगी। उस तारीखके बाद उन्हें कपड़ा मढ़ेया नहीं किया जायगा। सरकार अपनी तरफसे ग्रामवासियोंका जहा जरूरत होगा तबत कीमत पर कपास या कपासका बीज देगी और माल तैयार करनेके औजार भी तबत कीमत पर देगी जो पांच या अधिक वर्षोंमें आमान निम्तमें बसूल की जा सकता है। जहा आवश्यकता होगी सरकार उन्हें शिक्षक देगी और खादीका बचा हुआ माल खराद देनेका बचन देगी। तब यह होगी कि सबधित ग्रामवासियों अपनी कपड़ेका जरूरत अपने ही तैयार किया हुए मालम पूरा करे। इससे कपासकी कमी गौरगल मपाये बिना और बहुत थोड़े खर्चसे-खर्चमें दूर हो जायगा।

गावाकी जात्र पड़ताल की जायगी और ऐसी चीजोंका एक सूचा तैयार की जायगी जो किसी मन्त्रक दिन या बहुत थोड़ी मन्त्रस गावाम तैयार हो सकती है और जिनकी जरूरत गावामें बरतनक लिए या बाहर बचनक लिए हो। उस घासीका तल घासीकी खाना घासीके निरन्तर हुआ जानेका तल हाथका कुटा हुआ चावल तासका गुठ गहल मिलीन मिनादया चटादया हायस बना हुआ कागज गावका सात्रन जाति। और इस तरह काफा ध्यान किया जाय तो

उन गावामें—जिनमें से ज्यादातर उजड़ चके हं या उजड़ रहे हं—जीवनकी चहल पहल पदा हा जाय और उनमें अपना जीर हिन्दुस्तानके गहरो और कस्बाकी बहुत ज्याग जहरताको पूरा करनकी जो ज्यागसे ज्यादा गक्ति है वह दिखाई पडन लग ।

फिर हिन्दुस्तानमें अनगिनत पंगु घा है जिसकी तरफ हमन ध्यान न देकर बडा अपराध किया है । गोसेवा-सभका अभी तक ठाक अनुभव नहीं है फिर भी वह इस कायमें कीमती मल्ल द सकता है ।

वनियाकी गिणाके बिना गाववाले विद्यास खाली ही रहे हं । यह जरूरी बात हिन्दुस्तानी तालामी सभ पूरी कर सकता है । यह प्रयोग पहल हा काग्रसी सरकारान आरभ किया था पर काग्रसी मत्रि मल्लके इस्तीफा देनसे इस काममें गडबडी हो गई थी । अब वह तार फिर आसानीसे जोडा जा सकता है । ४

### अगर म मत्री होता

ता २९ से ३१ जलाई (१९४६) तक पूनामें ग्रामोद्योगा जीर नई तात्रीमसे सम्बन्ध रखनेवाले मत्रियाके साथ हुई बातचीतने कारण बहुनसा पत्र-यवहार और निजी वाद विवाद चल पडा है । यह बहुत कुठ तो एक खादीको लेकर खडा हुआ है । इसलिए म इस सम्बन्धमें अपन विचार प्रातीय सरकारा जीर ग्वादाके प्रान्तमें त्रिलक्षस्पी लनवाये दूसरे गोगाके मागलानके लिए गीचे देता हू ।

२८ अप्रल १९४६ के हरिजन में मन मत्रियाका कतय नामक एक लेख लिखा था । उसमें मन जो विचार प्रगट किया थ उनमें कोई परिवर्तन नहा हुआ है । एक बातसे कुछ गलतफहमा पदा हई है । कुछ भाइयाको उसमें जबरदस्ती दिखाई दी है । मझ इस अस्पष्टताके लिए खद है । उसमें मन इस प्रान्तका उत्तर दिया था कि आम लोगोकी प्रतिनिधि सरकार यदि चाहें तो क्या क्या कर सकती हं । मने मान लिया था—आगा है मेरी वह मायता क्षम्य थी—कि इन सरकारोकी गोटिसाको भी काई जार जबरदस्ती नहा

मानना। कारण किमी सच्ची प्रतिनिधि सरकारक प्रत्येक कायमें जिन निर्वाचकोकी वह प्रतिनिधि है उनका अनुमति मान ली जायगी। निर्वाचकाका अथ हागा मारी जनता चाह उसका नाम निर्वाचक सूचीमें हो या न हो। इस पठभूमिको खयालमें रखकर मने लिखा था कि सरकार ग्रामवासियाका ऐसा सूचना द दे कि एक निर्दिष्ट तारीखके बाद ग्रामवासियाका मिलका कपडा नहा दिया जायगा ताकि वे अपनी ही तयार की हुई खादी पहन सकें।

मरे पिछल ऐसका (२८-४-४६) कुछ भा अथ ही म इतना कह देना चाहता हू कि सप्रधित लोगके स्वेच्छापूण सहयागके बिना खादी मवधी कोई भी अपनाई हुए योजना यथ सिद्ध हागी और वह उस खानीको मार डालगी जिस हम स्वराज्य प्राप्त करवा साधन माना चाहते ह। फिर तो खानीके धारमें गोगाका यह तागा मही हागा कि खानी हमें मध्यकागीन मलामी और अनानकी आर ले जाता है। परन्तु मेरा विचार इसके विपरीत रहा है। जहा जबरन पदा की जानेवाली या पहनी जानेवाली खादी हमारी गुलामीरी निगानी थी वहा साच समझकर और स्वेच्छासे तयार की जानेवाली खादी जो मुख्यत अपने ही उपयोगक लिए हो हमारी आजादीकी निगानी है। स्वतंत्रता अगर तर्बागीण स्वावम्बनका विकास न करे तो उसका कोई अथ नहा है। अगर खानी स्वतंत्र मनप्यक अपने अधिकार और बनयकी निगानी न हो तो कमस कम मुय उसमें कोई शिचस्पी न रहगा।

मित्रभावसे टीका करनवाये एक भाइ पूछने ह कि इस याजनाक अनुसार तयार की गई खानी क्या बचा भा गा सकता है? मरा उत्तर यह है कि यदि किसी उसका गीण उद्देश्य हा तो एसा किया जा सकता है। लेकिन अगर बिना ही उसका एकमात्र या मुख्य लक्ष्य हो तो वह हरगिज नहा बचा जा सकती। हमन विक्राक लिए खादी उत्पन्न करके अपना काम शुरू किया उसका कारण यह था कि उयक शारेमें तब हम दूर तक सोच नहीं पाय थ और यह भी था कि उस समय

हमें उसकी जरूरत थी। अनुभव एक महान शिक्षक है। उसने हमें अनक वार्ते सिखाई ह। उनमें से एक बड़ा बात यह है कि खाणिका मुख्य उपयोग स्वयं अपने लिए उसका व्यवहार करना है। परन्तु यह भी उसका अन्तिम उपयोग नहीं है। घर मझ बल्पनाके मनोहर क्षत्रवा छाडकर गीयकमें पूछ गय प्रश्नका निश्चित उत्तर देना चाहिये।

मपूर्ण गासन-कायके के-के रूपमें गावाके पुररुद्धारकी जिम्मणारा सभाजनवा- मत्राकी हैसियतमे मेरा पहला काम यह हागा कि स्थायी राज्य कमचारियामें से इस कामके लिए म-मानार जोर निष्ठावान आदमी ढूढ निकालू। म उनमें से उत्तम त्रोगाका चरखा मघ और ग्रामाद्योग मघसे जा काप्रेमक बनाय हुए ह सपक कराकर गावाक हाय उद्योगाका अधिकसे अधिक प्रात्माहन दनक लिए एक याजना प्रस्तुत करूंगा। म यह मत रखूंगा कि ग्रामवासियो पर कोई जबरदस्ती नहा का जायगा। उह दूसराकी बगार करनक लिए मजबूर नहा किया जायगा। जोर उह अपना मद आप करना तथा भोजन वस्त्र और अन्य आवश्यक वस्तुआके उत्पादनके लिए अपना ही मेहनत और कुशलता पर भरासा करना सिखाया जायगा। इस प्रकारकी योजनाको यापक बनाना हागा। इसलिए म अपन पहला आदमीको यह आदण दूगा कि वह हिन्दुस्तानी तालीमी सघका काम देख उसक अधिकारियोसे मिले जोर समझ कि इस विषयमें उनका क्या कहना है।

म मान लेता ह कि इस प्रकार तमार की हुई याजनामें एक धारा यह हागी ग्रामवासा स्वयं यह घापणा कर कि उह एक निश्चित तारीखस एक बपके बान मित्रक कपका जरूरत नहीं हागी और यह कि अपना कपडा तयार करनके लिए उह रुड ऊन और आवश्यक जीजार तथा शिक्षानी जरूरत है। य चीजें वे दानक रूपमें नहीं ँग बलिव जासान निस्तामें उनका कामत चुकानकी गत पर ँग। इस याजनामें यह बात भी हागा कि वह किसी पूरे प्रान्त पर एवम् गगू नहा हागी परन्तु गुरुमें उसके एक हिस्म पर हा गगू हागी। योजनामें

यह भा कहा जायगा कि चरखा-सभ इस योजनाका अमलमें लानके लिए पथ प्रशस्त करेगा और आवश्यक सहायता देगा।

इस याजनाका लाभप्रद हानका विश्वास हा जान पर म बानून विभागकी मलाहसे उसे बानूना रूप दूगा और एक विनक्ति निवाग्गा जिसमें योजनाका बुनियाती बानाका पूरा बणन हागा। ग्रामवासी मिल मात्रिक और अय ाग इसमें गरीब रहेंग। विनक्तिमें साफ बताया जायगा कि यह जनताका काम है भल ही उस पर सरकारकी मुद्र लगी हो। सरकारी पसा गरीबस गरीब ग्रामवासियाके बल्याणके लिए रच किया जायगा ताकि मयमिन लागाका उमका अधिकसे अधिक लाभ पहुंचे। इसलिए वह गायन पूजाका सबम लाभप्रद नियोजन हागा जिसमें विशेषज्ञकी सहायता स्वेच्छापूण होगी और यत्रस्या-सच कमस कम हागा। विनक्तिमें देग पर पन्नका सारे रच और उोगाका मिन्न वाये लाभका पूरा योरा दिया जायगा।

मत्रीके नाने मेरे लिए एकमात्र प्रश्न यह है कि चरखा-सभमें वह दृढ विश्वास और क्षमता है या नहा निमम सभ छातीकी एक याजना तयार करके उमे सफरता तब पढ़चा गौका भार उठा सक। अगर उसमें यह न विश्वास और क्षमता है ता म पूरे विश्वासके साथ अपनी छाटा नयाका समुहमें उतार दूगा। ५

### सरकारी मालिकी बनाम सरकारी कट्टेज

८ ९ और १० जनतूबर (१९४६) का हरिजन बानूनी निभावे नई सिन्धामें अ० भा० चरखा-सभकी वार्षिक रठक हुई। उसमें बराब ८० मन्स्य हाजिर थ। चचाआरं फरवरीए एक बात यह सामन आई कि आज ता जिन बाताकी चर्चा केवल मद्दानिज दृष्टिमें का जाता था व अय गमारी गरमराक आनम ब्यावहारिक रूप ल रही ह। यताका एक विषय यह था कि मिन्का कपडा गातीक गाय स्पधा न करे। इसमिन्न कुछ चन नए स्थाना पर मिन्का कपडा न जाने लिया जाय और वहा कपडका नई मिर्के गनी न की जाय क्याकि

मिलकी स्पर्धामें खानी जित्ना नहीं रह सकती। गांधीजीन गुनाग नि जहा लोग बस्त्र-स्वावलम्बनका प्रयोग करनेका तयार हा वहा सरकार मिलका कपडा न जान दे। इया तरह अगर प्राताय सरकार नई मिलें खडी करनेमें करोडा रुपय खच करेगा तो ग्रामवासी खादीक बारमें उनकी वान नहीं सुनेंग। वे समझ जायग कि जसका चीज तो मिल ना है। इसलिए यदि सरकारे सचमच ही खानीको बनाना चाहती ह ता उह अपन प्रान्तमें नई मित्रें न खडी करनेका फसला करना ही हागा।

एक सन्स्यन यह भी सुझाव रखा कि कपडकी नई मित्र पर सरकारका अधिकार हो और म्यासभव जल्दीसे जल्दी सरकार पुरानी मित्रे पर भी अधिकार कर के ताकि उनका मुनाफा पूजीपतियाका जवमें जानके बजाय देगकी जवमें जाय और मिलाकी नीति पर भा जनताका नियंत्रण रहे। इस पर गांधीजीन समझाया कि जब एक आर हम सरकारसे यह कहने ह कि खादीका प्रचार करना हो तो कपडेकी नई मित्रें खडी ही न करनी चाहिय तब दूसरी आर उससे नई और पुरानी मित्राका राष्ट्रीयकरण करनेकी बात कहना ठीक नहा। मद्रासके प्रधानमन्त्रा श्री टी० प्रकाशमन यह घोषणा भी कर दी है कि उनके प्रांतमें कपडका कोई नई मिलें खडी नहीं वा जायगी। अब रही बात पुरानी मित्रा पर सरकारी अधिकारकी। ता मुझ तो मिले पर अधिकार करनेक बजाय सरकारकी कडी देखरेखमें मिलाका चलना ही अधिक जठा लगता है। जाज मित्रे पर अधिकार करनेके लिए सरकाराके पास पर्याप्त साधन नहीं ह। हम तो सब काम गतिसे करना चाहत ह। अगर हम मिल मालिकाको अपन ट्रस्टी बना लें तो वे और उनके कमचारा अपन आप समाजके नियंत्रणमें जा जायग। मिल मालिक मिल चलायेंग लेकिन मुनाफका उतना ही हिस्सा उनकी जवमें जायगा जो उनकी मेहनतके बन्धेमें लोग उन्हें देना उचित समझेंग। सच्चे मालिक मित्रामें मजदूर बनेंगे। मन सुना है कि श्री टाटाकी एक मिलमें मजदूरको मुनाफेमें साझा मिला है। श्री ज० आर० डी० टाटाने मुनाफा घाटनके

मीक पर जा भाषण दिया वह पाने लायक है। इससे अधिक मिलपर और क्या अधिकार किया जा सकता है? इसस आगे जानेकी बात मर निमागमें नहा आता। अनेक मिल मालिकाने मुझसे कहा है कि अगर हम एसी याचना बनायें तो व हमार साथ सह्याग करेंय तथा अपना मिलाके अधिक विम्वारको रोक देंगे। मिला पर सरकार चरखा मघ और मि मालिकोका समुका नियग्रण हानकी गत मेर ग नहा चरती। हमारा काम चरखा चलाना है मिल चलाना नहा। जा चीज हमारे काय तकका नहा है उमका चचामें हम इतना समय क्या दें? अगर आज मारी मिमें जल् कर राग ह्या जाय तो मघे जरा भा दु ख नही होगा। उमके बा ता पादीका बनना ही है। लेकिन अगर मिमें रडेगा ता खानका मरना हा हागा। गरीबाका अन्नपूर्णाक गान याणी प्रन्न खानी तव भी चर सकती है। पर उमके लिए चरखा-सघ जमा बडा सस्वाना जरुरत नहा रन्गी। मरे लिए ता इतना ही काफी है कि प्रानाकी सरकार मिलाके बाटमें अपनी नीति निदिचत करन समय हमारी मलाह ल लिया कर। ६

### हायकता बनाम मिलका बपडा

पद्मराजो चम्बर जाफ कामम जमी पूजीपतिपाका गम पदुचान बाग र्ना सरयायें और वहाके कुछ काप्रेमी भा प्रातक प्रधानमत्रीक विगफ ह्या गय ह। मद्रामके अदवाराजी कई बतरलें मरे पास भजी गन्। मुग यह कहने दु ग जाना है कि यह टीका मुव स्वाय और अचानम भरी मालूम हाती है।

इस सगडेमें मेरा नाम भी घसाटा गया है। चकि भ प्रवागमजा का याजनाका समयक हू इसलिये इस मी-ना प्रन्नका निष्यस चर्चा पर-बा असर नहा पहना चाहिय।

बाल-ना प्रन्न बेकर यह है अगर मनास सरकार नइ मिलाके मुन्नमें बडावा दे, या पुराना मिगानो अपना मगानें बडागर दुगुना माल देन करनेमें मन्ने तो क्या खानी सामाय जनतामें फ

सकेगी? क्या गाववालोंको इतना भोला समय लिया गया है कि एक खास लम्बाईका कपडा बुननेके लिए जितनी कीमतका कपासका जट्टरत होती है उससे भी कम कीमत पर उह मिलका कपडा बेचा जाय तो वे इतनीसी बात भी नहीं समझेंगे कि यह खादीके साथ बेवकूत खिलवाड किया जा रहा है? जब जापानन अपना कपडा भारतमें बना था तब एसा ही हुआ था।

इसमें कोई शक नहीं कि मद्रासवाला याजना वसी गरजस बनाइ गई है कि किसान जपन खात्री समयमें बताइ करके अपन पहनन लायक कपडा खुद तयार कर लिया कर। लोग अपन खाली समयका उपयोगी राष्ट्रीय और प्रामाणिक धर्ममें खच कर इसके लिए उन्हें समनाना क्या निरा शकचित्लीपन है?

जब बकाराके लिए कोई उपयोगी और ज्यादा लाभप्रद कामकी अमंगी योजना सामन आयगी उस समय मद्रास सरकारके खिलाफ आवाज उठाना उचित हागा। जो लोग सचाईके साथ देगकी सवा कर रहे ह उन्हें आदशवादी स्वप्नदर्शी पागल या धुनी कहकर उनका बात पर ध्यान देनसे इनकार करना मनोरजनका कोई अच्छा साधन नहीं है।

पूजीपतियाको और समाजमें जपनी जगह बनाकर बठ हए त्रागो को चाहिय कि वे गरीब ग्रामवासियाक खिलाफ खड न हो और उन्हें इज्जतके साथ मेहनत करके अपनी दुदगाको सुधारनसे न राकें।

मद्रासवाली योजनामें नई मित्राके बारमें जा एक भारी दाप रट गया था उसे मन पकड लिया है। जब टक्सटाइल कमिन्तरका दोना चार्जे (चरखा और मिल) एक माथ चलानकी गलती समझमें आ गई और चरखा-सधकी तयार की हुई योजनाका व्यावहारिकता उहान समय आ तो उन्होन मद्रास सरकारस उसकी सिफारिश की। अगर यह याजना व्यावहारिक या उपयोगी सिद्ध न हुई तो उसस टक्सटाइल कमिन्तरकी नकनामीको धक्का लगाया — टीका करनवालाको नहीं।



यह एक लोकतांत्रिक सरकार द्वारा आम जनताका भलाईके लिए उठाया गया कदम है।

इसलिए जहां यह योजना अमलमें लाई जाय वैसे वम वगैरक लोगको तो इस जरूर अपनाना चाहिये।

यह एक आदमीकी याजना नहा परन्तु पूरी सरकारकी याजना होनी चाहिये।

उसके पीछ धारासभाका पूरा समर्थन हाना चाहिये।

उसमें जबरदस्तीकी बू भी नहीं आनी चाहिये।

वह वास्तवमें अमलमें आन लायक आर आम जनताके लिए लाभकारी होनी चाहिये।

याजनाकी सफलताकी ये सब बातें लिखित रूपमें रखी गइ ह। म समझता हू कि विरोधज्ञास और आपसमें पूरी चर्चा करनेके बाद ही मद्रास सरकारने इन सबको ज्योका त्या मान लिया है।

याद रहे कि मन्त्रसकी वतमान मित्रोंको अभी छुआ नहीं जायगा। अगर एक दिन यह योजना जगलकी आगकी तरह फली — और मुझे आगा है कि एसी चीज एक दिन जरूर सब जगह फल जायगी — तो इसमें कोई शक नहा कि समर्थ मिल-उद्योग पर उसका असर हागा। अगर एगा दिन कभी आय तो बडसे बडे पूजीपतिका भी उसक न आनेकी इच्छा नहीं करनी चाहिये।

तब साचने योग्य प्रश्न केवल यही रह जाता है कि मन्त्रस सरकार ईमानदार और योग्य है या नहा। अगर वह एसी नहा है, तो सारी याजना गडबडमें पड जायगी। और अगर सरकार इमानदार और योग्य होगी तो इस सबके आगावाँट मित्रों और यह याजना जरूर सफल होगी। ७

## कांग्रेस सरकारें और ग्राम सुधार

अबकी कांग्रेसके मंत्रियान प्रान्ताक ग्रासनकी बागानर जा अपन हायमें ली है वह कोई बधानिक प्रयाग नहा है। वह राष्ट्रको सडा करनका एक कागिग है। उनका काम ता यह है कि जनताके लिए जिस आजानाकी कल्पना कांग्रेसन का है उसका क अमग्न रूप दें। ३१ जुलाई (१९४६) को जब अलग अलग प्रान्ताके उद्याग विभागक मंत्री पूनाक कौंसिल हाठमें मिठ ता उनके सामन य प्रश्न य आर्थिक नातिका अत क्या हाना चाहिय ? जो समाज रचना हम करना चाहते ह उसका स्वरूप क्या होना चाहिय ? और आज कठक आर्थिक और प्रगासनिक सगठनमें एसा क्या क्या बातें ह जा ग्राम-सुधारके भागमें रुकावट डान्ना ह ?

गाधीजी ३ मिनिट बाडे। उहान ग्रामोद्योगाक बारेमें अपनी दृष्टि समझार्। उहान कहा नइ तालाम और ग्रामोद्योगाके कार्यक्रम — जिसमें खादी भी शामिल है — के पीछ ओ कल्पना है उसकी जन् एक ही है। जयान् वड गहरोके मुकावठमें गावाकी और यत्रके मुकावठमें यकिनकी प्रतिष्ठा और दरजकी धिता। इस बातन एस चिन्ताको जीर भी बना दिया है कि हिन्दुस्तान थोडस बन गहरामें नहा बसता परन्तु अपन सात लाख गावामें बसता है। समस्या गावा जीर गहरोके सम्बन्धामें फिरसे याव स्थापित करनकी है। आजकल गावाके मकाबले गहराका पलडा बन्त भारी है जो गावोको नुकसान पहचानवाला है।

### यत्रोंका यग

गाधीजीन कहा हमारे युगको यत्रयुग कहा गया है क्याकि हमार आर्थिक जीवन पर यत्रका ग्रासन चलता है। कोई पूछ सकता

है— यत्र क्या है? एक अथर्वे मनुष्य एक उत्तम यत्र है। न उमकी का मिसाल हा सक्ता है न नकल हो सक्ती है। ऐकिन गाधीजीन यत्र गन्वा उपयाग उसके चापक अथर्वे नही किया। उाका मतलय ता बकल एम माधनमे था जो मनुष्य और पानी गकिनकी कमियाका पूरा करन या केवल उस अधिक उपयोगी बनानक वजाय उसकी जगह हा गन्वा है। यह यत्रकी पहली विगपता है। यत्रकी दूसरी विगपता यह ह कि इसकी गकितकी वृद्धि या विकासना कोई ह् ही नही है। आत्माकी मेहनतके वारेमें यह नहा बहा जा सक्ता। उसका कुछ मयाग हाता है जिसके आग उमका गकिन या यात्रिक कायक्षमता नहा जा सक्ता। इसमें से यत्रकी तीसरी विगपता पदा हुई है। एसा माकूम हाता है माना यत्रका जपना काई निश्चय बल या जपनी आत्मा हो। यत्र मानवक थमका गन्वु है। वह ज्यागाम ज्याग जाद मियाकी जगह ल लेता है कथाकि एक यत्र अगर हजार नही ता सौ आत्मियाना काम ना करता ही है। नतीजा यह हाता है कि बवारा और अद बेकाराका पीज बन्ता हा जाता है। दसलिए नही कि यह गच्छनाय है बलिक इसणि कि यह यत्रका नियम है। अमरिकामें तो गान यह पीज चरम सीमा तक पहुच गई है। गाधीजीने बहा रि म आजम नहा परन्तु १९०८ क भी पहलम यत्रक तिलाफ रहा ह। तज म दक्षिण अफ्रीकामें था और मरे चारा तरफ यत्र हा यत्र थ। ऐकिन यत्राकी प्रगतिने मुज पर कोई असर नही डाग बलिक यत्राक प्रति मरे मनमें घणा ही पदा बा। तब मने यह जाना कि यत्र वरोणाका दमान और ग्टनना एक उत्तम साधना है। अगर समाजके घटवारु नाते सब मनुष्याना समान हाता है ता मानवकी जय रचनामें यत्रका काई स्थान नहा हो सक्ता। म कहता हू रि यत्रन मनपरका जग भी ऊवा नहा उठाया है। और अगर यत्रका उत्तक उकिन स्थान पर नहा बठाया गया ता वह लाम पहुचानक वजाय मनुष्यना विभुल तमाह कर देगा। उमक वाड डरवन गान ह्ण रन्में

मने रस्किनकी जट्टु टिस लास्ट (सर्वोत्तम) नामक पुस्तक पढ़ी। और उसन तत्वात् मुझे अपन कामें कर लिया। मन स्पष्ट समझ लिया कि अगर मानव जातिको प्रगति करनी है और अगर उसका यह आदर्श हो कि सब मानव समान हा सत्र मानव भाई भाईका तरह रहें तो उसे गूगा और छूट-लगडाका भी अपन साथ कर चलना हागा। क्या मुधिष्ठिरन जो सत्यके देवता थ अपन बफादार वृत्तको छोडकर स्वग जानसे इनकार नहीं कर लिया था ?

### मत्रि-मडल और ग्रामोद्योग-सघ

यत्रयगमें इन गड-लडाके लिए कोई स्थान नहा है। इसमें तो सबसे बलवान ही टिकता है और वह भी निबडाका छोडकर और उनको गदन पर सवार होकर। गांधीजीने कहा 'आजादीकी मेरी यह कल्पना नहीं है। उसमें तो निबलसे निबलके लिए भा जगह है। इसके लिए यह जरूरी है कि जितन मनष्य ह उनकी महनतका हम पहले पूरा पूरा उपयोग कर ल और फिर जरूरत हो ता पत्र गवितका उपयोग करे।

इसी पष्ठभूमिको सामन रखकर मन ताजीमी सघ और अ० भा० ग्रामोद्योग-सघकी नीव डाली थी। इनका उद्देश्य है काग्रसका मजदूत बनाना जो वास्तवमें आम जनताकी सस्था है। काग्रसने इन स्वायत्त सस्थाओकी रचना की है। काग्रसी मत्रि मडल हमेगा और बिना किसी सवाचके इन सस्थाआकी सेवा माग सकते ह। उनका अस्तित्व ग्रामवासियाके लिए है और उन्हीकी सवाके लिए व परिश्रम करती ह। ग्रामवासा ही काग्रसके मस्य आधार ह। काग्रसा मत्रि मडल पर किसी तरहका दबाव नहीं है। अगर वे इन सस्थाओके सिद्धान्तामें विश्वास नहीं रखने तो उन्हें काग्रस काय समितिके द्वारा एसा स्पष्ट कह देना चाहिय। अगर किसी काममें दिल न लग तो उसक साथ खिलवाव करना सबसे बरी बात होगी। इस कायको उहे सभी हायमें देना चाहिय जब वे मरे साथ यह मानने हा कि इसीमें देनाका जायिक

और राजनीतिक भलाई समझी हुई है। उन्हें खुदको या दूसराका घोखा नहा देना चाहिये।

### धरती माता

धरती ग्रामोद्योगका आधार और उनका बुनियाद है। कई साल हुए मन एक कविता पढ़ा था जिसमें किसानको दुनियाका पिता कहा गया है। अगर खर जाता है तो किसान उसका हाथ है। हम पर उसका जो ऋण है उसे चुमानेके लिए हम क्या करनवाए ह? अभी तक तो हम उसकी गलत पमानकी बमाइ हा खाते रह ह। हमें खेतास अपना काम गुन करना चाहिये या केबिन हम ऐसा कर न सके। इस दापमें अगत मरा भा हाथ है।

गांधीजीन क्या कि कई लोग यह कहते ह कि जब तक राज नीतिक सत्ता हमार हाथमें न आ जाय तब तक धरतीमें कोई बुनियाद सुधार नया ही सकता। इन लोगका स्वप्न यह है कि भाप और बिजलीका चापक पमाने पर उपयोग करके यंत्रका शक्तिसे धरती का जाय। मेरी इन लोगका यह चतावना है कि अगर के जल जल उत्पादन लनके प्रलोभनमें पड कर जमानके उपजाऊपनका सौदा करेंगे तो यह बिनाशक और जलदृष्टिकी नीति होगा। इसका परिणाम यह हागा कि जमानका उपजाऊपन कम हाता जायगा। जल जमानमे अन्न पदा करनके लिए पमीना बढ़ाना पडता है।

गाम गापद इन लच्छी टीका कर और यह फें कि इसस काम धामा हागा और प्रगतिर माग पर न जानवाता नहा हागा और न इसमे जल्दी कोई बहुत बडा नतीजा निरानका आना खी जा गवना है। फिर भी म कहता ह कि जमान और उस पर रहनवाये मनुष्याका गवाहीकी कुजा इसी दष्टिमें है। स्वास्थ्य और शक्ति दनवाला भाजन ग्राम्य अथ-व्यवस्थाका ब-र-न है। किसानका आयका ज्यादा नाग उसके और उसक परिवारक भाजन पर हा सच होता है। बाकी सब धाने उसके बा आता ह। खता करनवायेना अच्छा भाजन मिलना

चाहिये। उसे ताज जीर गद घी दूध जीर तल काफी मात्रामें मिला चाहिये। जीर अगर वह मास खाता है तो उस मछली थड जीर मास भा मिलन चाहिये। अगर उस पटभर जेछा पापक भाजन न मिले तो उसके पास अच्छे कपड हानका क्या अथ है? इसक बाद पीनका पाना महेया करनेका प्रश्न और दूसर प्रश्न आयेंगे। इन प्रश्नाका विचार करते हुए स्वभावन एस प्रश्न भा निकल जायेंगे कि ट्रक्टरम जमीनमें हल चरान और यत्रस जमीनका पाना दनका तुलनामें कृषिक अयगास्त्रमें बरका क्या स्थान है। इस तरह एक एक करके ग्राम्य यवस्थाकी पूरी तसवीर हमारे सामन उभर आयगा। इस तसवीरमें गहराका भी उचित स्थान हागा और व जाजका तरह राज्यमस्था पर उठ हुए फोडाकी तरह या जस्वाभाविक घन घवाकी तरह नहीं लिखाइ देंगे। अतमें गांधीजीन कहा आज इस बातका रततरा पदा हो गया है कि कही हम हायाका उपयोग करना हा न भूल जाय। मिट्टी खोदना और जमानकी देखभाल करना भूलनका अथ होगा स्वयको भूल जाना। अगर आप यह समझें कि केवल गहराकी सवा करके आपन मत्रापदका कतय पूरा कर दिया तो आप एस बातको भूल जाते ह कि हिन्दुस्तान असत्रमें अपन सात लाख गावामें बसा हुआ है। अगर किसी आदमीन मारा उनिया पा ली जकिन इस सौदेमें अपना आत्मा खो दी तो उसे क्या गम हुआ?

इसके बाद गांधीजीस प्रश्न पूछ गय।

### उपाय

प्र० — आपन गहरोको राज्यमस्थाके फोड कहा है। इन फोडाका क्या किया जाय?

उ० — अगर आप किसी डाक्टरस पूछेंगे तो वह आपको यह इलाज बतायगा कि फोडको चीरकर या पल्स्टर और पुत्रिस बाधकर गटा करना हागा। एडवड कारपेटरने सम्यताका एसा रोग कहा है जिमका इलाज किया जाना चाहिये। बड बड गहराकी बढ़ती इस

रोगका ही चिह्न है। कुदरती उपचारमें विश्वास रखनवाला हानक कारण मना इमी बातक पक्षमें है कि सभूषण व्यसम्याकी सामान्य शुद्धि की जाय और कुदरती मागम इस रोगका भी श्लाज किया जाय। अगर गहरवालाके हृदय गावाम रम गय और वे वास्तवमें ग्राम्य मानसवाचे बन गय ता वाया सय वालें अपने जाय हो जायगी और फोडा नदी ही भरकर जच्छा हा जायगा।

प्र० — आजकी परिस्थितियामें ग्रामायोगाको विदेशी और दगी कारखानाक मात्रे आश्रमणस वचानके लिए क्या क्या यादहारिक वचन उगाये जा सकने ह ?

उ० — म सिफ माटी मागी बातें यता सकता ह। अगर आपको अपने हृदयमें एसा लगा हा कि आपन ग्रासनका बागडोर इसलिये हाथमें ली है कि आप आम जनताक हितका प्रतिनिधित्व और रक्षा कर तो आप जा कुछ भी करेंगे — चाहे कानून बनायें जायेन निवालें हिनयतें न — उसमें गाववाग्वा चिन्ता ही नजर आयगा। उनके शिकायी रक्षा करनक लिए आपका वाइसराल्वा स्वीकृतिकी जरूरत नहा है। मान गीजिये कि आप कतवया और बुनबराको मिलोकी स्पर्धास प्रचाना चाहत है और आप लोगाकी बपडकी तगीकी समस्या हल करना चाहते ह ता आप गग पीतागहीकी अगम हगाकर मिल माशिनको बुलायेंग और समझायेंग कि अगर क यह गहा चाहत कि आप ग्रासनकी बागडोर छाड दें ता उह उत्पादनकी अपना नीतिका मेरु जालाना जरूरलाके माय बठाना हागा। आप जनताके रक्षक और प्रतिनिधि ह। आप मित्र मालिबाने कहेंगे कि वे एस क्षत्रामें मित्रवा बपडा न भजें जहा हाथम बपडा तयार किया जाता है या उनस कहेंगे कि वे उन सास अकारे बीचका मूत और बपडा न बनायें जा हाथनरयेके बुनबराक क्षत्रमें आता है। अगर आप यह बात उनस सच मनगे कहें तो उन पर आपसे बहनका प्रभाव पडगा और वे आपक साथ सहयोग करण — जस उहान कुछ समय पहले किया था जब

भारत की अकालत बचाने के लिए उन्होंने अतिरिक्त चावल के भंडार में इकट्ठानियाएँ भजने के लिए कपडा किया था। परन्तु पहुँच आपका यह विश्वास पक्का होना चाहिये फिर ता सभा बातें ठीक ही जायगी। १

३१

## कांग्रेसी मन्त्रि मंडल और नई तालीम

सन १९४० में जब सात प्रांताओं का प्रस्ताव मन्त्रि-मण्डल हस्तोत्तरा दिया तो वही १९२५ के भारतीय गणतन्त्र विधान की ९२ वी धारा का गवर्नरी राज्य कायम हुआ। उन राज्य में कांग्रेसी मन्त्रि-मण्डल द्वारा गरीबों की गई गई तात्कालिक योजनाओं और शराबबंदी ग्राम-सुधार तथा देहात के वनियादी उद्योगों के फिसे जिलान के कायन्मको सबसे बड़ा धक्का पड़ा। कांग्रेसी मन्त्रि मण्डल जब फिसे गणतन्त्र की बागडोर अपने हाथ में लेता कुत्तरता तोर पर सबसे पहल उद्दान अपन प्रयोग की बची-बची निगानियाको बरबातीसे बचाने के लिए १९४० में छाड हुए कामाका फिसे हाथम लेनकी तरफ ध्यान दिया।

श्री वालामाहव सरका योता पाकर कांग्रेसी प्रातासे जाय हुए निम्ना विभागके मन्त्रियाकी एक काफरेस थी सरकी अत्यन्ततामें पूनाके कौंसिल हालमें २९ जीर ३ जुलाइ १९४६ का हुई। योता ता सभा प्राताके मन्त्रियाको दिया गया था लेकिन उनमें स दो प्रातके मन्त्री काफरेसमें गरीब न हो सके। २९ जलाईको तीसरे पत्र गांधीजी एक पत्र भी ज्दान काफरेसमें बठ थ। सरकारा जीर उनस जटी हुई सस्थाओंमें नई तात्कालिक प्रयागको जरूर धक्का लगा था। लेकिन तात्काली सभमें जो गांधीजाका दूरदृष्टीस हर मुसीबतका सामना करने के लिए पूरी तरह तयार था वह प्रयाग उसी तरह चन्ता रहा। पहल मात माल पूरे हो जानस न तात्कालिक उमर पुरुता ही चकी है।





सकने अ-उ हाथ उद्योग ह। लेकिन किस तरह कौनसे हाथ उद्योगक जरिये तांगीम दी जाय य-यात भं वाम करनेवाला पर हा छुड़ दूगा। क्याकि मरा यह पूरा विश्वास है कि जिसक भातर जन्मी गूबिया हागा वही हाथ-उद्योग आदिरमें जिंदा रहगा। इम्पक्टरा और गिन्ना विभागने दूसरे अधिकारियाका यह वनव्य है कि य-यागो और स्त्रूत्राके गिन्नाके पास जाय और प्रमस द-गीले दे देकर सग्वारके गिन्ना विभागका नई नीतिनी कीमत और उससे हानवाते लाभ उ-हैं समझायें। एसा करनेमें जबरनस्ती कभी न की जाय। अगर इस नीतिमें उनकी श्रद्धा नहीं है या वे ईमानदारास इस पर अमल करना नहीं चाहते तो म उ-ह इस्तीफा देकर चले जानकी छूट दूगा। किन्तु अगर मदी अपना वनव्य समझ ल और इस नीतिको जमला रूप देनेकी कोशिश करे तो यह नीवत ही न जाय। सिफ जादेग निकालेनेसे काम नहीं चलेगा।

### युनिवर्सिटी शिक्षाके कायापलट

प्रायः शिक्षाके बारेमें मने जो कहा वह युनिवर्सिटी शिक्षा पर भी उयो तरह लागू हाता है। उसका हि-टुस्तानका जरूरताके साथ पूरा पूरा मेल बठना चाहिय। इसलिए युनिवर्सिटीकी शिक्षा नई तांगीमक सि-सिलेमें जारी र-नेवाला उसका विस्तृत रूप हा होना चाहिय। यही मरा बातका असल मद्दा है। अगर इस बारेमें आप मुवस पूरी तरह एकमत नहा ह तो मुझे डर है कि मेरी स-गहते आपका काई लाभ नहा हागा। लेकिन अगर मेरे साथ आप भी इस बातका मानते ह कि आजकी युनिवर्सिटी शिक्षान हमें आजानीका रास्ता दिखानके बजाय गलाम ही बनाया है तो मेरी तरह आप भी उसे पूरा तरह ब-ल डालने और देगकी जरूरताके अनुसार नया रूप देनेक लिए उतावले हो उ-ंगे।

आज युनिवर्सिटीमें गिन्ना पाय हए हमारे नीजवान या ता सरकारी नीकरियोके पीछे मारे मारे फिरते ह या उममें असफ- हाकर

गोपीबो लूट-पाटके लिए भड़काकर अपनी कुल्म मिटाते ह। लागास भीस मागन या उनके टुकडाके मोहताज बननमें भी व गम महसूस नहा करते। उनकी दुदगाका भी कोई ह् है। आज युनिवर्सिटियाकी चाहिये कि वे देगकी आजादीके लिए जीने और मरनवाले जनताके सबव तयार करे। इसलिये मेरा राय है कि तालीमी सघके शिक्षकाकी मन्से युनिवर्सिटी शिक्षाको नई तालीमक साथ जोकर उसकी लाइनमें ले आना चाहिये।

आपन लोगोंके प्रतिनिधियोंके नाते गासनकी वागडोर सभाला है। इसलिये अगर आप लोगोंकी अपने साथ नही ले सके तो आपके आदेश कौसिअ हालकी चहारदीवारीके आगे नही बढ पायेंगे। आज बम्बई और अहमदाबादमें जो कुछ हा रहा है उसमे अगर यह जाहिर हाता है कि लोगो परसे कायसका प्रभाव उठ गया है तो वह घुरा गकुा ही कहा जायगा। नई तालीम आज भी एक कमजोर पीधा ही है फिर भी वह भविष्यमें बड भारी वृक्षका रूप ग्या। लेकिन अगर जनता उस पसंद न कर तो मंत्रियाके आदेशके सहारे वह पनप नही सक्त। इसलिए अगर आप जनताको अपनी रायकी नही बना सक्ते, तो म आपका सगह दूगा कि आप इस्ताफा द दें। आपका अराजक तामे डरना नही चाहिये। आप लोग अपना बद्धिब कहे अनुमार अपना कतय पूरा कर और बाकी सब भगवानके भरास छाड दें। उस अनभवमे भी लोग सच्चा आजादीका सबक साखेंग।

इसके बाद गाधीजीन लागासे प्रश्न पूछनक लिए कहा। पहला प्रश्न था क्या स्वावलम्बनक सिद्धातन बिना भा नई तालीम दी जा सक्त है?

गाधीजीन उत्तर लिया आप बगक इसका कोशिश कर सक्ते ह। लेकिन अगर आप भरा सगह पूछेंग तो म यहा कहूगा कि कसी हालनमें आपका नई तालीमका पूरा तरह भूल जाना हा बहतर होगा। स्वावलम्बन मेरे लिए नई तालीमकी पहला सत नहा, क्वि उसकी

सच्चा बसोटी है। इसका मतलब यह नहा कि ताताम शुरूस ही स्वावलम्बी बन जायगा। नई तातामता योजनाके अनुसार सात सालके पूरे जखममें आय और खचता निसाव बराबर बठना चाहिय। नहा तो विद्याधियोकी ट्रेनिंग पूरी हानक बात यही साबित हागा कि नई ताताम उहें जीवनका ताताम नहा दे सकती। स्वावलम्बनके बिना नई तालीम बसी ही मानी जायगा जस बिना प्राणका शरीर।

इसके बाद और भी प्रश्नात्तर हुए।

प्र — हमन बुनियादी हाथ उद्योगके जरिये शिक्षा देनक सिद्धा तना मान लिया है। लेकिन मसलमान किसी बजहसे चरख खिलाफ ह। जिन जगहामें कपास पदा हाता है वहा तो आपका कताई पर जोर देना ठीक मामूम हाता है। लेकिन क्या आप इस बातको नही मानते कि जहा कपास पदा नहा हाती वहा चरख और कताईके लिए कोई जगह नही है? क्या एसी जगहामें कताईके बजाय कोई दूसरा हाथ उद्योग नही लिया जा सकता उदाहरणके लिए खती?

उ० — यह बात पुराना प्रश्न है। कोई भा बुनियादी हाथ उद्योग जिसके जरिये शिक्षा दी जाय सब जगहके लिए उपयक्त होना चाहिय। सन १९८ में ही म इस नतीज पर पहुंच गया था कि हिन्दुस्तानको आजाद करन और उसको अपन पाव पर सडा हान शायक बनानके लिए उमके हर घरमें चरखा चटना चाहिय। कपासकी एक डोडी भी पदा न करके अगर इग्लड सारी दुनियाको और हिन्दुस्तानको कपडा भेज सकता है तो सिफ पन्नेसने प्रात या जिसेसे कपास मगाकर भी क्या हम अपने घरोंमें कताई शुरू नही कर सकते? सच पूछा जाय तो पुरान जमानमें हिन्दुस्तानका एक भी एसा हिस्सा नही था जहा कपास न पदा की जाती हो। सिफ कपास पदा कर सकनवागैधरती में ही कपास पदा की जाय यह हानिकारक बात तो हाल ही सूती माल तयार करनवाठे निहित स्वार्थोंन हिन्दुस्तान पर जबरन लादी है। एसा करनमें उन्हाने गरीब टक्स देनवाला और मृत कातनेवाठाके

हितकी जरूरत भी परवाह नहीं की। आज भी पढ़ना ब्यास हिन्दु स्तानमें हर जगह मिलती है। एसी तरह दलीले यह साबित करती है कि कोई कठिन काम हाथमें लेनेकी और मौका आने पर नये-नये साधन खोज निकालनेका हममें योग्यता नहीं है। अगर अच्छे भाल्को एक जगहसे दूसरी जगह के जानके कामको दूर न की जा सकने वाती जडचन मान लिया जाय तो सार कारखान बंद हो जाय।

इसके अलावा किसान जादमीका उसकी कोशिशसे अपना तन ढकन लायक बना देना—जब कि ऐसा न किये जाने पर उस नगा रहना होगा—अपने आपमें एक शिक्षा है। और कताईसे सबध रखनेवाले अलग-अलग कामकी बुद्धिपूर्वक छान-बीन की जाय तो उससे कई बातें सीखी जा सकती है। सब पूछा जाय तो कताईमें मनुष्यकी सारी शिक्षा समाई हुई है जो दूसरे किसी हाथ उद्योगमें नहीं मिलेगी। हा सबता है कि आज हम मुसलमानाका नाम दूर न कर सक क्याकि उसकी जडमें उनका भ्रम है। और जब तक मनुष्य पर भ्रमका जादू बना रहता है तब तक भ्रम हा उस सच्चा भालूम होता है। लेकिन अगर हमारी थदा गुद और दुर् है और हम अपनी इस पद्धतिकी सफरता उह दिया सके तो मुसलमान खुद हाकर हमारे पास आयेंगे और हमारी सफलताका रहस्य हमसे जानना चाहेंगे। अभी तक उन्होंने यह महसूस नहीं किया है कि मुस्लिम लोग या दूसरी मुस्लिम सस्यादाक बनिम्बत चरपेने ही गरावम गरीब मुसलमानाकी अधिक सच्चा सवा की है मुसोयतमें उह ज्याणसे ज्याण रहत पढ़ुचाई है। बगालके सबस ज्याण कठवये और कतिनें मुसलमान हा है। मुसलमानाका यह भी नहा भूलना चाहिय कि डाकारा गननमकी प्रसिद्धिका सारा दुनियामें फलानेवाले कुण्ड मुसलमान जुलाह हा ये और गफाईक साथ बारीकस बारीक शूत बाननेवाली मुसलमान कतिनें ही थी।

यही बात महाराष्ट्र पर भी लागू होती है। इस भ्रमका सबसे अच्छा इलाज यह है कि हम अपना कर्तव्य पूरा करनेका ही ध्यान रखें। अकेली सच्चाई ही कायम रहेगी बाकी सब समयक बहावमें वह जायगा। सारी दुनिया मुझ छोड़ दे ता भी मुझे अकेले ही अपनी सच्ची बात पर डटे रहना चायिये। हो सकता है कि आज मरी आवाज कोई न सुने। लेकिन अगर वह सच्ची है तो दूसरी आवाजाके घात हा जाने पर लोग उसे जरूर सुनेंगे।

### बुराइयोंका घेरा

अधिनानालिगम चेट्टियरन अग्रजीमें पूछा नई तालीमके लिए योग्य शिक्षक तयार करनेमें समय लगेगा। इस बीच स्कूलीकी शिक्षामें प्रगति करनेके लिए क्या किया जाना चाहिये? गांधीजीन उहे अग्रजीमें प्रश्न करनेके लिए चिढाते हुए हसीके पत्तारके बीच सुझाया अगर आप हिंदुस्तानीमें नहीं बोल सकते थ तो आपको अपने पड़ोसीके कानमें धीरेसे यह बात कह देनी थी और वे मुझे हिंदुस्तानीमें उसे कह सुनाते।

गांधीजीन आगे चलकर कहा अगर आप यह महसूस करते ह कि आजकी शिक्षा हिंदुस्तानको जागृत बनानके बजाय उसकी गुलामीको और ज्यादा बढ़ाती है ता आप उसे प्रोत्साहन देनेस इनकार कर दें भले ही उसकी जगह कोई दूसरी शिक्षा ले या न ले। आप नई तालीमकी चहारदीवारीके भीतर जितना कर सके उतना कर और उसमें सन्तोष मानें। अगर लोग इस बात पर मंत्रियाका उनकी जगह रखना नहीं चाहते तो वे इस्तीफा दे दें। वे लोगोको जीवन देनेवाला खाना नहीं दे सकते या लोग ऐसा खाना पसंद नहीं करते इस कारणसे लोगोको जहर खिलानमें तो वे कभी हाथ नहीं बढायेंगे।

प्र० — आप कहते ह कि नई तालीमक लिए हमें पसंदकी नहीं बल्कि आत्मियाकी जरूरत है। लेकिन लोगोको सिखानक लिए हमें सस्थाओंकी जरूरत होगी और सस्थाओंक लिए पसंदकी भी। हम बुरा इयाक इस घेरेसे कैसे बाहर निकलें?

उ० — इसका इलाज आपक ही हाथोंमें है। अपने-आपसे यह काम शुरू कीजिये। अंग्रेजाकी एक अच्छी बहावत है दान घरस गुरु होना है। लेकिन आप खुद साहब बनकर आराम-कुर्सी पर बैठें और दूसर कम योग्यतावालों से आगा कर कि वे इस कामके लिए तयार हो तो आपको सफलता नहीं मिल सकती। काम बनना मेरा ढंग इससे अलग है। बचपनसे मरी यह आदत रही है कि मने अपने आपस और आसपासके लोगोंसे हां किसी बातकी गुरुआत की है— फिर वह कितन ही छोटे रूपमें क्या न हा। इम वारेमें हम ब्रिटिश लोगोंसे सीख ल। पहले-पहल सिफ मुठठाभर अंग्रेज हि दुस्तानमें आकर बसे और धारे धारे उन्हां अपना एक साम्राज्य खडा कर लिया। यह साम्राज्य राजनीतिक दृष्टिसे उतना डरावना नहीं है जितना कि सांस्कृतिक दृष्टिसे। उसने हम पर एसा जादू डाला है कि हम अपनी मातृभाषाको भी भूल गये ह और अंग्रेजीके बगमें हाकर उससे बसे ही चिपटे रहत ह जमे एक गुनाम अपनी बडियासे चिपटा रहता है। लेकिन इस साम्राज्य निर्माणके पीछे कितनी श्रद्धा कितनी भक्ति कितनी कुरवानी और कितनी महनत छिपी हुई है! यह इस बातका प्रमाण है कि इच्छा होन पर रास्ता भी निकल ही आना है। इसलिये हम उन्हें और दृढ निश्चयके साथ अपने काममें लग जाय। यदि रास्तेमें आनेवाले बडस बडे खतरारी भी हम परवाह न कर तो हमारी सारी मुश्किल दूर हो जायगी।

### अंग्रेजीका स्थान

प्र० — इस कार्यक्रममें अंग्रेजीका क्या स्थान रहेगा? क्या उस अनिवाय बनाया जाना चाहिये या दूसरा भाषाकी तरह पनाया जाना चाहिये?

उ० — मेरा मानुभाषामें कितनी ही खासिया क्या न हा, मं उमम उसी तरह चिपटा रहेगा जमे अपना माकी छातासे। वही मुझे आवन दनवाला दूध दे मवती है। म अंग्रेजीका उसकी जगह प्यार करना

हू। लेकिन अगर वह उस जगहको हटपना चाहती है जिसका वह अधिकारिणी नहीं है तो म उगवा बड़ा विरोध करेगा। यह बात माना हुई है कि अग्रजी आज सारी दुनियाकी भाषा बन गई है। इसलिए म उस दूसरी भाषाके रूपमें स्थान देगा — लेकिन युनिवर्सिटीके पाठ्यक्रममें स्कूलोंमें नहीं। वह कुछ लागाके साखनवा चाज हा सकती है लाख-बाराडारी नहीं। आज जब हमारे पास प्राथमिक शिक्षा भी देशमें अनिवाय बनानके साधन नहीं ह तो हम अग्रजा शिक्षानके साधन कहासे जुटा सकते ह? हमन बिना अग्रजीके ही विज्ञानमें इतनी प्रगति की है। आज अपनी मानसिक गुलामाकी बजहसे ही हम यह मानन लग ह कि अग्रजीके बिना हमारा काम चल ही नहा सकता। म इस बातको नहा मानता। १

३२

## विदेशी माध्यम

विदेशी माध्यमसे हमारे विद्यार्थी दिमागी थकावटके शिकार हुए ह उनके नाननतुआ पर अनुचित भार पडा है व रटटू और नकलची बन गय ह मौखिक काय और चिन्तारके लिए व अयोग्य हा गय ह और अपनी विद्याको परिवार जयवा जन साधारण तक पञ्चानमें असमथ हो गय ह। विदेशी माध्यमन हमारे बालकोको अपन हा देशमें ऋग्भग विदेशी बना डाला है। वर्तमान पद्धतिका यह सबसे बडा दुःखद परिणाम है। विदेशी माध्यमन हमारी देशी भाषाआके विकासको रोक दिया है। अगर मरे पास एक निरंकुश शासककी सत्ता हा तो म विदेशी माध्यमके द्वारा हमारे लडको और लडकियाकी पढाई आज हा राक दू और तमाम शिक्षका और अध्यापकासे यह द कि अगर बरखास्त नहीं होना है तो इस फौरन ही बदल दें। म पाठ्य पुस्तकाके तयार होनका प्रतीक्षा नहा करूंगा। वे इस परिवर्तनके बान तयार



हो जायगी। यह एक ऐसी बुराई है जिसका इलाज एवदम ही जाना चाहिये। १

विद्वेगी भाषाके माध्यमन जिसके जरिये भारतमें उच्च शिक्षा दी जाती है हमारे राष्ट्रका हृत्स ज्यादा बौद्धिक और नतिक हानि पहुँचाई है। अभी हम अपने इस जमानके इतने नजदीक ह कि इस हानिका निणय नही कर सकत। और फिर एसी शिक्षा पानवाले हमारा भाषाका इसका शिकार और व्यापकीन दाना बनना है जो कि लगभग असम्भव काम है।

इस षठी और हमें अभास्तीय बनानेवाला शिक्षा द्वारा हमारे करांडा लोकाक साथ लगातार और दिन दिन बढ़ता हुआ जा जाय हो रहा है उसका प्रमाण मुझे राज राज मिलता है। जा प्रेजुएट भर कीमतो साथी ह व खुद जटक जात ह जब उह अपने आतरिक विचार प्रगट करन होत ह। व अपन हा घरामें अजनबी ह। मातभाषा के शब्दाका उनका पान इतना सापित है कि व अश्रेजा शब्दा और वाक्या तक्या आशय लिये बिना अपना वान इमगा पूरा नहा कर सकत। न के अश्रेजा पुस्तकाके बिना रह सकत ह। व बहुधा एक डूमरेको अश्रेजीमें पत्र लिखत ह। अपन साथियाकी बात म यह लिखाने का कह रहा ह कि यह बुराई कितनी गहरी पट गई है क्याकि हमने तो अपना सुधार करनेका जान-बूझकर कागिग का है।

यह बुराई इतनी गहरी षठी हुई है कि काइ माहगपूण भाषा प्रहण किये बिना काम नही बन सकता। हा कायसे मत्रा चाहें ता इस बुराईका मम सा कर ही सकत ह भये व नस दूर न कर सतें।

विश्वविद्यालयाका स्वावलम्बा जन्म बनाना चाहिये। राष्ट्रका ता साधारणत उहीका शिक्षा दनी चाहिये जितना संवाभाका उत्त आवश्यकता ही। अय सर शिक्षाआने अष्ययनक लिए उन नानगी प्रयतारा प्रासाहन नैना चाहिये। शिक्षाका माध्यम सुरस्त और किसी

भी कीमत पर बचल जाना चाहिये और प्रांतीय भाषाओंको उनका उचित स्थान मिलना चाहिये। जा दण्णीय बरवाणी नित्य बढ़ता जा रही है उसके बजाय म यह ज्याण पसन् बरगा कि षोड अरसक लिए उच्च शिक्षामें अव्यवस्था फल जाय।

प्रांतीय भाषाओंका दर्जा और यावहारिक मूल्य बढानके लिए म चाहगा कि अण्णाकी भाषा उस प्रान्तकी भाषा हो जहा अदालतें स्थित हो। प्रांतीय विधानसभाकी कारवाई प्रान्तकी भाषामें हुना चाहिये और यदि किसी प्रांतकी सीमाके भीतर अनेक भाषायें हो तो उन सारी भाषाओंमें होनी चाहिये। विधानसभाओंके सदस्यासे मरा कहना है कि वे काफी महत्त कर ता एक मासक भीतर अपन प्रान्ताकी भाषायें समझ सकते ह। एक तामिळ निवासीके लिए एसी कोई रका बट नहा है कि वह तामिळ भाषासे सम्बन्धित तन्त्र मन्त्रालम और कन्नड भाषाओंका मामूली याकरण और कुछ सी गण आसानीसे न सीख सके। केन्द्रमें हिंदुस्तानीका ही राय हुना चाहिये। २

अब जब कि शिक्षा पद्धतिमें सुधार करनका समय आ गया है तो काप्रेसजनाको अधीर हो जाना चाहिये। यदि शिक्षाका माध्यम धार धीरे बचलनके बजाय एकत्र बढा दिया जाय ता बहुत ही ग्राप्र हम देख सकेंगे कि आवश्यकताका पूरा करनके लिए पाठ्य-पुस्तकें भा प्राप्त हो रनी ह और अध्यापक भी। और यदि हम प्रामाणिकता और सच्ची लगनसे काम करना चाहते ह ता एक ही सात्रमें हमें यह मात्रुम हो जायगा कि हमें विदेशी माध्यम द्वारा सम्मताका पाठ पढनके प्रयत्नमें राष्ट्रका समय और शक्ति नष्ट करनकी ग्तरत नही है। सफलताकी गत यही है कि सरकारी दफतरोमें और अगर प्रांतीय सरकारोंका अपनी जगहता पर अधिकार हो तो उन अदालतोंमें भी प्रांतीय भाषायें सुरत जारी कर दी जायें। यदि सुधारकी आवश्यकतामें हमारा विश्वास हो तो हम उसमें सुरत सफल हो सकते ह। ३

## शालाओमें संगीत

गायक मन्नाडियाशयके पंडित नारायणगास्त्री खरने लडके लडकियामें गूढ संगीतका प्रचार करनेके काममें जीवन अपना दिया है। यान तौर पर अल्मदावात्ममें और आम तौर पर गुजरातमें इस गिगामें जा बडी प्रगति हो रही है उसका हाज उहाने भेजा है और इस बारेमें अपना दुग्न प्रकट किया है कि संगीतकी पन्नाइमें गामिल कर्नकी बात गिगा विभागक अधिकारी नहीं सुनते। यह पंडितजीकी अनुभवक आधार पर कायम की हुई राय है कि प्रारम्भिक गिगाक पाठपक्रममें संगीतका जगह मिलनी ही चाहिये। म इस सूचनाका हृदयस समर्थन करता हू। बच्चेके हायको गिगा देनेका जितना जरूरत है उतना ही जरूरत उसक गन्वा गिगा देनेकी है। गडक लन्गियाके भीतर जो अच्छाइया भरी रहती ह उह बाहर लान और पन्नाइमें भा उनकी सच्ची गिलास्पी पदा कर्नके लिए कवायत उद्याग चित्रकारी और संगीत साथ-साथ सिखान चाहिये।

यह बात म मानता हू कि इसका अय गिगाकी पद्धतिमें श्राति करनन बराबर है। राष्ट्रके भावी नागरिकाके जीवन-भायकी पक्की बुनियात डालना हू तो उपराक्त चार चीजें जरूरत हू। किसी भी प्राथमिक शागमें जाकर देग त्रीजिय तो वहा लडके मले हागे यवस्थाका नाम न हागा और कई बगुरी आवाजें निकलती हागी। इसलिए मुसे ता कोई गवा नहू कि जय कई प्राताके गिगासत्री गिगा-पद्धतिकी नये मिरम रचना करग और उगे देगका जरूरतके मुनाबिक बायेंगे तब जिन नरूरी धागाकी तरफ मन ऊपर ध्यान खीचा है उह के छाड नहू देंग। मरी प्राथमिक गिगाका याजनामें य चार्जे गामिल ही हू। जिस समय बच्चाके मिरम एक कठिन धिगी भाषा मोखनका बाध उतार दिया नामगा उमी समय ये चीजें आसात ही जायेंगी। १

## साहित्यमें गदगी

लार्नेरके मूधम वेल्फयर एसोसियेशन के अवतन्त्रिक मन्त्राग्रा मुझे एक पत्र मिला है। इस पत्रमें लार्नेर और कामुकतासे भर माफा नमून पाठघ-पुस्तकालये उद्धत विद्य गये ह जिहें विभिन्न विद्विद्यालयाने अपन पाठघक्रमामें रखा है। य ऐसे गदे अवतरण ह कि पत्रमें घिन मालम होनी है। हात्कि य पाठघक्रमकी पुष्पायामें स विद्य गये ह फिर भा इह उद्धत करके म हरिजन के पुष्ठाको गन नहा वन्गा। मन जितना भी साहित्य पत्र है उसमें तनी गदगा वभा भरा नजरसे नहां गुजरी है। इन अवतरणोको निष्पक्ष रीतिसे संस्कृत पारमा जीर हिदावे कवियाकी रचनाआमें स लिया गया है। लेकिन यह एक ऐसा प्रसंग है जो विचारियों द्वारा की गई हठताको न सिफ उचित ही ठहराता है बल्कि भेरी रायमें उनका यह पत्र ही जाता है कि ऐसा साहित्य अगर उनक ऊपर जवरन लादा जाय तो उसके विनाफ व विद्रोह भी कर।

किसीको चाहे जो पत्रका स्वतंत्रता देनेवा बचाव करना यह एक बात है। लेकिन यह विन्डुल जुदी बात है कि नौजवान लडको लकवियाको एसे साहित्यका परिचय कराया जाय जिससे निश्चय ही उनके काम विकाराको उत्तजन मिलता ही और ऐसा वाजाक वारेमें चाहियात कुतूहल भामें पदा हा जिनका पान जागे चलकर उचित समय पर और जरूरी हद तक उह प्रक हो जायगा। वरा साहित्य नव वही अधिक हानि पहुंचाना है जब कि यह निर्णय साहित्यके रूपमें हमारे सामन आता है और उस पर बड़ बड़ विद्वविद्यालयके प्रकाशनका छाप लगा हाती है।

उन एसोसियेशनन मुझ विखा है कि म काफ़ेसी मन्त्रियास यह अपील करू कि य पाठघक्रममें स एसी पुस्तक या उन अशाको जा कि

आपत्तिजनक है हटवा देनेके लिए जाभा उपाय संभव हो वह कर।  
म इस त्रेण द्वारा सह्य ऐसी अपी न केवल काप्रैसा मत्रियासि बल्कि  
सभी प्रातावे गिणामत्रियास करता हू। निश्चय ही, विद्यार्थियाकी  
बुद्धिके स्वस्थ विकासमें ता सभी एकमी दिलचस्पी रखते ह। १

३५

### जुआ, वेश्यागृह और घुडदौड

जिन प्रातामें काप्रैसा बहुमन प्राप्त हुआ है वहाके लागामें  
तरह तरहकी आशाए पदा हुई ह। उनमें स कुछ बेगव उचित ह और  
उह निश्चित रूपसे पूरा किया जायगा। कुछ आशामें पूरी नहा की जा  
सक्ती। उगहरणके लिए जा लोग जुआ खत्ते ह — दुर्भाग्यस बम्बई  
प्रदगमें यह बुराई बन्नी जा रही है — वे मानते ह कि जुणका बानूनी  
मायना मिल जायगी और बम्बईमें जो जगह जगह चोरी छिप जुआघर  
चलते ह उनकी अब जरूरत नहा रह जायगी। आज जहा जहा जुआ  
चलता है वहा सयवा उसे चलानवा बानूनी मजूरी — आज जिस  
प्रकार मर्यादित रूपमें है उमी प्रकार — दे दी जाय तब भी चोरा  
है कि <sup>ह</sup>ले गर-बानूनी जुआघर नही रहेंग इसका मुझ पूरा विश्वास  
है। मुसाव यह लिया गया है कि टफ बन्वकी जिम्मे पास  
आज रसरोमवा जएका टैका है एक अतिरिक्त दरवाजा खोलनेवा छूट  
दी जानी चाहिय, ताकि गरीब गोगानो जुआ खेलनी अधिक मुविधा  
हो जाये। इसके लिए अनिश्चित आयका लालच बतगया जाना है।

इमी प्रकारका दूसरा मुपाव यह है कि वेश्यागृहों पर नियंत्रण  
लगाना चाहिय और उमके लिए परवान दिये जाने चाहिये। एस  
सत्र मामगामें जसा कि बकमर हाना है तगा यह की जाना है कि  
इस दुराचारको बानूनी मायना दा जाये या न दा जाय, लकिन जब

यह चरु हा वाला है ता उम कानूना मायता देना और कन्यागृहामें जानेवाले सुरक्षित रहें इस बातकी व्यवस्था करना अधिक अच्छा है। मुझ आशा है कि कांग्रेसी मंत्रा इस जालमें नहीं पड़ेंगे। कन्यागृहामें निवृत्तका मांग यह है कि स्त्रियां दुगुना प्रचार-भाय कर (१) एक ता पट भरनेके लिए अपना गाल बचनवाली स्त्रियाके पास जाकर उह समझाना और (२) जो पुरुष अनान मा उद्धततापूर्वक स्त्रियाकी अवला कहते ह उह गरमावर बहनाके प्रति अधिक अच्छा व्यवहार करनेके लिए समझाना। मझ याद है कि वर्षों पहले मकितसनाक बहादुर आत्मी अपनी जानका याजी लगाकर कन्याओंके मुहल्लाकी गलियाकं नुकस्त पर खड रहकर पहरा देन य। एसा कोई चीज बड पमान पर क्या नहीं का जाना चाहिय ?

रेमकोसके जएके वारेमें तो म यही कहूंगा कि जहा तक म जानना हू यह और वन्तसी दूसरी चीजाकी तरह पश्चिमसे ही यहा आर है। और मरा बस चरु ता रेमकोसक जुएवा जाजकल जो कानूनी रक्षण मिता हुआ है उसे भा म वापस ले लू। १९२० के प्रस्तावमें स्पष्ट गानामें कहा गया है कि कांग्रेसका वायनम आत्म गुदिका है इसलिए कांग्रेस किसी भी प्रकारके दुराचारसे आय प्राप्त करनेका विचार कर ही नहीं सकती। इसलिए मंत्रियाको जो सुता प्राप्त हुई है उसका उपयोग वे ठाकमतका सही दिशामें वाक वारमें प्रतिष्ठित वगमें चल रह जुएवा रोक्नके लिए करग। यह १९२० करना यय है कि भो अनजान लाग प्रतिष्ठित मान जानवाले लोगका अनकरण नहा करेंग। मन यह दठाठ सुनी है कि अउ नस्लके घोड की औगा तयार करनेके लिए घुन्दीड जरुरी है। गायन इसमें सत्य हो मरना है। केकिन क्या घुन्दीड जएके बिना सम्भव नहीं है ? या वजा भी घानेका नस्ल सुधारनमें मन्गार है ? १

घडनीमें हानवाती रोगाकी और पसेका बरवातीके वारेमें पहले म तिल चुका हू। केकिन एक मित्र कन पत्र लिखते हुए कहते ह कि घडनीमें खला जानेवाला जुना गरान्तारीम कम बरा नहीं है।

इसीलिए इस बारेमें मज फिर लिखना पड़ रहा है। व मित्र आगे लिखते ह

घुड़दौड़क लिए भास ट्रेनें चलती ह। व गाधा टोपी पहननवाले लोगोंसे भरी रहती ह जा अपनेको काप्रेसी कहत ह। वे घुड़दौड़में पसा बरबाद करते ह। यह पसा कहासे आता है? आज प्रान्तामें जनताक मजि मडल गसन चला रहे ह लेकिन वे भी चुपचाप इस बुराईको सन्न कर रहे ह।'

हालाकि म घुड़दौड़को गराबखारी जसा बुरा नहा मानता फिर भी बुरी चीजमें तुलना क्या का जाय? कम बुरा होनेस जुआ अच्छी चीज तो नहीं बन जाता? घुड़दौड़के सारे रटस्याको म नहीं जानता। म तो सिफ इतना ही कह सकता हू कि अगर जनताकी सरकार इस बुराईको बंद कर सकती हा ता उह इस मिटाना ही चाहिये। २

३६

### कानून-सम्मत व्यभिचार

डा० मुयुलदमी रेड्डोन एक और प्रमाण इस बातका पग दिया है कि काप्रेसी मजि मडलसे गग कसी बड़ी बडा आगाए रखते ह। लोगोंकी ऐसी आगाए बरनका अधिकार है। काप्रेसक विरोधिया तकका यह स्वाकार करना पडता है कि इम जाचमें काप्रेसी मजि मडल कर उतर रहे है। वास्तवमें लाव हितबारा कामाक प्रारम्भमें माना व एक दूसरेस होड लगा रहे ह जिसस उनका गसन प्रबच देगकी सच्ची जखरताकी प्रति कर मक। डा० मुयुलदमी रेड्डोन मगाराके मजि मडलके नाम एक तुली अपाल प्रकाशित की है जिसमें उहारा मत्रियास एक ऐसे कानूनका मसविदा स्वाकार करनके लिए अनुरोध किया है जिसक जरिये देवगसियाको पतित जीवनक लिए अपित कर देना बंद हो जायगा। इम कानूनके मसविदेको ता म अभी ध्यानपूर्वक नहीं पढ़ पाया

है। एमिग उसकी मूलभूत कल्पना इतनी निर्गोप और आवश्यक है कि यही आश्चर्य हुआ है कि इस दक्षिणा प्राप्तकानूनका पुस्तकमें अब तक उस कसे स्थान नहा मिला। डा० मयूल्मासे म इस विषयमें पूर्ण सहमत हू कि यह मुधार भा उतना हा जरूरी है जितना धराव यली। उहान इस बातकी भी याद लिगई है कि वतमान प्रधान मंत्रीन वरसा पहले इस वराईकी वड वड गामों निन्दा की थी। म जानता हू कि इस वराईका दूर करनका कुछ सत्ता उनके हाथमें आन पर प्रधानमंत्रीकी यह उत्सुकता जरा भी कम नहा हुई है। डा० मुयुल्दमीके साथ साथ म भी यह आगा कर रहा हू कि चन्द महीनामें ही इन वराईका कानूनी पण्टरल हट जायगा। १

३७

## मत्रि मडल और हरिजनोकी समस्यायें

भसावल तालवेमें हरिजन-काय

थी ठक्करवापा लिखते ह

भसावल तालवेमें वड पमान पर सुन्दर हरिजन-काय करनका निश्चय किया गया है। इसके लिए पिछली १४ मईको दो सभाएं रखी गई थी। थी वडुठभाई महता थी गणपतराव तपासे थी बर्वे थी दास्तान जीर म — इतने लोग उन सभाओंमें उपस्थित थ। आगा है कि गावामें हरिजनाके लिए कुए खल जायगे। ग्रामवासियाने अच्छा उत्साह दिखाया है। इससे सफलता की आगा रखी जाता है। लक्षण अच्छे मानूम होते ह।

यह अच्छी बात है। अच्छे लक्षणोंमें सबसे पहला तो गायद कापेसा मत्रि-मडलका होता ही है। इसका यह अर्थ नहीं है कि अब जवरदस्तीसे काम लिया जायगा। ऐसे कामोंमें जवरदस्तीकी कमसे कम गुजाइश होती है। जो बात लोगोकी रग रगमें घुस गई है और जिसने



घमका धाना पहन रखा है उसे जबरदस्तीसे नहीं निकाला जा सकता। परन्तु जब राय विदेशी होना है तो उसकी गति दबे हुए लोगोंका अधिक दवानमें खच होती है और अगर दबी हुई प्रजाकी मदद भी की जाती है तो वह भी या तो गतिसे और पर की जाती है या अपना स्वायत्त मानके लिए की जाती है। ऐसी सरकार जो कुछ करती है वह जबरदस्तीसे ही करती है। कांग्रेसने गद्दी जोर आजमा कर नहीं पाई है। उसकी बनियाद लोकमत पर टिकी हुई है। इसलिए हम आशा रखें कि कांग्रेसी मंत्री लोगोंको समझानुया कर उनकी मदद ही यह काम आगे बढ़ायेंगे। इसका नतीजा यह होना चाहिये कि उन क्षेत्रमें हरिजन सेवा और ऐसे अन्य काम ज्यादा जोरसे चर और उनमें स्वायत्त चलनवाली ताकतें अपने आप गति हो पायें। भुसावल जस छोटेस तालुकेमें भी काम स्थिर रूपमें चले तो उसका फल अधिक अच्छा निकलेगा। सार में एक ही साथ सब जगह काम हाथमें नहीं लिया जा सकता। जहां कार्यक्षमता अधिक बुद्धिमान और प्रभावशाली हाथ बहा यह काम अधिक तेजीसे चलेगा। इस छोटेस क्षेत्रमें भी खूब अच्छा काम हो सके तो दूसरे भी उसकी नकल करने लग जायेंगे और सफलता जल्दी मिलेगी। हम आशा रखें कि भुसावल तालुकेमें ऐसा ही होगा। १

### हरिजन और कुए

श्री हरेलख सहाय लिखते हैं

कल नामके (४-९-४६) अपने प्रवचनमें हरिजनाके कष्टकी आर ध्यान दिलाते हुए आपने यह कहा था कि उनकी कुआसे पानी नहा करने दिया जाता। पिछले २५ वर्षोंका सतत कोशिशके बावजूद हरिजनोका यह कल अभी तक दूर नहा हो सका है। हरिजनाके कष्टको आपस अधिक जाननेवाला दूसरा कोई नहा है।

भयवकी तुच्छ रायमें अब कांग्रेसी सरकाराने हरिजना के सम्बन्धमें अपनी नाति शीघ्र ही धापित करके इस तरहके

कष्टानो कानूनन् दूर करना चाहिये। सबक आपका ध्यान इस सम्बन्धमें पजाबके हरिजनानो आर दिलाणा चाहता है। वहा कुआसे पानी भरना ता दूर रहा कुए बनानेके लिए जमान भी नहीं मिलती। इसलिए आपसे निम्न है कि पजाब सरकार तारा हरिजनानो यह अधिकार मिलना चाहिये कि जहा उनका सावत्र निक् कुआसे पानी भरनकी मनाहा हो — जसी कि है — वहा सरकार अपन खचसे हरिजनानो आवाणीके खमालसे कुए बनवा दे या कमसे कम हरिजनानो अपन कुए बनानके लिए तमीन दिलाण या देनका नियम बनाय। बन्तरे गाव एस ह जहा चाहते हुए भी हरिजन अपन खचसे कुए नहीं बना सकत।

कहा कही सरकारन कुए बनान गुरू भी क्रिय ह पर वे बन्त कम ह। हरएक प्रांतीय सरकारका यह कतय होना चाहिये कि वह अपन सारे नागरिकाके लिए पीनके पानाकी व्यवस्था अवश्य कर।

इन भाईन जो ठिखा है वह ठीक ही है। हरिजनानके लिए पानी की व्यवस्था सरकारकी तरफसे होनी ही चाहिये। इसके लिए सिर्फ कुए खोदनकी जगह देना ही काफी नहीं है उसमें कुए सदवा दना भी जरूरी है। २

### एक बद्धिमानोका काम

पिछने हुई जातिभक्ति मंत्री श्री जी० डी तपासे (बम्बई)ने बम्बईकी धारासभा द्वारा हाउमें ही पास किय गय बम्बई हरिजन (रिमुवल आक सोशियल डिसएबिलिटीज) एक्टकी एक प्रति मेरे पास भजी है। उसमें से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भाग म नीचे देता हू

३ इसके विरुद्ध किसी पुरान कायदे-कानून राति रिवाज अथवा परम्पराके होते हुए भी किसी हरिजनको सिर्फ हरिजन हानक कारण —

(अ) किसी भा कानूनके मातहत किसी सरकारी नौकरीमें जगह पानेमें वचित नहऱा रखा जायगा, अथवा

(जा) (१) एम किसी नली-नाल धरने कुए तागव हीज नऱा या पाना रनकी अथवा नहाऱकी दूसरी जगह मरघऱ या कऱस्ताऱ पायाना जम सावजनिक उपयोगके साधन, सटव या पगऱी तक जान या उसका उपयोग करनेस राना नही जायगा जिन पर पऱुचने या जिनका उपयोग करनेका अधिकार दूसरी हिऱू जातियाऱी और वर्गोकी प्राप्त है

(२) प्रान्ताय सरकार या किसी म्यानीय सत्तासे परवाना पाकर किराय पर चलनवाऱी सावजनिक मऱारी तक पऱुचनेस या उम पर चऱनसे राना नही जायगा

(३) प्राऱती श्रायस या म्यानाय सत्ताके फऱम पूरी या आऱिक सहायता दकर बनाये गये मऱान कुए हीज या आम ऱोगाके उपयोगके पाऱ वगरा स्थाना तक पहुँचा या उनका उपयोग करनेस राना नहऱा जायगा

(४) आम ऱोगाक मनवहलाव या खिल-कूऱ वगराके ऱिए प्रनाय गये स्थाना पर जानस राना नहऱा जायगा

(५) एसा किसी दुकान पर जानस राना नऱा जायगा नहऱा दूसरी हिऱू जातियाऱी जानस अधिकार है

(६) एसे किसी म्यान पर जानसे या उमऱ उपयोगस राना नही जायगा जा ऱिऱुआके किसी सात धग या समूहके ऱिए नही यऱिक गार हिऱुआके ऱिए जलन वर दिया गया है या अऱग रना गया है

(७) किसी गान वग या समूहक ऱिए नहऱा यऱिक आम हिऱू जानाक भऱेके ऱिए म्यापिन किये गये धर्माऱा दऱऱका गम उठाऱस राना नहऱा जायगा ।

३ अ तीसरे विभागकी उपधारा— १ ३ ४ ५ ६ में बताया गया स्थानामें काम करनेवाला कोई व्यक्ति या उपधारा २ में बताए गए कार्गु सवारी करनेवाला कोई व्यक्ति या विभाग— ३ या धारा-३ में बताया गया स्थानामें काम करनेवाला कोई व्यक्ति किसी हरिजन पर कोई प्रतिबंध नहीं लगा सकता अथवा ऐसा कोई काम नहीं कर सकता जिससे यह मालूम हो कि हरिजनाके खिलाफ कोई भेदभाव किया जा रहा है।

४ किसी बात पर निणय दान या किसी आदेश पर अमल करनेमें कोई अदालत किसी हरिजनके विरुद्ध सिर्फ उसके हरिजन हानक कारण एसी किसी प्रथा या चरनको नहीं मान सकती जो उस पर किसी तरहकी सामाजिक अयोग्यता लादता है।

५ किसी कानूनके मातहत अपना कामकाज या फज अल करतवाणी कोई स्थानीय सत्ता विभाग— ४ में कहे गए किसी रीति रिवाजका नहीं मानगी।

६ जो भी कोई—

(क) हरिजन होनेके नाते किसी आदमीका तीसरे विभागकी (अ) धाराकी दूसरी उपधारामें बताई गई सवारी अथवा पहली तीसरी चौथी पाचवी और छठा उपधाराओमें बताये गए किसी स्थान पर जानसे या उसके उपयोग करनेसे रोकता है अथवा उसी विभागकी (आ) धाराका सातवी उपधारामें बताया गया किमा धर्मान्ना ट्रस्टका लाभ उठानसे रोकता है या रोकनेके लिए किमानो उकसाता है अथवा

(ख) किसी हरिजन पर किसी प्रकारकी कोई रोक लगाता है या उसके खिलाफ कोई भेदभाव प्रकट करनेवाला कोई काम करता है या किसी व्यक्तिको ऐसा प्रतिबंध लगानेके लिए उकसाता है या इसी तरहका और कोई काम करता

है, ता उछे अपराध सिद्ध हो जाने पर तीन माहकी कर्वा सजा दी जायगी, या उस पर २०० रु० जुर्माना किया जायगा या दोना सजायें ली जायगा।

७ अगर एसा बाई आत्मी जिसे इस एक्टके मातहत एन बार अपराध करने पर सजा मिल चुका है दुबारा वही अपराध करेगा ता अपराध सिद्ध होने पर उम ६ महीनेकी बंदगी सजा या ५०० रु० जुर्मानका सजा या दाना सजायें दी जायगी। और अगर वहा आत्मी तीसरी बार या इससे अधिक बार अपराधी सिद्ध होगा तो उमे १ माहकी कर्वा सजा दी जायगी या उससे १००० रु० जुर्मानके बन्धु किये जायग।

म विलकी तमार करनेवाले मित्रने कृपा करके अपने उम मापणकी एक प्रति भी मेरे पास भेजी है जा उहाने धारासभामें बिग एन करत समय किया था। उमने कुछ अत्यधिक दंभर हिस्से म नीव दना है

यह आछून एक प्रवाग्वा घोर अनान है। जसे ही एक हरिजन उत्पन्न जाता है वह अछूत मान लिया जाता है।

वह अछूत पला होता है चावन भर अछूत बना रन्ता है जीव जनमें अन्तरे रूपमें हा मर जाता है। वह चाह गिना ही माफ मुबरा तो नितना ही बुद्धिमान हो दूसरामे गिना ही श्रेष्ठ हो लकिन नामसारी बट्टर हिन्दुआके लिए बन्धुभा श्रेष्ठ बना होना। सयने बुरी बात तो यह है कि मर ताल पर भा हरिजनकी मिट्टी और रायरा दूसरकी मिट्टी जीर रायन मिलने तहा लिया जाना। अछूताके बष्ट इम बातस जीर ज्वाग ब गये ह कि गिफ सवा हिन्दू ही नहा ईगान् मगन्मान जा दूमे लोग भा उनमे अछूता जगा ही व्यवहार पाल ह। मेरे मन यह कि हरिजननाका कुछ बुनियाती

सामाजिक और नागरिक अधिकारोंके उपभोगके लिए एक सन्तान या अधिकार-पत्र देता है।

यह ध्यान देनेकी बात है कि उपरोक्त बिल हिन्दुओंके ओरसे बिना किसी विरोधके पास हो गया। कानूनकी सफाईके अमलमें लानेके लिए यह एक शुभ आरम्भ है। परन्तु उसके बारेमें बहुत बड़ी जागरूकता बना लेना भी ठीक नहीं होगा। हमारा दुर्भाग्य यह है कि हम जगत्से ताली बजाकर प्रस्ताव पास कर देते हैं और फिर उन्हें रद्दीकी टोकनामें फँक देते हैं। इस कानूनका पूरी तरह अमलमें लानेके लिए सरकार जीर सुधारकाको ज्यादासे ज्यादा सावधानी रखना होगी।

इस सचिवालयके बारेसे आज मूढ़ मनमें कोई लाभ नहीं कि जिस घोर अज्ञानकी ओर बिल बनानेवाले मिथ्या इतारा किया है उसका आज भी हिन्दुस्तानमें बाँधना है। सिर्फ अछूतपनके मामले ही नहीं परन्तु दूसरे बातोंमें भी यहाँ स्थिति है। सुधारकाका आह्वय कि वे इस भूत पर नजर रखें जीर जिन पर वह सवार है उनके साथ सावधानी सज्जनता और चतुराईके काम लें। ३

३८

## आरोग्यके नियम

श्री ब्रजलाल नेहरू मेरे जैसे ही खस्तकी ह। उन्होंने दैनिक अल्ले बारोंमें एक पत्र लिखा है जिसमें आरोग्य मंत्री राजकुमारी अमृतकुमारके इस कथनकी तारीफ की है कि हमारी बामारिया अपन अज्ञान और अज्ञानवादाके पदा होती है। उन्होंने यह सूचना की है कि आज तक आरोग्य विभागका ध्यान अस्पताओं के खोलने पर ही रहा है। उसके बजाये राजकुमारीके जिस अज्ञानका उल्लेख किया है, उस दूर करनेकी ओर इस विभागको ध्यान देना चाहिए। उन्होंने यह भी सुनाया है कि इसके लिए एक नया विभाग खोलना चाहिए। विद्वानोंके साथ यह

एक बुरा जादत थी कि उस जा सुधार करना हाना उसके लिए वह एक नया विभाग जीर नया खच खडा कर देती थी। लेकिन हम क्या इस बुरी जादतकी नकल कर? बीमारियाका इलाज करनेके लिए अस्पताल भन्ने रह लेकिन उन पर दतना वजन क्या दिया जाय? घर बठ आरोग्यकी रक्षा कसे की जा सकती है इसकी तागीम लानाको देना आरोग्य विभागका पहला काम होना चाहिये। इसलिए आरोग्य मन्त्रीको यह समझना चाहिये कि उनके अधीन जो डाक्टर और कमचारी काम करते ह, उनका पहला कतय है जनताके आरोग्यकी रक्षा और उसकी सभाल करना।

श्री ब्रजलाल नेहरूकी एक सूचना घ्यान देने योग्य है। वे लिखते ह कि बीमारियाके इलाजके बारेमें ढेरा पुस्तक दखनेमें आती ह लेकिन कुत्स्ती इलाज करनेवालाके सिवा डिप्राधारी डाक्टरानि आरोग्यके नियमोके बारेमें कोई पुस्तक लिखी हो ऐसा कभी सुना नहीं गया। इस लिए श्री नेहरू यह सूचना करते ह कि आरोग्य मन्त्री प्रसिद्ध डाक्टरास एसी पुस्तक लिखवायें। ये पुस्तक जीगाका समझमें आन आयक भाषामें लिखी जाय तो जरूर उपयोगी सिद्ध हागी। गत यही है कि ऐसी पुस्तकामें तरह तरहके टाके लगानकी चानें नहीं होनी चाहिये। आरोग्यके नियम ठम होने चाहिय जिनका पालन डाक्टरा और बध्याकी मददके बिना घर बठ हा सके। अगर एमा न हो तो कुएमें से निकल कर खाईमें गिरन जमी बान होना समब है। १

## लाल फीताशाही

मन्त्री दफ्तरी घिसघिसमें इस तरह जकट हुए ह कि उह साचन विचारनेका समय ही नहा मिलता। उह ता इतनी भा पुरसत नहीं कि वे मजस भुठावान जीर विचार विनिमय कर कि क्या अच्छा है जीर क्या बरा। उनकी स्थिति जानते हुए मुझ भा यद हिम्मत नगी होनी कि उहें पत्र हा गिब दू। हरिजन के स्तभा द्वारा ता मुने उनसे बात ही नहीं करना चाहिये।

अगर मन्त्री अपनी नई जिम्मेदारियासे निवटना चाहत ह ता उहें दफ्तरी तरीका — लाल फीताशाही — वा खतम करनेकी बग खोजनी चाहिये। पुरानी शासन व्यवस्था लाल फीताशाहीक द्वारा और उस पर ही जीवित रह सकती थी। लेकिन वह नई व्यवस्थाका गला घाट देगी। मंत्रियाको लोगोस जरूर मिन्ता चाहिये जिनकी सदभाव नासे ही वे इन पदा पर आसीन रह सकते ह। उह छाटीसे छाटी और बडीसे बडी गिवायतें जरूर सुननी चाहिये। लेकिन उनके पास जितनी गिवायतें और चिट्टिया आती ह उन सबका और अपने फसलाका रेकाड रखनेकी उह जरूरत नहीं। उह अपन पाम केवल उतन ही वागजात रखन चाहिये जिनस उनकी याददात ताजा रहे और कामका सिलसिला बना रहे। विभागाय पत्र-व्यवहार बहुत कम हो जाना चाहिये। व अपन उन लाखो मान्किके प्रति जवाबदार ह जो न ता यह जानते ह कि दफ्तरी कारवाईका ढग क्या है जीर न जिह उसके जाननकी चिन्ता है। उनमें से कितन ही लोग ता लिख और पत्र भी नहीं सकते। पर वे चाहते ह कि उनकी प्राथमिक आवश्यकताय पूरी हा। काग्रसजनोन उहें यह साचना सिखा दिया है कि शासन-सून काग्रसके हाथमें आते ही हि दुस्तान भरम न तो कोई भुवा रहेगा और न तन ढकनफी इच्छा रखनवाग कोइ नगा रहेगा। यदि मन्त्री उस विश्वासके साथ पाय करना चाहत ह जिसका



उभने अपन ऊपर भार लिया है तो उह इस प्रकारकी समस्याए गुप्तज्ञानके लिए सोचने बिचारनेमें समय देना चाहिये।

अगर व लयानयित गाधीवादीको मानते हा तो उहे जानना चाहिय कि यह वाद क्या है, इसका पता उहे मुझसे नही बल्कि आत्म निरीक्षण करके लगाना चाहिय। गायद म भी हमेना यह नही जान सक्ता कि वह क्या है। लेकिन म इतना अदर मानता हू कि अगर उसकी उचित रूपमें त्जोर्ज की जाय और उसका अनुमरण किया जाय तो वह इतना मौलिक और क्रातिकारी है कि भारतकी सभी वास्तविक आवश्यकताओको पूरा कर सक्ता है।

कांग्रेस एक क्रातिकारी सस्था है। लेकिन उसकी क्राति ससारकी उन सभी राजनीतिक आनियामे अरुण है जिनका हाल इतिहासमें लेखबद्ध है। जहा पहली क्रातियाका आधार हिंसा था वहा कांग्रेसकी क्रातिका आधार जान-बूझकर अहिंसात्मक रखा गया है। अगर यह भी हिंसात्मक होतो तो गायद क्रातिका पुराना रूप और रिवाज बहुत-कुछ उनी तरह कायम रह जाता। लेकिन कांग्रेसने धृत्तसे पुराने तराकाको निषिद्ध मान लिया है। सबम बका परिवर्तन पुत्रिस और सेनाका है। मने यह स्वीकार किया है कि अब तक कांग्रेसजन पदासीन ह और वे यवम्बाका सुरक्षाके लिए गानिपूण उपाय नही खाज लेते तब तक इन तातारा प्रयाग उह करना हा हागा। लेकिन मथियाके सामन सदा ही यह प्रश्न रहना चाहिये कि क्या इन नोना चीजाके प्रयोगका परित्याग नग किया जा सकता? अगर नही तो क्या? यदि जाच करने पर भी—यह जाच पुराने तरीकासे नही की जाना चाहिये जो कि सत्री और प्राय ध्यय सिद्ध हाते ह बरिब बिना सचके और साथ ही पूण तथा परिणामबारा न्यस हानी चाहिये—उह पता चले कि पुत्रिम और सेनाका प्रयोग किये बिना वे राजवाज नहा चला सकत ता अहिंसाना यह तकाजा है कि कांग्रेसना मत्रीपद त्याग देना चाहिय और पुन वनत्रागमें जाकर उम दुग्म अमन पी गात्र करनी चाहिय। १

४०

### व्यक्तिगत लाभकी आशा न रखें

कांग्रेस सरकारमें जा भी पत्र ग्रहण किया जाय सवारी भावनास ही ग्रहण किया जाय व्यक्तिगत लाभकी उसमें जरा भी आशा नही रखनी चाहिये। अगर कोई २५ रु० मासिक वेतन साधारण जीवन-यापनमें सतुष्ट है तो मंत्री बनकर या कोई भी सरकारी पद पाकर २५० रु० पानेका आशा रखनका उस कोई अधिकार नही। और ऐसे बहुतम कांग्रेसजन ह जो सवा मस्याभामें सिफ २५ रु० मासिक वेतने ह और वे किमी भी मंत्रीपदकी निम्नगारी बडी योग्यताके साथ उठा सकते ह। बंगाल और महाराष्ट्रमें ऐसे योग्य आदमी बहुत मिलेंगे जिहोने साव जनिक सेवाके लिए अपन जापकी अपण कर दिया है। सिफ गुजारे भरके लिए वेकर य लोग देशकी सेवा कर रहे ह। उन्हें कही भी रखा जाय व अपनेकी हर जगह सुयोग्य मादित कर सकते ह। वेकिन उहाने अपने लिए जो सेवाक्षण चुन लिये है उनका त्याग करनके लिए उह प्रलीभन नहा दिया जायगा और उह स्वेच्छास बन हुए अपने जमूल्य अनातवाससे घसीट कर बाहर लाना गलत होगा। यह सारे ससारक लिए सत्य है और इस देशके लिए गायद और भी ज्यादा सत्य है कि आम तौर पर अच्छे अच्छे और सबसे उत्तम दिमागके आदमी मंत्री नग बनते न वे सरकारी पद हा स्वीकार करते ह।

हो सकता है कि अच्छे अच्छे और सबसे ऊचे दिमागके आदमी कांग्रेसी सरकारें बनानके लिए हमारा न मित्र परंतु मंत्री और दूसरे पदा पर जासीन कांग्रेसजन स्वाथरहित योग्य और निर्दोष चरित्रके

न हाग, ता म्वराय हमारे लिए बन्त दूरवा स्वप्न हो जायेगा। अगर वाप्रेस कमटिया नीकटिया प्राप्त करनेव अखाहे बन जाय जिनमें सगस अधिक हिमक आत्मी हा वाजी मार मनें, तव तो एसे घ्यवितयाक मिलनवा समावना कम ही रहगी। १

४१

### वेतनोका स्तर

प्रातीप धारासभाआके मन्स्य आर मत्री सच्चे लोकसवकाकी तरह अपनी अपनी जगह काम करत पढुन गये ह। अग्रज सरकारने अब तक इन जगहाने लिए जा बतन त्थि ह वस हा वेतन व लोग नहा ल मनन। अपर उहाने लिय ता इसकी कामत उह चुकानो पडेगा। यह ना वाइ जरूरी नहीं कि अमुक बतन उहें देना तय किया गया है इसलिए उनमें से हर कोई बतता ल ही। वेतनवा जो पमाना निश्चित जाता है उसस तो बतनकी मर्यादा ही बघता है—यानी उसमे जिन वेतन बाँद नहीं ल मरता। उकिन पसन्दारलागाव लिए ता यह एक हमोकी बात हागी कि वे पूरा या थोडा भा वेतन नें। वेतन ता उन्हा आगावे लिए है जा मिन कुछ लिय आमानाक साथ अर्थात् मेराभावसे काम नर्ग कर मरते। व तुनियारे गरीबस गरीब आगाक प्रतिनिधि ह। उहें मिलनवाग पाइ पाई गरीबोंकी कमाइम आता है। व इम महत्त्वकी बातनी ध्यानमें रगे और उसक अनुसार रहें और व्यवहार करें। १

## मंत्रियोका वेतन

प्र० — इग वार वाग्रसके बहुमतगल प्रान्तामें मंत्रियाग वतन वृद्धि किा सिद्धाता पर वा जा रही है? क्या कराचावारा वाग्रम प्रस्ताव आग्रका परिस्थितिमें लागू नहा हाता? यदि महगाइव प्रभावमें आकर एसा किया गया है ता क्या प्रातावे वाटमें ऐसा गुाडग है कि प्रत्येक सरकारी नौकरका वेतन तिगुता किया जा सके? यदि नहा ता क्या यह उचित है कि मंत्री ५०० रुपयसे १५० कर लें और एक जयापक और चपरासाका य उपलैग किया जाय कि वह अपना निर्वाह १२ और १५ रुपये मात्तारमें करे और गासन प्रवधमें काई अस्थिरता हुमलिए उत्पन्न न करे कि वाग्रस गासन चला रही है?

उ० — प्रश्न विलकुल ठाक है कि मंत्रियाको ५०० रुपय क्या और चपरासी या शिपकाका १५ रुपय क्या? लेकिन प्रश्न उठानसे ही वह हल नहा हो जाता। एसे अतरका मिलसिला सनातन जसा है। हाथीको भन क्या और चाटीको कण गया? इस प्रश्नमें हा इसका उत्तर समाया हुआ है। जितनी जिसका जरूरत है इश्वर उस जन्ना दे देता है। मनुष्यकी जरूरत हाया और चाटाकी तरह स्पष्ट हो सके तो फाइ शका ही न उठ। अनुभव तो हमें यही बताता है कि भव मनुष्याकी आवश्यकता एकमा नही ही सकता जसे सब चाटियाकी या मध हाथियाकी एकमा हाता है। भिन्न भिन्न गागा और भिन्न भिन जातियाकी आवश्यकताए अलग अलग रहती ह। इसलिए आज तो जो अनर है उसे कमने कम करनेका गानिस आदोन्न कर लोकमत बनावें गीर एक आत्म सामन रखकर उसको ओर कूच कर। जपरस्तीसे या सयाश्रुके नाम पर दुराग्रह करके हम परिवर्तन नही करा सकेंग। मंत्रीगण हम लागामें से ह। मंत्री बननसे पहले भी उनकी आवश्यकताए

चपरासिया जसो नही थी। म चाहूंगा कि चपरासी मंत्रीपदक लायक बनें और तब भी अपनी आवश्यकताएँ चपरासी जितनी ही रखें। इतना ममज्ञ लें कि कोई मंत्री निश्चित मर्यादा तक वेतन लेनेक लिए बधा हुआ नडा है।

प्रश्नकारकी एक बात साचन लायक जरूर है। क्या चपरासा १५ रुपयेमें बिना रिश्तत लिय अपना और कुटुम्बका निवाह कर सक्ता है? यदि नडा तो उसको काफी मिठना ही चाहिये। इलाज यह है कि यथामभव हम सब अपने अपने चपरासा बनें और इतने पर भा जा चपरासा आवश्यक हा उह उनको जरूरतके अनुसार वेतन दें और इस तरह मंत्री और चपरासीके जीवनमें जा बडा अंतर है उस मिटाये।

मंत्रियोंका वेतन ५०० से १५०० रुपये क्या हुआ यह भिन्न प्रश्न है। केकिन मूल प्रश्नकी तुलनामें यह छोटा है। मूल प्रश्न यदि हल हा सके, तो छाटा प्रश्न अपने आप हल हा जायगा। १

### ४३

## मंत्रियोंके वेतनमें वृद्धि

पाडे लिन हुए मने हरिजन' में दबी कम्मसे एक परा मंत्रियाकी वेतन वृद्धिक बारेमें लिखा था। उसका मुझे बहुत बडा मृत्य चुनाना पडा है। बहुत लम्ब लम्ब पत्र मुझ परन पन्ते ह जिनमें मरा सावधाना पर दुग प्रकट किया जाना है, और मुय समझाया जाता है कि म अपनी राय बरल दू। मंत्रियोंके वेतन पहलेसे हा बहुत ज्यादा ह। इनको और भी बढाना बडा तब उचित है जब कि गरीब चपरासिया और कर्मियोंकी सिव इतना तरकीबी मिठा है जिसमें उनका गुजारा भी नडा हा पाता। मन अपना टिप्पणीका फिर पना है और मेरा दावा है कि जो कुछ पत्रगवक चाहते ह वह सब उम छाटासा टिप्पणामें आ गया है। पर वाई गलतफर्मी न हो इसलिए उसका अय म और स्पष्ट कर देना हू।

मुझे ताना मिला है कि मन कराना प्रस्तावक वरिष्ठों सोचा ही नहीं। मन्त्रियों जा कम वता उन चाहिये वह सिर्फ इसलिए नहीं कि वापसे एक प्रस्ताव पास करके ताना आने लिया है बल्कि उम्मीद लिए इससे बहुत ऊंचा कारण है। रात कुछ भी हो जहां तक म जानता हूँ वापसे उस प्रस्तावको कभी चला नहीं और वह आज भी उतना ही लागू है जितना कि पास होनेके समय लागू होता था।

म यह नहीं कहता कि वेतनामें का गई वृद्धि ठीक है। लेकिन म मन्त्रियोंकी बात सुन बिना इसका बरा भला नहीं कह सकता। टीका करनेवाला यह समझ लेना चाहिये कि मेरा उन पर या अपन सिवा किन्मा पर भी कोई अधिकार नहीं है। न ही म वापसमितिकी सारी बैठकमें हाजिर होता हूँ। जब सभापति चाहते ह तभी म बहल जाता हूँ। म ता सिर्फ अपनी राय दे सकता हूँ फिर उसकी कीमत जो कुछ भी हो। और उसकी कीमत तभी हा सज्जी है जब सोच विचार कर हकीकत पर आधार रखकर राय दी जाय।

अमीर और गरीबमें ऊंचा नीकरिया और छोटा नीकरियामें भयानक अंतरका प्रश्न एक अलग विषय है। इसके लिए बहुत सोच विचारकी जरूरत है और परिवर्तन जल्दसे करना पडगा। थोडा मन्त्रियों और उनके सचिवोंके वेतनके सिन्सिलेमें लगे हाथ इसका निपटारा नया हो सकता। दाना बाताका अपन अपने महत्त्वके अनुसार निणय होना चाहिये। मन्त्रियोंके वेतनका प्रश्न तो मन्त्री आप ही हल कर सकते ह। दूसरा प्रश्न इससे कहा अधिक व्यापक है और उसमें बहुत बारीकीसे गाच पन्ताऊ करनेकी जरूरत हागी। म तो हमारा यह माननकी तयार हूँ कि मन्त्रियोंको फौरन ही अपने अपन प्राणमें इस कामको अपने हाथमें लेना चाहिये और सबसे पहलू नीचा नीकरियावालाके वेतना पर विचार करके जहां जरूरी हो वेतन बढा देने चाहिये। १

## हम ब्रिटिश हुकूमतकी नकल न करें

१५ जगस्तका दिन जाया और चला गया। सारे हिंदुस्तानके लोगाने बड़ी घुमघामसे और अनोख उत्साहसे स्वतंत्रता दिवस मनाया। उनका यह सोचना ठीक ही था कि साम्राज्यवादी हुकूमतके नाच उह जितने भी भयंकर ढंग और यातनायें महना पड़ीं व सत्र अब पुराने जमानेका निगानिया बन जायगा। जीवनमें पहली बार गांधी गरीबसे गरीब किसानकी निराशापूर्ण आँखें खशीस चमक उठीं। इस मौके पर गहरके मजदूरके उदास दिल भा सुशीसे उछलन लगे। इस विंगाल दंगके हरएक दबे और कुचरे हुए पुरुष और स्त्रान हार्थिक उत्साह और उदमकके साथ स्वतंत्रता दिवस मनाया क्योंकि बरमाने दुख दब और कुरवानियाके बाद आखिर हिंदुस्तानके पराधीन मानवका आगाकी झलक दिखाई दी—उसे अधिप अछे दिनाकी और अपना बास हकका होनकी मनक सुनाई पड़ी।

एक सरकारी सूचना निगरी जिसमें प्रांतके गवर्नरके निश्चित किये हुए बतना और भत्ताकी घोषणा की गई है। भोलीभाली जनताने यह आगा लगा रगी थी कि साम्राज्यवादी हुकूमतके साथ ही उच्च अधिकारियोंके बड़ बड़ बतनाक भारतमें दबा हुआ शासन तंत्र भा खतम हो जायगा जो गुलाम हिंदुस्तानका साम्राज्यवादके फलमें फसाव रखनके लिए हा पना किया गया था। आस पहल दशक प्रत्येक राजनातिक नेताने प्रत्येक प्रसिद्ध अपनास्थाने वात्सराय के द्वाय मथिया और प्रान्तीय गवर्नर आदि सरकारी अधिकारियोंका दिवस मनेवा व बड़ बतना और उनके भत्ताकी स्पष्ट गलामें बड़ा निगन का था। इस बारेमें काप्रसन कई प्रस्ताव पाम किये थ।

पराया काग्रसक प्रतिद्व प्रस्तावमें सरकारक ऊचस ऊच अधिकाराका वेतन ५०० ६० माहवार निश्चित किया गया था। एकिन आज गाय यह सब भुला लिया गया है और गवर्नरका वेतन ५५०० ६० माहवार निश्चित किया गया है।

गमन पहले हम यह देखें कि दूसरे देशोंमें एस ऊच अधि कारियाका क्या बतन लिया जाता है। दुनियाक सबसे धनी राष्ट्रक सबसे धनी राज्य यूनाइटेड गवर्नरका १० हजार डॉलर वार्षिक दिये जात है जा हमारे हिमावस तीन हजार रुपय माहवारग भा कम होत है। अमरिकाके आइडाहो नामक राज्यक गवर्नरका बतन १५०० ६० माहवारस भी कम होता है। अमरिकाका एक दूसरा राज्य मरीलैण्ड अपन गवर्नरको १ ०० ६० माहवारसे कुछ ही ज्यादा वेतन देता है। इन्डोइसका जिसका जावादी उनीसा या जासामक बराबर है गवर्नर हजार रुपयसे कुछ ही ज्यादा पाता है। दक्षिण अफ्रीकाके यूनियनमें प्रान्तोके शासकाको, जा हमारे हिन्दुस्तानी गवर्नरके दरजेके होत है हर माह २२० स २७०० ६० के बीच बतन दिया जाता है। आस्ट्रेलियामें क्वींसलैण्डके गवर्नरको ३ हजार रुपय माहवारसे कुछ ही ऊपर वेतन मिलता है। इसे सब काई जानते ह कि स्टर्लिनको ३५० ६ माहवार बतन दिया जाता था। ग्रेट ब्रिटनके मन्त्रिमण्डलके मन्त्रियान बतनकी तुलना हमार गवर्नरके वेतनसे नहीं की जा सकती क्याकि वे लोग अपने पूरे देश पर शासन करते ह। फिर भी उनका बतन हिन्दुस्तानी गवर्नरके वेतनसे ज्यादा नहीं जाता। यह ध्यानमें रखना चाहिय कि ऊपर बताया देशाके इन अधिकारियाका अपन वेतनामें से इतना टक्स जीर दूसरे टका भी देन होते ह। इसलिए बिना किसी विराधके यह कहा जा सकता है कि हिन्दुस्तानी गवर्नरका बतन दुनियामें सबसे ऊचा है।

अब हम इन बातों पर दूसरे पहलूसे विचार कर। हिन्दुस्तानका गवर्नर अपने प्रांतका प्रथम न्याया सचक है। इसलिए हम उस सेवककी



आयकी उसकी स्वामिनी (जनता) की आयसे तुलना कर। दूसरे विन्मुद्धस पहले प्रत्येक हिन्दुस्तानीकी औसत सालाना आय ६५ रु० बूता गई थी। अगर हम एक सामान्य किसान या मजदूरकी औसत मागना आयका हिसाब लगायें तो वह इससे बहुत कम हागी। प्रो० कुमारप्पाक हिसाबसे यह आय बवल १२ रु० थी और प्रिंसिपाल अप्रवाग्न यह मागना रकम १८ रु० निश्चित की है। इन सारे औसतका हिसाब लगाने पर हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि एक हिन्दुस्तानी गवर्नरकी आय जपन स्वामियाकी आयसे हजार गुना ज्यादा हाता है। और अगर हम नाचसे नीचे वगके लोगकी जिनकी हिन्दुस्तानमें बहुत ही बड़ी सख्या है मागना आयका लें तो सबके और स्वामियाकी आयके बीचका यह भेद ४ हजार गुना तक पहुँच जाता है। जर्मिकामें भी जिस सबसे बड़ा पूँजीवादा देश कहा जाता है और जहा सबसे अधिक आर्थिक असमानता पाई जाता है एक गवर्नरकी आय कितना अमेरिका नागरिककी औसत आयसे बवल २० गुना ज्यादा हाती है।

दूसरे प्रकारका तुलना इस समस्या पर और अधिक प्रकाश डालेगा। प्राताके शासन प्रबंधमें चपरासियाका नगर सरकारी दफतरामें मजस नीचा होता है। मध्यप्रातमें एक चपरासीका मासिक वेतन ११ रु० है। दूसरे प्रांतामें वह कुछ कम या ज्यादा हा सकता है। जब एक गवर्नर और चपरासाके वेतनमें इतना बड़ा फर्क हा तब प्रातरा पूरा शासन-नगर आम जनताके भलाके लिए सामाजिक कल्याण और उन्नत व्यवस्था स्थापित करनेमें उत्साहसे एक व्यक्तिवा तरफ दस काम कर सकता है? यामें हम चाह अपनी नाचास नाची राष्ट्रीय आयका ३ नीचसे नीचे चपरासाके वेतनका लें या चाही पर एक गवर्नरके वेतनका लें हमें नुतियामें हिन्दुस्तानका मिसाल क्या नहीं मिलेगी।

राज प्रातः के गवर्नराना इतनी बड़ी बड़ी रकमें दी जाता है तब हम दूसरे ऊंचे बतन पानेवाले सरकारी अधिकारियोंके वेतन घटानके बारेमें क्या सोच सकते हैं ? अगर ऊंचे वेतन घटाये नहा जा सकते और नीचे वेतन बढ़ाय नहीं जा सकते तो प्रातःके अधमत्रा सारी प्रजाको निष्ठा देना या डाक्टरों मुविधायें देना वगैरानी याचनाओंको अमलमें लानके लिए पैसे कहासे लायें ? हम इस भ्रममें न रहें कि आज्ञाशक्ति आते ही कान्की भयकर गरीबीवाला राष्ट्र थोड़ा ही समयमें धनी और उन्नत राष्ट्र बन जायगा ताकि वह अपन गवर्नर और दूसरे ऊंचे अधिकारियोंको ऊंच ऊंच वेतन द सके। सावित्रयट यूनि यनवा अपनी राष्ट्रीय जाय बचानके लिए तान पंचवर्षीय याजनायें बनानकी जरूरत पडी। धम्बई-याजना बनानवाले गणान भी १० अरब रुपयेका पूजा लगान पर १५ बपके अन्में हर हिन्दुस्तानीकी औसत साठना आय १३ रुपये ही कूना है। इसलिए एक हा त्रिमें हिन्दुस्तानके धनी बन जानके सुनहले सपन जितनी जल्दी छान त्रिय जाय उतना ही हम संवके लिए अच्छा होगा। सत्य बान बठोर है और हमें ईमानदाराक साथ उसका पूरा सामना करना चाहिय। हम अपने नामको और अधिकारियोंको इतनी बान बनी रकमें नहीं दे सकते।

टा० के० जग

[यद्यपि भ प्रो वग द्वारा त्रिय हुए आकडके बारेमें निश्चित रूपसे कुछ नहीं कह सकता फिर भी उन्होंने हिन्दुस्तानके गवर्नर और दूसरे ऊंचे अधिकारियोंके बान बान वेतनके बारेमें और हमारी सरकारा द्वारा अपन नौकराओं त्रिय जानवाल ऊंचसे ऊंचे और नीचसे नीचे बतनोकी भयकर विपमताके बारेमें जो कुछ लिखा है उसका समथन करनेमें मुग कोई हिचकिचाहट नहीं है।—सो० क० गांधी] १

४५

### स्वतंत्र भारतके मंत्रियोसे

[ता १५-८-६७ के तिन वगैरके मंत्रागण गांधीजीका प्रणाम करने आये थे। उनमें गांधीजीका कहा ]

आप सब आजसे काटाका ताज सिर पर रखत हू। सत्ताका पत्र घुरी चीज है। इसलिए आप सामनमें विवेकपूर्ण व्यवहार करना। जोप सबका ज्यादाम ज्यादा सत्य-परायण अहिंसा-परायण नम्र और सहनशील होना चाहिये। अंग्रेजोंका टुकूमन चरनी था तब भा आपकी कमौटा दुद थी फिर भी वर इतना क्या कहा था। परन्तु अब ता गानार आपकी कमौटा ही कमौटा है। बभयक जात्रमें न फसना। इवर आपका मन्त्र कर। आरना गावा और गरीबाका उद्धार करना है। १

४६

### मंत्रियो तथा गवनेरोंके लिए विधि-निषेध

स्वतंत्र भारतमें मंत्रिया और गवनेरोंका कम करना चाहिये हम पर गांधीजीने कुछ धारें कही

(१) मंत्रियोंको अथवा गवनेरोंका जहा तक हा सक कहा तब जरा देगमें उत्पन्न हानकारक वस्तुयें ही काममें लनी चाहिये कराहा गरीबाका राती मित्र हमके लिए उह तथा उनका कुटुम्बका राती हा पन्नना चाहिये और अहिंसा प्रचार चरणको हमगा घूमना हुआ रखना चाहिये।

(२) उच्च शिक्षा लिंगिया (नागरा और उर्) मात्र होना चाहिए। जन्म तब ही सब आणवकी वास्तविकता में भा उर् अग्रजाना ध्वस्तार ही करना चाहिए। सावजनिक रूपमें ता उर् हिन्दुस्तानी हा वाचना चाहिए और अपन प्रान्तीय भाषाका मूलर उपयोग करना चाहिए। जाकिगमें भा जहा तब हा सब हिन्दुस्तानीमें हा पत्र-व्यवहार हाना चाहिए आर्य या सक्पूलर भी हिन्दुस्तानीमें हा निकाउ जान चाहिए। एगा हानस ठागामें व्यापक रूपस हिन्दुस्तानी सोपनका उत्साह बणा और धीरे धारे हिन्दुस्तानी भाषा अपन-आप देका राष्ट्रभाषा बन जायगा।

(३) उनके दिलमें अस्पृश्यता जाति-प्राति या भेद-तेरेके भ्रमभाव नहा होन चाहिए। किसीका धोना भी असर कही चलना नहा चाहिए। सत्ताधारीका दृष्टिमें अपना सगा बटा सगा भाई या एक सामान्य माना जानवाला नागरिक कारीगर या मजदूर सभी एकसे होन चाहिए।

(४) इसी तरह उनका व्यक्तिगत जीवन भी इतना सादा होना चाहिए कि लोग पर उसका प्रभाव पड। उर् हर रोज देके लिए एक घण्टा शारीरिक श्रम करना ही चाहिए। भन्ने वे चरखा काते या अपन घरके जासपास जन्म फल या सागभाजा उगाकर देक राख उत्पादनको दायें।

(५) मोटर और बगगा तो हाना ही नहीं चाहिए। आवश्यक हा बसा और उतता बडा साधारण मकान उर्हे काममें रना चाहिए। हा अगर दूर जाता ही या कित्ता खास कामस जाना हा ता व जरूर मोटरका उपयोग कर सकते ह। लेकिन मोटरका उपयोग मयादित होना चाहिये। मोटरकी धाडा बहुत जरूरत तो कभी कभी रहगा हा।

(६) मेरी तो यह इच्छा है कि मत्रिया और गवनरके मकान पास पास हा जिसस वे एक-दूसरेके विचारामें कुटुम्बोंमें और काम काजमें जोतप्राप्त हा सकें।

(७) घरके दूसरे सदस्य और वरुच घरमें हायस ही बाम कर।  
नौकराजा उपयोग कमसे कम होना चाहिय।

(८) जाज जब देनाक कराडा मनुष्याका बठनक लिए गतरजी  
ता क्या पहननके लिए कपड भी नहा मिलते तब विदेगा मठगा फर्नीचर  
— माफायट जाग्मारिया या चमकीगा बुसिया बठनके लिए नहीं  
रखा जानी चाहिय।

(९) अतमें मंत्रिया जीर गवनराजा किसी प्रकारका पसन ता  
हाना ही नहीं चाहिय। १

### ४७

## दो शब्द मंत्रियोसे

[ता० २५-९-३७ के हरिजनसेवक में छपे उडीसाका सक्ट  
नामक ऊवमें गाधीजीन मंत्रियोन भी सलाहक दा गल्ल कह घे जो  
नीच लिख जाते ह।]

१। गल्ल मंत्रियोमे भी। उह जा कुछ भी आधिक दान मिलगा  
उमस तो सक्टका जागिन निवारण हा हागा। इसलिए उह दा बातें  
करना चाहिय। पहला बात ता यह है कि जा भी आदमी सक्टग्रस्त  
निवारण उ उसके लिए यह कोणिका की जाय कि वह किमी उत्पादन  
काममें लगवत अपनी सहायता मुक्त करना सीख। बिहारमें बताई  
वतराजा काम अपनाया गया था। उडामामें अगर गेण चरखके  
कामजा न चाहत हा ता व और कोई उद्योग ल सक्त ह। असल  
बान है श्रमधमका गौरव सीख जनरी। सद मत्री भी पाडा देख  
लिए अपना बुना उतार कर रख दें और साधारण मजदूराका तरह  
काम कर। इसमे उन लागका प्रोत्साहन मिठगा जिहें काम थीर  
उमस प्राप्त होनेवाली मजदूरीकी जरूरत है। दूसरे मत्री बुगल इकी

नियराकी तलाश करते उक्त कौशिकी इस प्रकार काममें गये जिगम बपकि मीमममें नशियाके प्रलयकारी प्रवाहवा एसा माग दिया जा सके कि वह उपधागी बन जाय । १

४८

## मंत्रियोंको मानपत्र और उनका सत्कार

एक सज्जनकी बातचीतवा जो मुझसे मुलाकात करन जाय ये सक्षममें यह निचाड है

आपको गायद यह पता न हो कि मंत्रियाकी आज क्या दगा हो रही है । कांग्रेसजन सत्रह साल तक सरकारी पगामे जूठप रहे ह । जब वे देखते ह कि जिस सत्ताका उहारा पहने अपनी इच्छासे परित्याग कर दिया था वह मत्ता उनसे चुन हुए प्रतिनिधियाके हाथमें आ गई है । उह यह नही समझमें आता कि अपने इन प्रतिनिधियाक साथ किम तरह बरताव करना चाहिय । व उनका मानपत्रा और स्वागत सरकारासे नारमें दम कर दते ह और चाहते ह कि व उनसे मुगाकात कर क्याकि यह उनका हक है । उनके सामने व तरह तरहके सुझाव रखत ह और कभी कभी छोटी माटी महर बानिया भी उनसे बराना चाहते ह ।

मंत्रियाकी देगकी सेवा करनके लिए अशकत बना देनका यह सत्रमे अच्छा तरीका है । इन मंत्रियाके लिए यह काम जभा नया नया है । गुदु आयवद्धिसे काम करनवाणे मंत्रीके पास मानपत्र तथा स्वागत-सत्कार ग्रन्थ करन अथवा जतिगयोक्तिपूण या उचित प्रग सात्मक भाषण देनके लिए समय ही नहा होता न ऐसे मुगाकातियाक साथ बठकर बार्ने कराना ही उनके पाम समय हाता है जिह उन्हीन मिलनक लिए बुलाया न हो या जिनसे उह अपन कामम काई



उनकी इस वारा सालगीसे उ० कुछ मिश्रणका नहा। इसीलिए अगर हमारे आगे अपने मंत्रियाता मानपत्र देना उनमें गुलाबाने मागना मा० हैं उ० उ० पत्र लिखनेमें समयम वाम लेंगे ता। हमने मंत्रियाका लाभ ही हागा। १

४९

## मानपत्र और फूलके हार

प्र० — एक भाई शिकायत करते हैं बहुतम प्रान्तामें कांग्रेसका मंत्रि मंडल स्थापित हो गया है और आम जनताको इस पर गव है। इसलिए जब कोई मंत्री किसी जगह जाता है तो बहका स्थापनाय कमटिया या दूसरी सस्थाए उसे कीमती मानपत्र देकर उनका प्रति अपना आदर भाव प्रकट करती हैं। करीब करीब सभी मामलोंमें इस तरह की जानबाली चीजें मंत्रीकी अपनी सपत्ति बन जाती हैं। मरी रायमें यह प्रथा ठीक नहीं है। या ता इस तरह मानपत्र लेनेका यह सिलसिला बन्द किया जाना चाहिये या इस तरह की गई चीजें स्थानीय कांग्रेस कमिटीको मिलनी चाहिये। मंत्रियों या कांग्रेसके नेताआका फूलके हार वगैरा पहनानेके बारेमें भी कोई निश्चित नीति होना चाहिये। मन कई जगह यह देखा है कि मंत्रियाका स्वागत करते समय उन्हें एस हार पहनाय जाते हैं जिनका कीमत ३०-४०० रुपयेस कम नहीं होता। यह पैसेकी निरी बरबादी है।

उ — यह एक उचित शिकायत है। आम जनताकी सेवा करने वाले किसी भी सेवकको अपने कामके लिए न तो कीमती मानपत्र लेने चाहिये और न बहुमूल्य फूलके हार वगैरा लेने चाहिये। यह बहुत बुरी बात भले न हो मगर एक दुःखदायक बात ता बन ही गई है। इसके बचावमें जकसर यह दलील दी जाती है कि मानपत्रकी कीमती चौखटा और फूलके बहुमूल्य हारा व गुलस्ताकी



बनौं त इन चीजाके बनानेवाले कारीगरको पमा मित्रता है। लेकिन य कारीगर तो मंत्रिया और उनका जन्म दूसराकी मन्त्रके बिना भी अपना काम अच्छा तरह चला सकत ह। मन्त्रा वगैरा अपन मज गावक लिए दीरा नहीं करते। उनके दीरे कामके सिन्धिलमें हात ह और उनका पीछे अबसर यह खपाठ रहता है कि वे लोगस प्रयत्न मिलकर उनका बातें सुन सों। उन्हें दिय जावाके मानपनामें उनका गुणाकी प्रशंसा करना जरूरी नहै क्यकि गुण ता स्वय हा अपन पारितायिक ह। मानपनामें ता स्थानीय जहरता और गिवा मनावा यदि वसी बाँ गिकापतें हा उल्लस किया जाना चाहिय। मंत्रिया और उनके सचिवाके सामने व वसे काम पडे ह। गगावा यगामभरी नारीकाम मंत्रियार काममें मन्त्र पहुचतक मन्त्र दनावे पना टागा। १

५०

### मंत्रियोको चेतावनी

मरे पास आकर कई लोगने यह कहा ह कि जननाक मन्त्रा पुगने अग्रज अधिनारियाकी तरह ही मनमाने ढंगस काम करत ह। हम पर प्रयोग डालनवाके कुछ कायजान भा वे गग मरे पाग छाड गय =। इन मन्त्रपमें मन मंत्रियामे बातचात नही बा। लेकिन हम सामन्में मरी यह स्पष्ट राय है कि जिन बानाके गिग हम अग्रज मन्त्रारकी आठाचना करत रह ह उनमें से बाई भा बात जिम्मदार मंत्रियाक गामनमें नहा होना चाहिये। अग्रजी गामनक गिगमें बाइमराय बानन बनान और उन पर अमर करानके लिए आन्तिस निवार मकन से। तब गाय और गामनक काम एव हा ध्यवितर गायमें गमनका बाकी विराय किया गया था। तबस आज तक गमी बाई बात नहा ह किमम हम विषयमें राय बन्दना जरूरत हो। गामें आन्ति-

नगरा गारा विन्तु तहा हाना चाहिये। बानून बनाववा अधिकार गिर आपरा धारागभाजारा रह। मत्रियाका जब जनता चाह तज उनर पत्ता हटाया जा सरता है। उाव कामाजी जाच बगनका अधिकां जावका अत्तातारा रह। उह चापका सरता गरत और निर्णोद बनातकी भरगव कोगिग करना चाहिये। इस ध्ययका पूरा करनर गिए पचायत राज का सुझाव रमा गया है। उच्च चाया च्यव गिए यह सभय नही कि बहु लाखा गोगागे शगत निपटा सक। सिप असाधारण परिस्यितियामें ही जावस्मिक बानून बनातका जन्तन पत्ता है। बानून बनातमें कुछ ज्यादा देर भजे लग ऐकिन च्यव स्थापिका सभा (एक्जिक्यूटिव) को धारासभा पर हावा नहा हान गिया जाय। इस समय काई उताहरण ता मरे दिमागमें नहा है। उकिन जग्ग अग्ग प्रातास मेरे पास जो पत्र आय ह उाके ही आधार पर मन य बातें कही ह। इसलिये जब म जनतास यह अपाल करता हू कि वह बानूनको अपन हाथमें न ऐ तव जनताक मत्रियास भी म अपाल करता हू कि जिग पुरान तरीकाका उहोन निदा का है उहाको लत अपनानक वारमें व मावघाता रखें। १

५१

## गरीबी लज्जाकी बात नहीं

गोग कहते ह कि पहल काग्रेसका १ लाख रुपय जमा करनमें भा मसीवत होती थी। गोग दते तो थ मगर हम भिसारी थ। आज करोडा रुपय हमारे हाथमें जा गय ह। करोडा त्रेनका तावत भले भाई पर सच ता हमारा वही अग्रजी जमानवाला है। कुछ लोग यह मानते ह कि जितना रुपया उडाना है उडावें। गानसे रहें तव उसका असर देगस बाहर भी पत्ता। ऐकिन उहें समझना चाहिय कि पसा गौवक लिये सच करना चाहिय या देगके कामके लिये? यह बात ठीक है कि हम

इल्जुम साथ मुकाबला कर ता कर सकते ह। पर वहां एक आदमीकी जा जामना है उससे यहा बहुत कम है। एसा गरीब देग दूसरे देगारे साथ पसवा मुकाबला कर ता वह मर जायगा। दूसर देगामें हमारे प्रतिनिधि भा यत् बात समझें। जमेगिवाका मुकाबला रहने दो। खानमें पागेमें और पाटिया दनमें व जो दावा करते थे कि हमारी हुकूमत जावेगा तो हमारा भी रग-दग बढ़ जायगा वह उन्हें झुठला देना चाहिये। हमार स्यागी बाघसवाल भी एसा गन्ती कर ता वह साचनकी बात है।

फिर गग कन्ने ह जि मनी गग इतन पसे खत ह तब हम सरकारी नौकरा कर तो हम भा ज्यादा पम मिन्ने चाहिये। सरदार फलका अगर १५०० रुपय मिन् तो हमें ५०० तो मिन् ही चाहिये। यह हिन्दुस्तानमें रन्नेका तरीका नहीं है। जब हरणक आत्मा जात्मगदिया प्रयत्न करता हो तब यह सब सोचना कसा ? पमम किमीरी कीमत नहा होता। १

५२

## अनाप जनाप सरकारी खच और बिगाड

जब कराडा मनष्य पारावार कठिनाइया झूठ रहे थे उस समय गांधात्रा व्याकुल हाकर सरकारा तन्में जेनेवाला अनाप जनाप खच और बिगाड दख रहे थ। और उनकी यह ध्यातुना उत्तरात्तर यत्ता हो जा रही थी। उनकी चौकस निगाहस कोई भी चीज चान नहा रह सकता था—विन्गामें राजदूतावासाका खच मंत्रियाके निवास स्थानामें गया जानवाग साज-सामान विन्गामा राजधानियामें रहने या राठुवे प्रतिनिधियाका रहन-सहन आदि। समय समय पर व चनाचनो दन रहने थ। हमारे एक विदेशामें रहनवाके राजदूतका उन्ना विन्गाम आपक बारमें जा सरर मसे मिल रहा ह उन परम मात्तम

गता है कि भारत आपन जैसी जगता रमता है वसा जीवन जाय नहीं जा रह ह। क्या यह बात नहीं है ?

१९४७ में गरमोके तिनमें उहान दिल्हामें एष मित्रम बना कि तमाम मंत्री यत्नि स्वेच्छापूवक साङ्गीता जात्नी अपना रें ता व सारा दुनियाको मत्रमुग्ध कर देंग जीर प्रजावा रिवाग मपात्न कर मकेग। बानमें प्रजावा यह विवास का भी चीज या व्यक्ति टिंग नहीं मरेगा और न कोई उमवा नाग ना कर सकेगा। किन य बात तो अग्य रही यहा तो उष्ट गवनरा तथा मत्रियाको मत्र जस मवान चाहिये अगरक्षकावा बना पलटन चाहिय जीर नकाती पागाक पहन हुए सिम्मतगार चाहिय। नाजन समारभावा गवनर पन्की नीति रीतिका एक महत्वपूर्ण जग माना जाता है। यह सब म त्रिमी भी तरह समझ नहीं पा रहा हू। दगाकी प्रतिष्ठाके लिए अधिव हाकिारक कौनसी चीज है— भारतके असरय मनुष्याग जघ वस्त्र जीर मवानकी तगीकी स्थितिमें रहता या हमार मत्रिया तथा गव नराका अपने आसपासकी परिस्थितिस बिल्कुल मल न मानवाले गानदार जीर बहद खचवाले ममानोमें रहनके बदले साणे जीर उाट मवानामें साङ्गीमे रहना ?

उहोन आगे कहा कि मेरा मन चउ तो उाग जब भारी तगी बरदात्त कर रहे हू ऐसे समय म सरकारी भोजा समारभ तत्काउ बन्द कर दू। म मत्रियाके रहनके लिए साद छोट घर तो दूगा लकिन काग्रेसी गवनरो या मत्रियोको सास्त्र अगरक्षक नहीं दूगा। उहान नीतिक रूपमें अहिंसाको अपनाया है जीर इसके परिणाम-स्वरूप यत्नि उनमें से कुठको मार भी डाला जाय ता म इस बातकी परवाह नहा करूगा। ?

## क्या मंत्री अपना अनाज-कपडा राशनकी दुकानोसे ही खरीदेंगे ?

प्र० — जब जल विभाग गवर्नरके मन्त्रालयके हाथमें था तब उन पर नियंत्रण रखनेकी कोई व्यवस्था नहीं थी। परन्तु अब तो प्रायः आगेका जिम्मेदार सरकार कायम हो गई है। इसलिए अब स्थिति बदल गई है। कांग्रेसी मंत्रियोंका यह कथन है कि वे अपना अनाज वहाँसे खरीदें जहाँसे सामान्य लोग खरीदते हैं। अर्थात् एक दाना भी वे दूसरा जगहसे न लें। इसका असर फारन होगा और वह दूर तक पहुँचेगा। आज कपडा और अनाजका मन्त्रालय दुकानें खुली चोरी जोर बेईमानोंका अड्डा बन गई है। अगर कांग्रेसी मंत्री इन्हीं दुकानोंसे अपना हिस्सेका कपडा और अनाज खरीदें तो उनका भविष्य बल इतना बढ़ जायगा कि वे इन बेईमानोंका सम्पत्तासंग्रहण कर सकेंगे।

उ० — यह प्रश्न इस तरहका बड़ा प्रश्न निश्चय है। मैं इन प्रश्नोंमें ही नहीं सलाह जतना है। मैं मानता हूँ कि मन्त्री और दूसरे सरकारी नौकर ऐसा ही करते हैं। सरकारी दुकानोंसे खरीदा तो अनाज खरीदनेका रास्ता बाग बाजार ही है। अधिकारी लगाते कितना ही क्या न कहें कि बाला बाजारमें मत जाओ क्विन उमका उतना असर पड़ेगा जितना उनके अड्डे उदाहरण सामान्य जनता ही मरना है। अगर वे आम लोगोंके साथ अनाज खरीदें तो दुकानोंसे समझ जायगा कि सदा हुआ अनाज नहीं बचा जा सकता। मैं सुनता हूँ कि इन्हींमें तो यह आम रिवाज है कि मन्त्रीगण और बड़े-बड़े अधिकारी वहाँसे सामान खरीदते हैं जहाँसे आम लोग खरीदते हैं। हाँ भी यही चाहिये। ?

## सबकी आँखें मंत्रियोंकी ओर

ज्या हा नय मशियान अपन आह् मभाउ त्या हा कुछ अप्रज भिषाका अरुण गाधीजीकी इस आशयने पत्र मि कि पह् जिा घरामें वाइसरायका कायकारिणा मर्मतिक सत्स्य रहत थ उन घराने मुत्तर वगोचाकी अत्र उतनी चिन्ता नहा की जायगी। उनमें फूड नहा सिन्ग जीर जहा मसमत्-सी मुलायम हरियाली फला हुई है वहा अत्र या-त्या घास उगन और वन ही जायगा और सारा अहाता गन् वन जायगा। हरिया कुसिमा और फर्नीचर तलके और दूसरी चिकनाइके दागासे गन् हो जायगा जीर हाय मह धोनकी जगह भी गन् रहन लगगी। इस पर गाधीजीन कहा म इन्ड और जफी कामें रहा हू और अप्रेजाकी जच्छा तरह पहचानता हू। इसणिए म अपन त्वके जनभवस कह सकता हू कि सस्वारी अप्रज सफाइ और तत्पुस्तक बानूनाकी जानते ह और उनका जमल करत ह। अप्रज जफयर ना महत्ता जसे मकानामें वात्पाहाकी तरह रहत थे। व अपने घरा और आसपासकी जगहको साफ रखनके लिए नौकराका एक बडा सा तल रखते थ। योगाके नता जतरिम सरकारमें उनने सेवकाकी हैमियनने गय ह। उ-हें अपन यहा अनगिनत नौकर रखनकी जरूरत नहा। यदि उ-हाने एसा किया ती व अपने ध्ययक प्रति पूठे साबित हागे। इसणिए उ-हू अपन घर और घराने आसपासकी जगह अपनी ही महनतसे साफ-सुधरी रखनी होगी। उनके घरकी स्त्रिया भी इस काममें उनका साथ देंगी जीर इसका ध्यान रखेंगी। म जानता हू कि वन नताआमें कोई भी एस नही ह जो अपन नहान धोनकी जगहको खत् साफ करनसे हिचकिचायें। कई साल पहलै एक डाक्टर बहूनन मयसे कहा था कि वाइसरायका मकान एक महल है और

वन् बिलकुल माफ-सुधरा रहता है परन्तु उनके हरिजन नौकराक पर इससे बिलकुल उलटी तसवार पेश करत ह। जनताके नेता एसा काइ भद नही रखेंग। पंडित जवान्तरलालके घरना एक हरिजन नौकर प्रातकी धारामभाभा सन्स्य बना है। वे अपने नौकराका अपन घरके आत्मीकी तरह ही रखत ह। मुझे खुशी होगी यदि हमार द्वाक नेता मन्त्रा बननेके बाद भी जीवनके हर क्षणमें जीवनका ऊंचेसे उचा स्तर बनाय रखेंगें। मुझ विश्वास है कि व राष्ट्रकी निरारा नही करग। १

५५

### कांग्रेसी मन्त्री साहब लोग नहीं

एक काग्रस सवन पूछने ह

क्या काग्रसी मन्त्री उम साहसी ठास रह मन्ते ह जिम ठास अग्रज रहने ह? क्या वे अपने घरेलू कामास लिए भी सरकारी मोटरा आन्विका उपयोग कर सकने ह?

मेरी दृष्टिम दाना प्रश्नाका एक ही उत्तर हा मन्ता है। यदि काग्रसका लोकसेवाकी ही मस्या बनी रहता ह ता उमन मन्त्री साहब लागाकी तरह नही रह सकत और न वे मन्बारी माधनाका उपयोग घरेलू कामासि लिए कर सकने ह। १

५६

### देशसेवा और मन्त्रीपद

सेवा अर्थात देशसेवा करना। देशसेवाका जय यन् पना है कि मन्त्रा बने ता ही देशकी सेवा हो सक्ता है। परवा मन्भाल बनना भी देशसेवा है। आजकल ना देशसेवाका नाम बना हा गया ३। लोग मानने हैं कि अयसाराधें फाटी और नाम छपना अपना जन्में

आर मंत्री का जाना ही मंत्री दायता है। इगिण सभी लोग मंत्री का गिर सता एका चान्त ह। एका हात्ममें मन्चे मंत्री कसे काम कर सतत ह? वगए अय लोकाका तरन मत्रियाकी भी दायता एगन है। परन्तु मंत्री अगर मंत्रालय गिण योग्य हो तो ही वह गाभा एका है। उस एका गुणाभित करना हमारा बनव्य हो जाता है। इना हम समय सर ता एा अपनस अपन सत्रा भी देका सेवा करता है—यदि उसने हृदयमें गहितरी भावना हा। १

५७

### कानूनमें दस्तदाजी ठीक नहीं

जब म दूसरी का नेता ह। कुछ जगहामें अधिकारियान कई ऐसे लोकाको गिरफ्तार किया है जा दगामें शामिल थ। पुरानी सर कारक निनामें लोग वाइसरायसे दयाकी अपा करले थे। उह बनाय हुए कानूनके मुताबिक काम करना पडता था फिर उसमें कितना ही बडा दाय क्या न रहा हो। जब लोग अपन मत्रियासे दयाकी अपील करते ह। लेकिन क्या मंत्री अपना मन्जीक मुताबिक काम करेग? मंत्री रायम उहे एसा नहीं करना चाहिय। मंत्री लोग एसा चाह क्या नहा कर सकते। उह कानूनके अनुसार ही काम करना होगा। रायकी दयाका निश्चिन स्थान होता है और काफी सावधानीस उसका उपयाग किया जाना चाहिय। एस मामठे तभी वापिस लिखे जा सकते ह जब कि गिकायत करनवाणे लाग गिरफ्तार किय हुए लोकाको छोटनेकी अदालतसे अपील करे। भयकर अपराध करनवाणे लोग इतनी आसानीस नहीं छोड जा सकते। एसे मामलामें अपराधीके खिलाफ गिकायत करनवाठके गवाही न देनसे ही काम नहीं चलगा। अपराधियाको अदालतमें अपना अपराध स्वीकार करना होगा और अदालतसे



वामें इमान्दारान सहयोग दिया तो अपराधियाका बिना सजा दिय छात्रा जाता सम्भव हो सकता है। म जिस बात पर जोर देना चाहता हू वह यह है कि कोई भी मन्त्रा अपने प्रियत प्रिय जनके लिए भी 'यायक' मागमें हस्तक्षेप नहीं कर सनता। ऐसा करनवा उसे कोई अधिकार नहीं है। लाकगाहाका काम है कि वह 'यायको' मस्ता बनाये और एसा 'यवस्था' करे कि 'याय' लोगोको जल्दी मिल जाय। उन लोगोका यह भा गारण्णी दनी हाणी कि 'गासन' प्रवचमें हर तरहकी इमान्दारी और पवित्रताका ध्यान रखा जायगा। लेकिन मन्त्रियाका 'यायनी' जदारता पर जसर डालन या खुद उनका स्थान ले लेनकी हिम्मत करना लाकगाही और कानूनका गला घाटना है। १

५८

### अनुभवी लोगोकी सलाह

हमारे मन्त्री जनताके ह और जनतामें स ह। उह इस बातका धमण नहीं करना चाहिये कि उनका जान उन अनुभवी लोगोके ज्यया है जो मन्त्रियाकी कुमिया पर नही बठ ह — लेकिन जिनका यह दुड विनाय है कि कट्टाल जितनी जल्दी हट्टे उतना ही देगको लाभ होगा। एक बचन लिखा है कि अनाजक कट्टाऊन उन लोगोके लिए जा राग नर जाने पर हा निभर कर ह खान लायक अनाज और दाल पाता नमभन बना लिया है। और इसलिए मडा-गला अनाज खानवा लोग अस्तारण प्रीमारियाके गिकार बनत ह। १

५९

## एक आलोचना

मध्यप्रातः एक सज्जन मध्यप्रातः मंत्रि मडलाकी आलोचना करे हुए मुझे एक बडवा पत्र भजा है। उक्त पत्र में तीव्र भावों से कुछ हटका करके उसका सार मैं नीचे देता हूँ

कुछ समयसे मैं आपकी लिपि-लेखनी साच रहा था कि जिन जान-बूझकर मन ऐसा नहा किया। अब एक एक व्यक्ति की हैसियतसे मैं आपको यह लिख रहा हूँ जिसका जपन प्रातः — उस प्रातः जिस मैं समझता हूँ जापन भा जापन गण जीवनके लिए अपना घर बना लिया है — सुवासनवा चिन्ता है। हमें यह विश्वास कराया गया था कि काग्रसके मंत्रियाका शासन ऐसा अच्छा होगा जिसमें कोई बुराई नहा होगा और वह केवल समझदारी और अनन नतिक बलक प्रभावसे ही हमारा शासन कर सकेंगे। लेकिन हमें तो काग्रस मंत्रि-मडलाका मुख्य उद्देश्य यह मानूँ पड़ता है कि —

(अ) प्रकट रूपमें जापनी मूर्तिकी पूजा कर और अन्दर ही अन्दर उस नष्ट कर

(आ) अन्दर तो साम्राज्यवादी प्रजाताकी पूजा करे और प्रकट रूपमें उसकी निन्दा करे

(इ) जपन विराधियोंको सत्य और बंध उपायासे जीवनमें असमर्थ होने पर गल्पनका उपयोग कर जाय

(ई) कानून और सरकारी पदोंका व्यापार खूब तारासे चलायें।

मध्यप्रातःका मंत्रि मण्डल यह कल्पना करता मातूम जना है कि प्रतिभात गभाकी आम दुगाद दवर और निमातराना ज्ञा चना आगा द्वारा भ्रष्ट करक शासन चगाया जा मरना है किन जनताका सरकार इस प्रकार नहा चगाई जा सकता । पिठल दस महानामें जापने मंत्रियान प्रातम सुशासनका नतिक नाव हिता दनमें काइ बमर बाका नहा छाडा । मक्षपमें म अपना जो निणय आप तर पहुचाना चाहता ह वह यह है कि काग्रम पार्टीने अगर कभा भा अधिकार और उत्तरदायित्व ग्रहण न किया हाता तो वह शासनके योग्य समया जा सकती था । मत्ता ग्रहण करनर बाद दूसरी बात उसे छाड दनकी जिम्मदारीकी है । यह जाचयकी बात है कि आपका आत्मा एम दुगर या पतिन मत्रि मण्डलक विरुद्ध विद्राह नहा करना जिम बनानेकी नतिक जिम्मेदारी पूण रूपमे आप पर है ।

कायममितिन मत्रि मडलक बिगफ आई हुई मारा गिवायतें पार्लियामेटरा बाडके पास भज दी था जिसन मौके पर जाकर उनका जाच की । उनकी रिपोट सावजनिक सम्पत्ति है । काग्रम यथा मभव सर्वाधिक विस्तृत मनाधिकारवाता मवया लावतात्रिक मय्या है । कायममिति उनका मय है और उस काग्रम विधान द्वारा बाधी हु मर्यादाभारे जन्तयन काम करना पडना है । मध्यप्रातर काग्रमा प्रतिनिधियारे लिए यह बात खुला था कि व मत्रियामे इम्नीफ मागन किन उमान मत्रियामे इम्नाफ नहा माग । इसर गिगफ व चाहन थ कि मत्रीगण आरसमें लगद निपटा और प्रातका शासा चलायें । पार्लियामेटरा घाड प्रतिनिधियाका इच्छाआकी अवज्ञता नहीं कर सकता था । उनका पाप एसा करनका काइ मत्ता नना था । किन मत्रि मडलकी जा कुछ कमिया उन मातूम ह उनका म छातक लिए वह जा कुछ कर गरना था व मव उनन किया । आर व बात स्वाभार गरना हागा कि दानन जा कुछ करना चाह्या उनका

मंत्रियों का विराप नर्ग किया। अब यह देगना बाबा है कि न व्यवस्था किस तरह करना है।

अबिन ना बान म बलाना चाहना हू वह यह है कि काय ममिनि काग्रम सस्यामें पार् जागाना किमा बराईका गीपापाना नहा करना चाहता। वह अनगामनना बारवाई गरनमें भयभीत नहीं हाता जिसका अधिनाग मामगमें पाउन किमा गया है।

म पत्र गमरनी इग बानका पूरी तरट ताइत करता हू कि काग्रम ममपगारा जीर ननिक बलत्र जाधार पर ही गासन कर मननी है। उ ह जीर उनके समान श्रय जालोचकाको यह विवास रखना गहिय कि यति विसा तिन काग्रस समशदारी और नतिक प्रभावक म्थान पर गण्डपनस काम रना शरू करगा ता उसी दिन उसकी कुत्तरता मत्य हो जायगी जिसकी काग्रस अधिकारिणी होगी। १

६०

## एक मंत्रीकी परेशानी

डा काटून यह पत्र भजा है

हिंदुस्तानके कई हिस्सामें इस साठ रबीकी फसल और सालाम खराब जाई है और इसलिए जाम तीर पर लागाना यत्न रहे कि उस बार देगमें जनका बन्त ज्यादा तगा रहगी। अत्रक मामगमें तमार जीर शरीय सबको एकसी सुविधायें इनकी नष्टिस सभकन प्रातक बहुतमे गरी क्षत्रोमें रागन देना गरू किया गया है। रागानिक कारण सरकार पर यह जिम्म नारा जानी है कि वह राशानिकके क्षत्रामें रहनवाले लोगके लिए जन भयेया करे। प्रान्तमें अत्रकी इतनी ज्यादा तगीका डर है कि यहा रागननी मानानो घटा कर कमसे कम कर दिया

गया है—याना प्रति मनुष्य राजवा छह छटाक जनाज किया जाता है। इसमें दो छटाक गहूँ दो छटाक चावल और दो छटाक मिलावटी जाटा किया जाता है। लोग आम तौर पर मिलावटी जाटको पसन्द नहीं करते और रागनमें इसस ज्यादा कमा करना लगभग असम्भव है। स्पष्ट है कि गहरी क्षेत्राका यश्र दनके लिए गावासे उसकी पूर्ति लगातार जारी रहना चाहिये। भारत सरकारन प्रान्ताय सरकारोका सुझाया है कि जनका लगातार पूर्तिकी एककी व्यवस्था करनेके लिए ज्यादा जन पदा करनेवाले जिलामें—यानी उन जिलामें जहा खेताका उत्पादन शान्य क्षमता जरूरतोसे ज्यादा होनेकी आशा रखी जाना है—जनाजकी अनिवाय बसूली करना बाछनीय होगा। अनिवाय रूपस अनाज बसूल करनेका यह प्रश्न लागोना बहुत परेगान किये हुए है। कहा जाता है कि सरकारन कट्टाकी जा काममें तय ना हूँ व बहुत कम हूँ इसलिए व बचाइ जानी चाहिये। इनका उत्तर यह है कि कीमताका बाचा तो मारे हिन्दुस्तानके लिए बनाया जाता है इसलिए उस पर अगर डाठे दिना किसी प्रान्तमें कीमने बचाइ नया जा मरनी। हमने अनाज सपकन प्रातमें कट्टीके नाम ४० सेरा मनके गया दस रुपये रख गये हूँ जो मच पूछा जाय तो कम नहा हूँ। यह काफी अच्छा रकम है और इसमें खेतीके और जावनना सामान्य जरूरतोक बड हुए खनवा उचित विचार किया गया है। मुझसे पन्नेके दिनमें गहूँ १ रुपय १२ सर त्रिया करा व। आज कट्टाका दर प्रति रुपये ४ सर है। चकि आम तौर पर लागता यह तय रना है कि बाजारमें अनाज मागना तुम्हामें बहुत कम जायगा इसलिए जहा स्वार्थो लाग अपना निजा जरूरने पूरा करनेके लिए ऊच दामा पर नाशपनाय कराने मारा हूँ वना काला बाजार जरूर सहा होगा।

जगर किसान यह समझता है कि गन्नामों रहना ही अपना भाग्य-बहना ही और गावामें जितना अपना भाग्य खरा नया है उन गन्नाका अन्न पहुंचाना ही अधिक अधिक कोशिश करना उनका सामाजिक और राष्ट्रीय धर्म है ता किसान किसान पर कोई जबरनस्ता न करनी पड़े। किसान मानसुच हमारा अन्नदाता है। इसलिए मैं आपसे यह अपेक्षा रखता हूँ कि आप उनसे यह अपेक्षा कर कि इस सबट का मों न ता वे खुद अनाज इकट्ठा करके रखें और न किसी बाग बाजारमें उस वच्चे बल्कि जितना अनाज दे सकें सरकारी गानामोंके लिए दें—ताकि अमीर और गरीब सबको उचित और समान रूपसे अनाज बाटा जा सके और भुखमरी व मुहताजाको टाला जा सके। आपकी जावान दूर दूर तक पंचता है इसलिए मैं आपसे अपेक्षा करता हूँ कि आप यह काम अपने हाथमें लें। गहराके लिए अनाजकी काफी व्यवस्था करनके लिए कई योजनायें सोची गई हैं। लेकिन कोई भी योजना क्या न हो सार सबका यही है कि हर हालतमें किसानसे यह कहना होगा कि वह अपना अनाज दे। जगर गहरा और गावोंमें आम जनताको अनाज मुहैया न किया गया ता हर तरहके दगे फसाद हुए बिना न रहेग। सयुक्त प्रांतमें हम अधिक अन्न पैदा करन और अधिक साग सजा पदा करन के जादोनाको बनावे दनकी पूरी कोशिश कर रहे हैं। आपके दिय हुए तमाम सुझावा पर जमल किया जा रहा है। सरकारी इमारतोंके आसपासकी सारी सरकारी जमीनोंको जोतनकी सूचनायें दे दा गई हैं। एसा व्यवस्था भी का गई है जिसमे निजी मकानोंके मास्कि सतीवाडीके विणपनाकी सलाह से गभ उठा सके। उह सुविधाके नाते बोनके लिए बीज और सिंचनके लिए नहराका पानी मुक्त किया जाता है। कुए

शासक वाममें भी सहायता का जा रहा है। इन सब बातों कहने और करने के बावजूद जब तक जनता साथ नहीं आती तब सब कुछ किया नहीं जा सकता। और जनता सहयोगवादी अर्थ है अज्ञानता किसान इस वामके लिए यथाशक्ति अधिकसे अधिक अनाज दें।

राज्य काटके इस पक्ष पर विभागा और उनका सहायकारका तथा गहरवालाका गभीरतास साचना चाहिये। फिर पक्ष भङ्गनवा सक्कटा सदुपयोग किया जा सकता है। उस स्थितिमें वह सक्कट न रहकर एक आगीर्षा बन जायगा। वरना गाप तो बह है और गाप वह रखा।

३० काटून एक जिम्मेदार मंत्री नाले ऊपरका पक्ष लिया है। क्योंकि गाप उह बना भा सक्कट ह और विगाड भा सक्कट ह। व उह हटाकर उनसे ज्यादा अच्छे व्यक्तियों उनका जगह रख सकते हैं। लेकिन जब तक गापने चुने हुए मंत्री उनका सक्कटाकी तरह वाम पक्ष हैं तब तक योगियों उनकी सूचनाओंका पालन करना चाहिये। क्योंकि कानून या सूचनाओंका विरोध सत्याग्रह नहीं होता। सत्याग्रही अपना वह दुराग्रह आमानास बन सकता है। १

६१

### मंत्रियोंकी टीका

यह स्वाभाविक ही है कि जो गाप वापसना राजनातिका नापसना करत ह व सभी वापसों मंत्रियाकी करो तरह टीका टिप्पणी करये। एसी आशयनामें ना सचार्द हो वह नमें वृत्तगनापूषा स्वकार कर गना चाहिये। लेकिन वामनों आशयना तो दक्कान ही उद्देश्य वाली है। उसको भी तमें बरनात करना पड़ेगा। लेकिन जब वापसना भी बही बार मचायें तब बही बठिनार्द पना हा

जाती है। वैसे उनके पास तो इगला इगला है। व अपन प्रातकी कापस कमगीस गिवायत कर सतत ह और वहा भी गपलना न मिल तो यकिंग कमगीस पास और अतमें अ० ना कापस कमटा तन पहुच सतते ह। अगर व सब उपाय भी कारगर न हा ता फिर निचय ही उनरी आणेचनाए त्रिए बाई गुजादग नहा है। नेकिन इन जागवकसि मुग सत्रसे बडी गिवायत ता यह है कि व बडी जल्बाजी करते ह और तप्याका जाननकी तबगीस हा नहा उठाने। परन्तु आनस बडा कोई पाप नहा है इस महान ओकाकिता प्रमाण मुग राज ही मिता है। १

## ६२

## सरकारका विरोध

लोकप्रिय मत्रि मन्ल धारासभाके सन्स्याके अधीन रह कर काम करता है। उनकी इजाजतके बिना वह कुछ कर नही सकता। और हरएक सन्स्य अपन मतपताआ यानी लोकमतके अधीन है। इसलिए सरकारके हर काय पर गहराईसे साचनक बाट ही उसका विरोध करता उचित होगा। आम गोगाका एक बरी जादत पर भी इस सम्बन्धमें विचार किया जाना चाहिये। करपताको करके नामसे हा नफरत होती है। फिर भी जहा जच्छी यवस्था है वहा अक्सर यह दिखाया जा सकता है कि करदाता खुद करके रूपमें जो कुछ दता है उसका पूरा बन्ना उसे मिल जाता है। गहरामें पानी पर वमूल किया जानवाला कर इसी प्रकारका है। गहरमें जिस दरसे मुज पानी मिल सकता है उम दरमें मं अपनी जरूरतका पानी खुद पदा नहा कर सकता। मतश्व यह कि पाना मुग सस्ता पडना है। उसकी मह दर मतपताओकी इठाके अनुसार तय करनी पन्ती है। तिस पर



नागरिकोंमें उसके प्रति एक नफरत-सी पन हो जाती है। यही हाल हमारे कराका भी है। यह सब है कि सभी तरहके कराका ऐसा सोचा हिसाब नहीं किया जा सकता। जस जसे समाजका और उसकी सवारा धन बढ़ता जाता है वस वसे यह बताना मुश्किल होना जाता है कि कब चुवानवायेका उसका सोचा बदला किस तरह मिलता है। जिन पन्ना जहर कहा जा सकता है कि समान पर जा एन विषय कब आया जाता है उसका समाजका पूरा बदला मिला हा ह। अगर एसा न हा ता जहर यह कहा जा सकता है कि वह समाज एन मतकी बनियाद पर रही चर रहा है। १

६३

## मत्रियोको भावुक नहीं होना चाहिये

मेरे पास ऐसे बहुतसे पत्र आय ह जिनमें जिनबाल भाष्यान हमार मत्रियाके रहन-सहनका आरामतलब करर उमकी कता जाता चना वा है। उन पर यह आरोप आया गया है कि व पशपातम काम एने ह जोर अपन रित्ताराकी ही आय घटात ह। म जानता ह कि बन्तमी जागचना ता तागेवराके जानन कारण हाता है। मत्रिए मत्रियाको उससे दुसा नही होना चाहिये। मिय दाप बतानवागी जालोचनामें म उहें अपन लिए अट्टा वान है लना चाहिये। यदि मेरे पास आय एए पत्र म मत्रियाके पास भज द ता एह जाचय होगा। मभव है कि उनका पास पनस भा बुरे पत्र जान हा। चाहे जा हो एन पयामे म ता घना मयक गता ह कि जहा तक तागी धीरज ईमानदारी और परिश्रम करतका सम्बध है ये आगवक हमरकी अगता जाना द्वारा चुन हुए सवराके इन गुणाका अधिक जाना गयत ह। तायन परिश्रम और अनुगामनका छात्रन जोर मिया जानमें हमें पुराने अधज सामवारी नरन नहा करनी चाहिये। अगर एन

मना लग उठित जागराण लाम उठान लग और दूमरा तरफ  
 धाणोता करनशाले लग वां वां कटामें गयम जीर पूरा मघाईको  
 लला रये ता दम शिणजारा उदय पूरा ह। तायगा। गन्त बात  
 पन्त या बातगा यग तगार कटान एर जछा मामला भी रिग  
 जाना है। १

६४

### धमकिया -- मन्त्रियोके लिए रोजकी बात

सम जानासा मं यह बता दना हू कि राजनी धमकियाक  
 बावजूद मन्त्री लाग हरण तरहवा अघाय दूर करनक लिए भरमक  
 कागिण पर रू ह। जाजवल जम नि मानसिन हिंसा देगमें बन्तो ही  
 पला जा रहा है व्यापक आन्तारिक मताधिकारके मातहत चन गय  
 मन्त्रियाका भाग्य ही एसा है कि इन तरहवा धमकिया उनके लिए  
 रागमराना बात बन गई ह। व अपन पदाना अथवा जीवनको खतरमें  
 टागार भी जिस व अपना बतव्य समगत हं उस करते हए पाछ  
 नहा हट सनन। इसी तरह एमी बहूनी धमकियाक कारण जसी कि  
 एग जर्मिमें दी गई हं न ता व नाराज होग और न याय करनस  
 इनार करन। १

६५

### सरकारको कमजोर न बनाइये

सरकारन कुछ गेमाको गिरणार किया था जिसक सिगक  
 आन्तोन हुआ। सरवाग्वा एसा करनका अधिकार था। हमारा  
 सरकार निर्दोषोती जाग-बूझकर गिरणतार नही कर सगती। केचिन  
 मनप्यसे गन्ती हो सगती है जीर सभव है कि गलतीसे कुछ निर्दोषारा  
 तागीक उठानी पड। यह काम सरदारका है कि अपनी इग गन्ताको

बहु मुधार । प्रजातंत्रमें लंगारा चाण्डिय कि व सरकारकी बाई गठना करें ता उमका तरफ सरकारका ध्यान खाच और सतोष मान न । अगर व चाह ता अपना सरकारका हटा सकत ह परन्तु उमके विरुध आगहन करके उसक कामामें बाधा न डाल । हमारी सरकार जमदस्त जलमना और स्थगसना रखनवाग बोई विदेशी सरकार ता है नहा । उसका बल ता जनता हा है ।

सच्चा गति किस तरह स्थापित की जा सकती है ? आप इस बातमें गामन गग न कि लिगामें फिस्म गान्ति स्थापित हाती जान पटना है । परन्तु म इम सतापमें हिम्मा नहा बटा सकता । हिन्दुआ और ममलमानार लि एक-दूसरस फिर गये ह । व पहा भा आपसमें लडा करत थ । परन्तु बहु लग्ग एक या दा तिनका रहना था और फिर इगक उमके बारेमें सब-कुछ भग जाता था । आज उनमें इतना अधिर बन्धाह पन हा गई है कि व मान गगे ह माना व सन्धियारे लुमन ग । इस तरहकी भावनाकी म कमजोरी मानता ह । आपना म जहर छा नना चाहिय । तभी आप एक महान गक्ति बन सकत ह । आपक सामन दा वालें ह । आप उनमें से किमा एकरा चुन सकत ह । या ता आप एक महान पौजा गक्ति बन सकत थ , या अगर आप भग माग अपनायें ता आप एक अहिंसक गति बन भा न जाना जा सकनवागी गक्ति बन सकत ह । लिगामें गग न गि कि पटना गन यह है कि आप अपना माग टा हू न ह ।

दिल्ली मंत्री सलाह पर अमृत बरण ता म दिल्ली छा सवुगा और अपना करा या मरा वा मिनत पूरा करनर लिए पाकिस्तान जा सकुगा । १

६६

## मन्त्री और जनता

नई दिल्लीका हाजिज गयब्रगेमें (ता २८-१२-४७ वा) व्यापारियाकी एक सभाम भाषण देन हण गांधीजान कहा म मममता हू कि अनाज पर जो जुगा लगाया जाता है वह बरा है । हिन्दुस्तानका हिल उसमें हो ही नहीं सकता । कपहरा अकुग भी हटना चाहिये । आज जब हमें आजानी मिल गई है ता उगमें हम पर कट्टाल क्या ? नवाहरलालजी सरदार पटल बगरा जनताक सबक ह । जनताकी इच्छाके विरुद्ध व कुछ नहा कर सकत । अगर हम उनसे कह कि आप अपने पदा परसे हट जाइय ता व वहा रह नग सकते । १

मने एसे लोगाको सरकारका विनाशात्मक टीका करत भा सुना है जो राष्ट्रक हाथमें आई हुई सत्ताको न खुद सभाल सकत ह और न उह सभालने देना चाहते जो इसके योग्य ह । लेकिन दूसरा तरफ मंत्रियाको उस प्रजाके सच्चे सवल बनना चाहिय जिसमें उह मत्ता मिंगी है । उह नौकरियाके बार्गमें पक्षपात नग करना चाहिय घूस खोरीकी बरातमें नहा फमना चाहिय और सबके साथ एकसा याय करना चाहिय ।

अगर बिहारके जमीन्दार रयत और सरकार तीना अपना अपना कतव्य पाते तो बिहार सारे हिन्दुस्तानके सामन सुदर उगाहरण पग करेगा । २

६७

## हमारी असफलता

इलाहाबादमें—जा कि काग्रमवा मुख्य बात है—साम्प्रदायिक दंग होन और उमके लिए पुर्निकवा हा रहा बाकि फौजवा भा युलानको जम्रत पडनस मादूम हाता है कि काग्रस जमी न पाय नहा हुई है कि त्रिटिंग सत्ताका स्थान ल मव । यह बात चाट तिननी अप्रिय लग गकिन अच्छा यहा है कि हम एस नग्न सयरा अनुभव पर और उगवा सामना कर ।

य दंग और दूमरी कुछ वानें एमी ह जिन पर हपें टहकर यह साचना हा चाहिय कि क्या सचमुच काग्रमवा जिगत हा रहा है और वह अधिराधिक गकिन प्राप्त करती जा रहा है ?

यह कहा जाता है कि जब हम स्वाधानता प्राप्त कर ग नर दंग तथा अय एसी वानें नहा हागा । जिन मुझ एसा लगता ह कि स्वतंत्रताकी लक्ष्य दरमियान अगर हम अहिंसात्मक बायब तत्त्वका अच्छी तरह समझकर प्रत्येक काननाय परिस्थितिमें उसका उपयोग न कर तो हमारा यह आगा थाया ही सावित हागा । जिस ह तर काग्रेती मन्त्रियाको पुलिस या फौजवा सहारा लेना पडा है उत ह तर मेरी रायमें हमें अपनी असफलता स्वीकार करनी हा चाहिय । क्याकि दुर्भाग्यवश यह बिगुल मव है कि मन्त्री लाग इगन गिग कुछ कर ही नहा सारत थ । अत मरा ही तरह मन्त्रि हरएक काग्रमवाता और काग्रस कायतामिति भी यह साचना हा कि हम अमफ न्निद हुए ह ता म चाहणा कि व हम बात पर विचार कर कि हम जगका क्या हुए । १

## आत्म-परीक्षणकी अपील

सयकन प्रातः दगाम मर हुयरा गहरा जापात लगा है। मन मोगगा जवः कगम जागा और वास-अधुनाक साथ अहिमाका गलिम गग पर चचा की। मज्र एगा उगा कि हम अपन ध्ययक समाप नहा जा रहे ह बलिः उससे दूर हः रह हः। हरिपुरामें मरे मनमें यह जागा पग हुई थी कि हमारी गकिन बढ़ना जा रहा है गीः हमारे दोषाक बावजूद म अपन जीवन-वाग्में स्वराय दख सरूगा। मन यह साचा था कि इस साल हम वह गकिन प्राप्त कर लग। गकिन इलाहानाद जीर दूसरी जगहोंमें जा दग हुए ह उनसे मर लिक्वा सख चोः उगी है। हमें पुलिस और फौजकी मः लेनी पनी यह हमारे लिए लजाजनक बात हुई। १

मयुकन प्रातमें हालमें जा दग हुए ह उाक सबधमें मेरी आठा चनाआकी जोर बहुतास ध्यान गया है। मित्रान मरे पास अखवारोकी कतरनें भजा ह। उनमें लिखित या मौखिक जागेचनाका एक मुहा यह है

(२) मन पयाप्त तथ्याके त्रिना अपनी बात लिखी है।

२ जहा तक तथ्याका सवाल है इतना ही पर्याप्त है कि दग हए फिर वे कितन ही छाट क्या न हा। काग्रसवादा अहिंसात्मक पद्धतिम उनका सामना नहा कर सके जीर उह गात करनके लिए पुःम और फौजका मः लेनी पडी। इन तीन मुख्य बातोंके बारेमें काइ मनभद नहा है। और म जिस निष्पप पर पहुंचा उसवे लिए पनना बातें काफी थी। वसमें भत्रिया पर कोई आक्षप नही है। बलिः यह बात म खुद स्वीकार कर चुका हू कि वे दूसरा कुछ कर ही नहा सत्रते थ। गकिन यह बात ता रहती ही है कि काग्रसकी अहिंसा सयकः समय कारगर सिद्ध नहा हुई। २

म इस ध्यानसे लज्जित हू कि हमारा मनियाका अपना सहायताक  
 लिए पुलिन और फौजका बुलाना पडा। उहान अपन विराधा स्वभाव  
 वकताजाके भाषणाक उत्तरमें जिस भाषाका प्रयोग किया उसक लिए  
 भी म लज्जित हू। एम मौका पर हम लोगानी अहिंसा अस  
 फल कम हा जाता है? तब क्या वह निवन्ताका अहिंसा है? हमारा  
 अटल श्रद्धासे हमें गुठ भी न शिगा सब और न यह कहनेक लिए  
 हमें याच्य कर सक कि जरूरत पडने पर हम उह फासीके तान पर  
 लटना गेंगे या गोलासे उडा देंगे—एसी हमारी स्थिति हाना चाहिये।  
 व भी ता हमारे ही देखावामा हू। यदि वे हमें मारना चाहते ह ता  
 एमा करनक लिए उह श्वेतत्र छोड दना चाहिय। आप निवन्ताका  
 अहिंसाका सगठिन हिंसाक मुकाबलमें खडा नही कर सकत। उसक लिए  
 तो बहादुरसे बहादुर लागोकी अहिंसा हा उपयुक्त हा सनती है। १

रात्रेसक जा हजारों मध्य हू व काप्रमक सदम्य धनन समय  
 जिस फाम पर हस्ताभर करत हू उसक परिणामाका क्या व जानत ?

क्या व सब मच्च अर्थोंमें सम्य ह? क्या नकरो मन्मथाका ज्ञान  
 नी अहिंसाके सिद्धातका भग नही है? उहा सम्य नाग नडा कितु  
 याम्नाविक ह क्या क्या प्रान्तका काप्रस कमटाने दगाका गान करनमें  
 अपना कतव्य पूरा करनक लिए उमम क्या है? हम उह म  
 प्रकार क्या नहा करत? और अगर कभी हम—हैं मक शिल कहे  
 ता दम हजारमें से कितने हजार मन्म उम पर ध्यान देंगे। अगर  
 पाच हजार या निफ एक हजार नी उम पर ध्यान दें आर लनवा  
 गाकाके बीचमें जाकर गडे हो जायें ता हममें काई गर नग नि  
 उनमें म कुछके गिर जरूर फट तापेग क्विन इग तरफ मगनवा  
 वही आगिरी आत्मी हाग। इगर वा औगने गिर पूनका जीवन नग  
 आयगी। लकिन म तभी हा गगता है तब अहिंसा धमक परिणामाका  
 भरोभाति समम शिवा जाय।

तब सच वास्तववादी तो ता एत अवतार पर पुलिस और फौजदारी मन्त्रालय दृष्टा या नया जानी चाहिये । एकिन अगर हमें एसा करना ही पड जगर हमारा अहिंसा बन्वानाया नहा बल्कि कमजोरायी अहिंसा है ता दुनियाका यह गमान दनक बजाय नि हम मन रचन-बममें अहिंसक ह हमार लिए अपन घ्ययका बदल दना याना जछा हागा । ४

६९

### नागरिक स्वाधीनता

नागरिक स्वाधीनताया जय अपराध करनकी आजादी नही है । जब कानून और व्यवस्था ढोक नियंत्रणमें हा तब तिन मंत्रियोंकी जधानतामें अ बाय विभाग हाते ह व एन दिन भी नहा टिक सकते अगर व मनमतके खिलाफ कुछ करन ल्यों । यह सच है कि धारा सभाण अभी समस्त जनताका प्रतिनिधित्व नही कर रही ह, तो भा मताधिकार इतना व्यापक जरूर हा गया है कि कानून और व्यवस्थाने विषयमें व राष्ट्रक मतका प्रतिनिधित्व कर सकें । आज दानके नात प्रातामें काप्रमका शासन चर रहा है । माकूम होता है कि कुछ लोगान तो क्मका अथ यट समझा है कि कमसे कम इन प्रातामें तो आत्मी जो चाहे सो कह और कर सकता है । पर जहा तक मन वास्तवका मनभावके समझा है वह इस प्रकारकी स्वच्छताको बरणास्त नहा करेगा । नागरिक स्वाधीनताने मानी यह ह कि साधारण कानूननी मर्यादाक अन्तर रहत हुए आदमी जो चाहे मा कह और कर । साधारण शास्त्रका प्रयोग यहा पर जान बूझकर किया गया है । विभापाधिकार दनवाले कानूनोकी बात छोड दीजिय । किन्तु ताजोरत हिंद और फौजदारी कानूनके अदर भी बिदना शासवान अपनी रक्षाके लिए कितनी ही धाराए डाल रखी



हैं। इन धाराओंका हम बड़ा जासनास डूढ सकत ह और उन्हें रद्द कर लिया जाना चाहिये। पर सच्ची कसौटी तो यह अर्थ होगा जो कानून और व्यवस्थाके मन्त्रियोंका कांग्रेसका कायसमिति बनायगा। इसलिए कायसमितिके मन्त्रियोंका माँगनाके लिए जा मूचनाएँ जारी कर रखा है उन्हें ध्यानमें रखते हुए मन्त्रों अपना सत्ताका उपयोग मराने बतलाइ मयाजाओंके भीतर उन लोगोंके खिलाफ कर सकते हैं जो नागरिक स्वाधीनताके नाम पर अराजकता और अव्यवस्थाका प्रचार करते हैं।

किसी किसीका कहना है कि कांग्रेस मन्त्रों तो अहिंसाके लिए प्रतिनाबद्ध हैं। इसलिए वे एक कानूनका उपयोग नहीं कर सकते जिसमें सजाका विधान है। कांग्रेस द्वारा स्वीकृत अहिंसाका जहाँ तक मैं समझता हूँ वहाँ तक यह खयाल ठीक नहीं है। मैं खुद अभी कोई ऐसा मामला नहीं खोज पाया हूँ जिसका मन्त्रों हर तरहका परिस्थितिमें भी सजाओं और दण्डात्मक प्रतिबंधोंके बिना काम चला सकें। निम्न सजाएँ अहिंसक ही जानी चाहिये — अगर यहाँ यह भाषा प्रयोग सही हो। जिस प्रकार युद्धशास्त्र अहिंसाकी एक विषय विधि है और उसमें सैनिक ऐसे तरीके तथा साधन चुने गये हैं जिनके धारकों पर किसीने सुना भी नहीं था उसी प्रकार अहिंसाका भी एक शास्त्र है एक वाय-मन्त्र है। राजनीतिशास्त्रके रूपमें अहिंसाका विकास होना अभी बाकी है। उसका विनाश गिनियाका तो अभी हमें पता लगाना है। अनेक क्षणों और बड़े पमान पर जब अहिंसाका प्रयोग हाल होगा तो हम विषयों में मनाघन भाँही मँगे। अगर कांग्रेसके मन्त्रों मन्त्रोंके जीवनमें विकास होगा तो वे हम मनाघनके कामका अपने हाथों में लेंगे। पर जब तक वे ऐसा करत हैं अथवा वे ऐसा कर पा न भाँ कर लें तक हममें तो यह शक नहीं कि वे अभी एक कार्यों या भाषणोंका बरगाने नहीं कर सकते जिनके अहिंसाका उत्तरना मित्ती है — न ही इस कारण उन्हें लागू हिंसक बर्तिताला बतारें। अब

गग देरें कि उरू एस मत्रियाका गवात्राका जखरत नरा है ता व अपन प्रतिनिधियाके गरिय अपना जगमति प्रवट कर दें। अगर बाग्य का आगम मत्रियाका वाइ रास गूत्रा न मिया हा। ता मत्रियाक गिण यद उचित हागा कि वे अपनी प्रातीय कांप्रग वमटाना या कायसमितिका यद गूत्रा कर दें कि उनरी रायमें जनानमें अमव व्यक्तिका व्यवहार हिमागा उत्तजित करनकाग है बार उसक बारमें प्रातीय गमिति या कायसमितिका जानू माग ॐ। अगर उनक उच्चाधिकारी उनरी सिफारिगारा स्वाकार न कर ता मत्रा अपन इस्तीफ पग कर दें। उह परिस्थतिका यहा तव रिगन्तका मौका हा नही नेना चाण्य कि फौजको बलानकी नौबत जा जाय। असलमें अहिंसाकी किसी भी योजनामें देगकी भातरी गान्तिके लिए ता फौजको जरूरत हा ही नहा सकता। और अगर किसी मत्रीका अपनी सहायताके लिए उस फौजको बुलान पर मजरूर होना ही पए — जो जनताके अधान नही है — तो म तो इस हमारो राजनीतिक गिवालियापन ही समझूगा।

म तो भारतीय गसन विधानका एक अथ यह गगाना ह कि गृह अनजानमें राष्ट्रीय काग्रसवालियाक लिए इस बातरी चुनौता है कि वे अहिंसाकी महत्ता और उसमें अपनी जटल थरुद्धा मिद्ध कर। अगर काग्रस दस बातका स्पष्ट प्रमाण द सकेगी तव ता अधिकार सरक्षण अपन आप बेकार हो जायग और अहिंसात्मक सधप अधवा सविनय अवाके विना भी काग्रस अपन लक्ष्यका मिद्धि कर गेगा। अगर काग्रस जनताके अन्तर अहिंसाका भावना इतना पूणतान साथ न कर सकी तव या तो उस अपना सिद्धांत छोन्ता पन्गा या जल्पसंग्राममें रहकर विरोध करते रहना पढगा। १

## तूफानके आसार

गोलापुरकी हालकी घटनास और बानपुर तथा जहमदाबादके मजदूरवाकी जगातिमें यह जाहिर होता है कि इस प्रकारके उपद्रवाकी गतिमें पर बाघसका नियंत्रण कितना सक्षम है। जरायम-पणा कहलानेवाकी जातियाके साथ पहल जिस तरह व्यवहार किया जाता था उससे अत्यंत भिन्न किसी प्रकारसे उनके साथ तब तक व्यवहार नहीं किया जा सकता जब तक इस बातका निश्चय न हो जाय कि वे क्या बरताव करेंगी। हा एक पक्ष जरूर पौरन किया जा सकता है। उनके साथ अपराधिया जसा व्यवहार न किया जाय। न तो उनसे हम डर और न उनसे घृणा कर बल्कि उनके साथ भाईचारा जाटने और उह राष्ट्रीय प्रभावके नाचे लानके प्रयत्न कर। यह कहा जाता है कि गोलापुरकी जरायम-पणा बरतीक जादमियाका लाने दंडवा (साम्यवादी) जरूर ही अंदर उभाडने ह। क्या वे बाघसके जाण्डा ह? यदि हा ता वे उन बाघसियाके पक्षमें क्या नहा ह जा कि बाघस का इच्छा आज मंत्रीपद पर आसान ह? और अगर वे बाघस जन नहीं ह तो क्या वे बाघसके प्रभाव और प्रतिष्ठाका नष्ट करवाकी योगिता कर रहे ह? यदि वे बाघसका नहा ह और बाघसका प्रतिष्ठाका नष्ट करना चाहत ह ता बाघसजन इन जातियाके पास क्या नहा पहुचे? और बाघसजन ऐसा बार्ड उपाय करनेमें जासय क्या रह जिगम उन लोगके पुस्तानेका इन जातिया पर बाइ अमर न पर जा इन जातियाकी आनुयायिक — कल्पित या वास्तविक — गिनामन प्रवृत्तियाका अनुचित लाभ उठान ह?

अन्ततया और बानपुरमें हमें क्या रणनीति अचानक और अनुचित रण पर हडताकी हानका जर लगा रहता है? भगतिन मज

दूग पर रहा जिगमें अपना प्रभाव डागमें बाप्रग क्या अरामय है? जिन प्रातामें जात्र बाप्रगा मशिया द्वारा दासन धल रहा है उनमें चगाा सरकारक जारी जिय दृण नाटिमाको हम अबिदवागनी नजरम न लमें। हम गर जिगगर सरकारक नाटिमाका कार्द मन्त्रक नहा जिया करत य बगा व्यवहार इन नाटिमाक गाय करनस याम नही चगा। अगर गगारा बाप्रसा मशिया पर विन्वास नहा है या हम उनस जसनुक ह ता ब जिना किसी पिप्टाचारक बरणास्त जिय जा सवन न। जिन जय तज हम उह मत्रीपद पर बन रहन दने ह तज तक उनक नोटिमा जीर जधीनको गारे बाप्रसजनाका पूण हादिक समथा मिगता चाहिय।

बाप्रसियोका पन् ग्रणण किसी और हालतमें उचित नहा ट्ट राया जा सवता। काप्रमजनाके सच्चे प्रयत्नके चावजूत अगर य उपद्रव पुत्रिम और फौजकी सहायता जिय बिना कावूमें नही लाय जा सवत ता मरी रायम बाप्रसक पद ग्रणणका तमाम बन् और अथ चला जाता है जीर उस हात्तमें जितनी जल्दी मना अपन पदा परस हट जाय उतना हा बाप्रस जीर उसकी पूण स्वाधीनता प्राप्त करनकी ग्नाईव हकमें बहनर हागा।

म मानता हू कि गोलापुरका जरायम-धगा वस्तीका उपन्व और जहमनावाद तथा कानपुरक मजदूरानी जगाति उन अतिरजित आगाभाक आसार ह जो कि मजदूरानी जीर तथाकथित जरायम पगा जातिया की भी हालतको जन्मूलस सुधारनके लिए दिगान् गई धो। तब तो बाप्रसको य उपन्व रोजनमें कोई कठिनाई नही होना चाहिये। अगर इसके विपरीत य बाप्रसके गासनकी कमजोराके चिह्न ह तब तो बाप्रसियाके पन् ग्रहणस उत्पन्न होनवाका सारी स्थिति पर फिरस ध्यान पूवक विचार करनकी जरूरत है।

एक बात निश्चित है। बाप्रसके सगठनको मजबूत बनान और उसमें स तमाम गदगीको बाहर निवालनकी जरूरत है। बाप्रसके

सम्बन्ध न सिर्फ कुछ लाख पुरुष और स्त्रियां हा बल्कि १८ वषते उपरान्त हरएक वर्गिण पुरुष और स्त्रियां उसका सम्बन्ध होना चाहिये फिर व किमा भी घमके हा। और काग्रेसक रजिस्टरमें उनके नाम इतलिया न्न किये जायें कि व राष्ट्राय स्वतन्त्रताकी लड़ाईके अर्थमें मय और अहिंसाक जाचरणकी ठीक ठीक तानीम और शिक्षण पायें। काग्रेसक बारेमें मरा हमारा यह कल्पना रही है कि वह सारे राष्ट्रको रजिनातिर गिना न्नेका मन्ने वन्न विद्यालय है। एरिन काग्रेस इस आन्नाका सिद्धिम जभा बहुत दूर है। सुननमें आता है कि काग्रेसके यठ रजिस्टर बनाय जात ह और मल्या बनानेकी गरजस उनमें सम्बन्धित झूठ नाम लिख लिय जात ह और जहा रजिस्टर ईमान दारात साथ तयार निय जात ह वहा मतानताआक निकट सम्बन्धमें रहनका प्रयत्न नहा किया जाता।

स्वभावत यह प्रश्न उठना है कि क्या हम मंचमुच सत्य और अहिंसामें ठास काम और अनुगामनमें तथा चतुर्विध रचनात्मक कायकर्मका शक्तिमें विश्वास करत ह? अगर करत न ता काग्रेसी मणियात चन् मनीनाके गामनमें यह गिनातक लिए काफी प्रमाण मिले प्रता है कि जब एन् स्वाकार किय गये व तयन पूण स्वाधी नता जात हमार अधिक निकट है। परन्तु यदि हमें अपने खदक परतन् किय हुए उद्देश्यामें विश्वास नहा है ता हमें आश्चय नही करना चाहिये जगर किमा तिन हमारी आलें गुन् जाय और हम दलें कि एन्-अन्धणका गिनामें कन्म रखकर हमने एक भारा भूष का थी। एन्-अन्धणका गिनामें एन् प्रवतन बल्कि प्रधान प्रवतनकी हैमियतसे मग अन्तरात्मा त्रिभुक्त स्पष्ट है। मन इस गयान्म एन्-अन्धणका मलाह दा था कि काग्रेसवाणी कुछ मिगवर न बवल लभ्य पर बल्कि सतरनापूण और अहिंसात्मक साधना पर भी न्न ह। अगर साध्यामें इस राजनीतिर श्रद्धा पर हमारा विश्वास नगी है ता मभव है कि एन्-अन्धण एक जाण साधित हा। १

## विद्यार्थी और हड़ताल

बंगलूरम कॉलेजका एक विद्यार्थी लिखता है

मन हरिजन में थापका एक पत्र है। जमान लिख  
' कसार्खाना विरोध लिख बंगराकी हड़तालमें विद्यार्थियोंका भाग  
लेना चाहिये या नहीं इस विषयमें मैं आपकी राय जानना  
चाहता हूँ।

विद्यार्थियोंकी बाणी और जाचरण पर लग हुए प्रतिबन्धका हटान  
की परवा मन जरूर की है लेकिन राजनीतिक हड़ताल या प्रदर्शनोंमें  
उनके भाग लेना समयन में नहा कर सकता। विद्यार्थियोंका अपनी  
राय रखन और उस प्रकट करनकी पूरी पूरी स्वतंत्रता हाना चाहिये।  
वे चाहे जिस राजनीतिक दलके प्रति खड़े तौर पर सहानभूति प्रकट  
कर सकते हैं। पर मरी रायमें अपन अध्ययन-कालमें उन्हें सक्रिय  
रूपसे राजनीतिमें भाग लेनी स्वतंत्रता नहीं होनी चाहिये। विद्यार्थी  
राजनीतिमें सक्रिय भाग लें और साथ साथ अपना अध्ययन ना जारी  
रखें यह नहीं हो सकता। राष्ट्रीय उत्थानके समय इन दानाके बीच  
स्पष्ट भेद करना मुश्किल हो जाता है। उस समय विद्यार्थी हड़ताल  
नहीं करते जयवा यदि एसी परिस्थितियोंमें हड़ताल का उपयोग  
किया जा सकता हो तो वह पूरी सामूहिक हड़ताल होता है उस  
समय वे अपनी पत्रिका स्थगित कर देते हैं। इसलिए जो प्रसंग अपवाद  
रूप दिखाई देना है वह असलमें अपवादरूप नहा है।

वास्तवमें पत्रलेखकन जो प्रश्न उठाया है वह कागसी प्रातामें तो  
उठना ही नहीं चाहिये। क्याकि कहा तो ऐसा एक भी अकुल नहीं  
हो सकता जिसे विद्यार्थियोंका थप्ट बग स्वेच्छासे स्वीकार न करे।

अधिकांश विद्यार्थी कांग्रेसी मनोवृत्ति के हैं और होने चाहिये। वे ऐसा कोई भी काम नहीं करण जिससे मंत्रियाधी स्थिति सड़क में पड़ जाय। वे हड़ताल करें तो वेबुद्ध इसी कारणसे करण कि मंत्री उनसे ऐसा कराना चाहते हैं। परन्तु कांग्रेस जब पढ़ावा त्याग कर दे और जब कांग्रेस कदाचित् तत्कालीन सरकारके खिलाफ अहिंसात्मक स्ट्राईक छेड़ देता उस प्रसंगके अलावा जहाँ तक मंथन करना कर सकता है कांग्रेसी मंत्रियों का भी विद्यार्थियोंसे हड़ताल करनेके लिए नहीं कहेंगे। और कभी ऐसा प्रसंग आ जाय तब भी मुझे लगता है कि प्रारम्भमें ही विद्यार्थियोंसे हड़तालके लिए पढ़ाई स्थगित करनेकी बात कहना मानो अपना दिवांग पाटना होगा। अगर हड़ताल जैसे किसी भी प्रश्नके लिए कांग्रेसके साथ जनसमूह होगा तो विद्यार्थियोंको—सिवा अंतिम सहारके रूपमें—उसमें शामिल होनेके लिए नहीं कहा जायगा। गत स्वातंत्र्य युद्धके समय विद्यार्थियोंका सबसे पहला उसमें शामिल होनेके लिए नहीं कहा गया था। मुझे जहाँ तक याद है मंत्रय अन्तमें उनसे कहा गया था—वह भी अत्रल कौन्सिलके विद्यार्थियोंमें।

जहाँ ही कि एक अध्यापक पत्र पर मन १८ सितम्बरके हरिवन में शिक्षामंत्रियोंके प्रति शीपक जो लख लिखा है उसमें पत्रकारों पर जाय या दुबारा पत्रों। विद्यार्थियों और अध्यापकोंका राजनानव स्वतंत्रताके विषयमें भर विचार उम लक्षमें उह मिल जायेंगे।

अब हमें एक मन्त्रय इसी सम्बन्धमें लिखते हैं

अगर हम सरकारके बतनभागा अफसर अध्यापकों और दूसरे कामचारियोंको राजनीतिमें भाग देने देंगे तो सब कुछ चाप हू जायगा। सरकारी नीति पर जिन सरकारी अफसरोंका जमा करण है वे हू अगर उम नानिक सम्बन्धमें बात चिया करण लग जायें तो कोई भी सरकार च नहू सकता। आपकी यह अधिकांश उचित ही है कि राष्ट्रका आजा

जागृताओं और दगाभक्तों विचारों का प्रकाश करने का पूरी स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। पर मस भय है कि आप अपनी स्थितियों अगर विलुप्त स्पष्ट नहीं करेंगे तो आपका काम गन्तव्यमा पत्र ही सकती है।

मरा खयाल था कि मन अपन विचारों का विस्तृत स्पष्ट रूपमें प्रकाश किया है। जहां राष्ट्रीय सम्भार होता है वहां उसका तथा उसके अधिनायिका और विद्यार्थियोंके बीच सापेक्ष ही को मध्य होना है। मरे उक्त लेखमें अनुशासन भंग प्रति ता चलावना है न। उन अध्यापकका राय तो इस बात पर है कि अब भी विद्यार्थियों पीछे जागृत होने जाते हैं और उनका स्वतंत्र विचारों का बुद्धि जाता है और उनका यह राय उचित ही है। कांग्रेसकी मंत्री सद प्रजाक ह आर प्रजामें से ही आप ह। उन्हें काइ बात स्पष्ट नहीं रखना है। उनमें आशा तो यह की जाती है कि वे हरएक मावजनिष्ठ प्रवृत्तियोंसे व्यक्तिगत सम्पर्क रखेंगे — जिसमें विद्यार्थियोंका मानस भा जा जाता है। कांग्रेसका सारा तंत्र उनका हाथमें है और चूंकि यह मंत्र प्रजाकी इच्छाका प्रदर्शक है अतः उसकी शक्ति कानून पुलिस और फौजकी अपेक्षा विशिष्ट ही अधिक है। जिन्हे इस प्रकारके लोक तंत्रका समर्थन प्राप्त नहीं है व वद्वके काममें गाय हुए खाने कारतुसके समान ह। जिन मंत्रियोंके पीछे कांग्रेसका बल है उनके लिए कहा जा सकता है कि कानून पुलिस और फौज केवल उपरी शासकी चीजें ह। और कांग्रेस का अनुशासनकी नियमपाठनका मूर्ति है अगर यह बात उममें न हो तो फिर उसमें और रखा ही क्या है? इसलिए कांग्रेसका शासन-कार्यमें नियमका पालन सख्त मज बुरन रहा बल्कि स्वच्छाम ही होना चाहिये। १



## क्या यह पिकेटिंग है ?

एक गिवायत यह है कि गात पिकेटिंग नाम पर घना जनता  
 गण एम उपायाका सहारा ले रहे जा हिताका ह तक पहुच जात  
 ह—जम व जिला आत्मियाका खडा बरक नीवार-भी बना जन  
 जिम खु अपतता या दावार जनानवागता चा पचाये बिना का  
 पार नही कर सकता। गाल पिकेटिंग मेरा चरण हू है लकिन  
 मुने एगा एक भी उपाहरण या नहा निगमें मन एसा पिकेटिंगका  
 प्रात्यान लिया हा। एक मित्रन इम मरयमें धरामनारा खाला लिया  
 है। वहा मन नमनक कारवान पर अधिभार रग्नेकी बात जर मुनाइ  
 था लकिन इम माममें वह बात बिचकु गमू जा हाती। धरामनामें  
 ता हमारा नय नमनक कारवाने पर था जिस मरदारक नयम  
 छानकर हमें अपने अधिभारमें जना था। उम बायना पिकेटिंग गाय  
 ही बग जा मरता है। लकिन यह ता गठ लिया ह कि कमचागिया  
 या मजदूरगक आग सडे हाकर उहें अपने काम पर जानेम राता जाय।  
 लकिन इम तो छो हा दना चानिय। ऐसा करनवाये बाग्रमना  
 अगर इमग वाज न आयें ता मिग या अच कारवाननि मागिका  
 गक गि पुगिया मर जना बिचकु उचिन हागा और बाग्रमा  
 मगराका य मर दना हा हागा। १

जिम (इमरा) अमगतनाका मुन पर आराव लगाया गया है  
 उ कारवानकारा दी ग मरा य मर है नि जिम मने लिया  
 रमा पिकेटिंग बडा है उमग अपनी रगा करन गिए व पुगिका  
 मर न मरत ह। मर आवाचका य रगा है कि दगाका नानक  
 गि मत्रि मरान पुगि और पीरता जा मर ग जगवा निग

वरना या म मजदूर राजवा मालिगाना पुलिसका मन्त जौर मत्रियान वमी मन्त नेनर गिण वग वह सतता हू ?

मयतत प्रान्तक मत्रियाके काम पर हरिजन में मन जा कुछ गिया था वह इस प्रकार है

यह बन्ना जाना है कि जय हम स्वाधानता प्राप्त कर गेय तत्र ग्य जौर जय एसा वाने नही हागी। त्रिन मुझ एसा गता है कि स्वतंत्रता-संग्राममें अगर हम हिंसात्मक कायना पद्धतिका ज-छी तरह समगकर हरएक कल्पनीय परिस्थितिमें उसका उपयोग न कर ता हमारी यह आगा थोयी ही मिद्ध होगा। जिस हृद तर काग्रसा मत्रियाकी पुलिस या फौजका सहाय लना पडा है उस हृद तक मेरी रायमें हमें अपना असफलता स्वीकार करनी ही चाहिय। क्योकि दुर्भाग्यवग यह विलकु सच है कि मत्री लाग इसक सिवा कुछ कर न नहा सकते थ। अत मेरी ही तरह अगर हरएक काग्रसवाणी जौर काग्रस कायममितिवा भी यह खयाल हा कि हम असफल हुए ह ता म चाहगा कि वे इस बात पर विचार कर कि हम असफल क्यो हुए।

निश्चय ही इसमें मत्रियाके कायकी कोई गिना नही है। मन ता पुलिसकी आवश्यकता पडने पर उसा तरह दुख प्रकट किया है जसा कि पिकेटिंगके माममें भी एसी आवश्यकता पडन पर म करगा। त्रिन जब तक हिंसात्मक अपराधाका सामना करनके लिए काग्रस कोई गतिपूण पद्धति न निकाउ त्र तत्र तक काग्रसी मत्रियाको अगर दगाकी मौजूदा हालतमें उसके गसनका भार सभालना है तो उह पुलिसका और मझ भय है कि फौजका भा उपयोग करता ही पन्गा। यह जरूर है कि अगर व कोई एसा पद्धति न ढन निकालेग जिसम पुलिस और फौजके उपयोगरा जरूरत हा न रहे या कमम कम

उनका प्रयोग इतना कम कर दिया जाय कि देवनेवालेका वह काम साफ मालूम पन्न लग तो उनका सिंग वह दुभाग्यकी बात होगा। २

और पिक्टिंगका क्या हा? जा लोग बडास वनो कठिनाइयाँ बाध जैसे-तैसे गामनक भारी बातको उठाये हुए ह उनका घरा या दफतर पर जाकर बच्च या बच् उह गालिया दें यह अमहनाय है। सत्याग्रही दृष्टिसे जब तक इसका कोई सही उपाय हमें न मिले तब तक मंत्रियाका इस बातको छूट हानी हा चाहिये कि एस अपराधाक लिए जा तराका उह सभसे अच्छा लगे उसका व उपयोग कर। अगर य लग एसा न करे ता वाग्रमा रायमें जा स्वतंत्रता सम्भव है वह जल्दा ही बिगडकर छड गुडपनका रूप ले लगी। वह मुक्तिरा माग नहा रलिक सवनाका सबसे जासान राजमाग है। इसलिए कार्द भी बफानार मन्त्री देाके भवनाका निमित्त वननभ दत्ताक साथ इनकार करेगा। ३

७३

## मन्त्रि-मडल और सेना

प्राचीय स्वतंत्रता जमा कुछ भा था है सविनय बाबूत भागवत द्वारा—किर यह कितन ही नीचे दर्जेका क्या न रहा हा— हागिन् की गई है। केकिन क्या यह महमूम नया किया जाता कि आर बायमी मन्त्रा गुठिग और फौजरा अधान प्रिन्सि तापाका सग यताक पिना अपना काम न चग गकें तो वह स्वतंत्रता सतम हा जायेगा? अगर आगिक प्राचीय स्वतंत्रता अहिंसात्मक उपायगि प्राप्त का गद है ता उमरी रगा भा उहा उपायाग—किहा दूनर उपायगि नगी—की जानी चाहिये। हागकि पिछ् २० थपनि— सबाधिन जन जागुतिरा इस विधिमें—तननारा हथियाराका त्रिनमें इटरेत्वर और लागी भा गामिल ह प्रयाग न करने और एरमात्र

अहिंसाका ही अपनानवा गिना दा जाना रहा है फिर भा हम जानत ह कि जनताकी तरफसे जानवाग वास्तविक या वाचनिक हिंसाका दमनक लिए काग्रसी मद्रियाका हिंसाका प्रयोग करनक लिए मजबूर हाना पडा है। तब क्या हमारी ज्जिमा कमजोराकी ज्जिमा था? १

७४

## काग्रसी मत्री और अहिंसा

श्री गकरराव देव लिखते ह

लोगोकी समझमें यह बात नहा जा रही है कि जो लोग अपनको सत्याग्रही कहते ह व मत्री बनत हा पीज जीर पुलिसका उपयोग क्या करन गते ह। लोग मानते ह कि घम या व्यवहार (नीति) के रूपमें माना ह अहिंसाका यह भग है। और उपरो विचारस यह सब भी मालूम हाता है। काग्रसी मद्रियाके विचारमें और व्यवहारमें यह जा विरोध दिखाई दता है उसका समयन करना आसान न होनक कारण हमारे वायकर्ता उत्थनमें पत्र जाते ह। और इस विसर्गनिक गम उत्थानवाले काग्रसी या गर काग्रसी प्रचारकाका मुकाबला करना उनके लिए मुश्किल होता है।

आम लौर पर काग्रमियाकी अहिंसा कमजोराका ज्जिमा ही रही है। हिंदुस्तानकी आजकी हालतमें यहां हो सकता था इस ती आप भी जानते ह। आप कहते ह कि दलवानकी अहिंसामें तज होना है। फिर भी कमजोराको दलवान बनानके लिए आपन अहिंसाका उपयोग स्वीकार किया। तना ही नहीं बल्कि आप उनके गता भी बन। इस तरह कमजोर जान हए भी आज उनके हाथमें सत्ता जाई है। यह असभव है कि जो

लोग अश्रुजी हुक्मनके खिलाफ अहिंसास लड़े, व ही अब अपने हाथमें सत्ता लेकर दामें दगा फमात्के समय भी अहिंसाका उपयोग करके उस मिटानका तयार हा। अगर वे ऐसा वागिंग कर भी तो न व अपना वागिंगमें सफल हागे और न उह इस काममें आम आगोकी हमदर्दी ही मिटेगी।

मन एक धार आपसे पूछा था कि क्या सत्याग्रहा अपने हाथमें सत्ता या हुक्मनतका वागडोर ले सकता है? अगर वह ले सकता है तो उस सत्ताके जरिय वह अहिंसाका बस जाग बना सकता है? वृथा करके आप इस पर ध्यान प्रकाश डालिये। जिसने अहिंसाको धम माना है वह कभी सरकारमें शामिल होना पसन्द नहीं करेगा। धीरे मेरी राय है कि उस ऐसा करना भी नहीं चाहिये। लेकिन मैं मानता हू कि जिन्होंने अहिंसाका केवल नीति या व्यवहारकी दृष्टिस अपनाया है उनके लिए पत्र ग्रहण करनेमें कोई त्किन्त न होना चाहिये। बहुतरे वाग्र सियाने मंत्रीपद मभांग हू और इसका गिग आपने उह राजाजन भी दी है। एसी हागतमें सवाल यह उठता है कि उन मंत्रियामें जिनका अहिंसामें विश्वास है उनका आपका यह आगा रचना कहा तब उचित है कि वे खु ता दगा फमात्के मौका पर अहिंसाका ही उपयोग करे? अहिंसाके द्वारा सत्ता प्राप्त करनेका वाद उसका इस प्रकार कने उपयोग किया जाय कि जिससे हुक्मन ही अनावश्यक हा जाय? अगर एमा काइ माग आप न सुनायेंगे तो हमारे अपने ध्यय तक पत्रचनमें सत्याग्रह एक अपूरा साधन माना जायगा।

मेरी दृष्टिम इसका उत्तर आगान है। वृत्त समयम मन यह फटना गुरू कर लिया है कि वाग्रमने निधानका समय और अहिंसा गल्लारी हाग देना चाहिये। अगर हम यह समझकर चरें कि वाग्रमक निधानने य होना चाहें या न हें फिर भी हम ता इन शानक

दूर चली गयी है ता हम स्वतंत्र रूप से यह समझेंगे कि कोई काम नहीं है या नहीं।

म मानता हूँ कि जब तक भीतरी गति बनाए रखने के लिए फौज या पुलिसवा भी उपयोग होगा तब तक हम ब्रिटिश हुकूमत या दूरी जिमा विना हुकूमत में अर्थ ही रहेंगे — फिर चाहे दंगा गाने का प्रयोग ही हो या दूरी का प्रयोग। मान लीजिये कि काग्रेस मंत्रिमंडल अहिंसा में विश्वास नहीं है। यह भी मान लीजिये कि लागू अर्थानि हिंदू मसलमान और दूसरे हिंदुस्तानी सना और पुलिसवा सनारा चाहते हैं। अगर व यह सहारा चाहते हैं तो वह उन्हें मिला देगा। जो काग्रेसी मंत्री अहिंसामें पूरा विश्वास रखते हैं उन्हें सना या पुलिसकी मसल सना अच्छा नहीं लगगा। इसलिए व इस्तीफा दे सकते हैं। इसका जय यत् हुआ कि जब तक अगामें आपसमें फसल करने का शक्ति नहीं आ जाता तब तक दंगा फसल होने रहेंगे और हममें अहिंसाका मज्जा बल पाना ही नहीं होगा।

जब सवाल यह रहता है कि ऐसा अहिंसक बल कैसे पाना हो सकता है? इस सवालका उत्तर जहमलानास जाय हुए एक पत्रके उत्तरमें ४ अगस्त १९४६ को मैं पहले एक बूंद लेखमें दे चुका हूँ। जब तक हमारे हृदयमें बहादुरी और प्रेमके साथ मरनेकी शक्ति पाना नहीं होनी तब तक हम वीरोंकी अहिंसाके विकासकी आशा नहीं रख सकते।

अब सवाल यह है कि आत्म समाजमें कोई रायसत्ता होगी या वह एक बिलकुल अराजक समाज बनगा? मेरे विचारसे ऐसा प्रश्न पूछनेसे कोई लाभ नहीं होगा। अगर हम ऐसे समाजके लिए मेहनत करते रहें तो वह कुछ हद तक धीरे धीरे बनता रहेगा। और उस हद तक लोगोंको उससे लाभ पहुंचेगा। यकिनडने कहा है कि रेखा बनी हो सकती है जिसमें चौड़ाई न हो। लेकिन ऐसी रेखा न तो आज तक कोई बना पाया है और न आगे बना पायगा। फिर

भी रेखाका ध्यानमें रखनेके कारण ही हमन भूमितिमें-प्रगति की है। महा बात प्रत्यक्ष आत्मन वारमें सच है।

इतना हमें जरूर याद रखना चाहिये कि आज दुनियामें बहा भी अराजक समाज अस्तित्वमें नहीं है। अगर ऐसा समाज बभा बना बन सकता है तो उसका जारम हिन्दुस्तानमें ही हो सकता है। क्याकि हिन्दुस्तानमें ऐसा समाज बनानेका योग्यता की गई है। आज तक हम आखिरी दरजकी बहादुरा नहीं किया सके। परन्तु उसे स्थानिका एक ही भाग है और वह यह है कि जो लोग उसमें विश्वास रखत हं वे उसे अपने जीवनमें सिद्ध कर लिये। ऐसा करनेके लिए हमें मृत्युका भय उसा तरह छोड देना होगा जिस प्रकार हमन जगका भय छोड दिया है। १

७५

### सचमुच शमकी बात

जिम अहमदाबाद शहर पर सरकार बल्लभभाई पटेलका नाज रहा है और जिसकी म्युनिसिपलिटामें उमान प्रथम श्रेणिका वर्तियाणी काम किया है उससे आज भगवान हट गया है। अहमदाबाद हिन्दू और मुसलमान हमारा एक-दूसरेके साथ मित्र-जुकर शान्तिमें रहन जाये हं। शरिन मानूम जाना है कि इधर अहमदाबादवाग पर पागल्पन सवार हो गया है। इससे गांधीजीको अपार चला हुई है। प्राधिकाव वा अपन एक भाषणमें उहान कहा मानूम जाना है कि अहमदाबाद के हिन्दू जोर मुसलमान हैरान बन गये हं। अहमदाबादमें पिछले शिका जा लोग मार गये हं वे गज कराम या एक ही दूमेरे हवियारमि रिय गये आश्रमणमे गये मर गये। यह सचमुच एक शमकी बात है कि एक-दूसरेका गला काटनन शान्ति लिए पुत्रिम और शनावा मरनी पशनी है। अगर एक पक्षन गज चला गया वा कर गे ता

दगा ताग बन् हो नहा। हिन्दुस्तानक ४० कराण लागामें स कुछ लाख लाग गन्ना दगल मारे जाय या मर मिठें ता उनमें क्या हज है? अगर व बिना मार मरनका मरन साप सकेँ ता अनिहाग और पुराणामें कमभूमिन नामसे प्रसिद्ध भारतवष स्वगभूमि बन जाय।

गांधीजीन वम्बइ सरकारक गृहमन्त्री श्री मारारजी दसाईने जा जन्मनासाँ जानस पटल उनम मिठन जाय व फल या कि उहें अकेले एन क्करवे तगम इस आगाँ सामाना वगना चाहिय और इम बुधानमें पुलिस या सनाकी मदद नहा न्नी चाहिय। अगर जरूरत सममें ता व सत वस आगना बुधानका कारिणामें श्री गणेशकर विद्यार्थीकी तरफ मर मिठें। श्री मारारजी दसाईन जहमनावान पहुचकर वहाके हिन्दुजा और मसलमानाके प्रतिनिधियाका एक सयुक्त बाफरेस बुगइ जीर उनस कहा कि अगर आप चाहें तो गहरस पुलिस और सना उठा लेनका भरी तयारी है। क्विन वग जाय हुए तगोन एकराय होकर उनस कहा कि हम एसा कोई खतरा उठानकी तयार नहा न। परिणाम यह हुआ कि गहरमें पुलिस जीर सना बनी रही। इस पर गांधीजीन अत्यंत चिन्तित होकर कहा इस तरीकेसे कुछ समयक लिए जहमनावाँमें दग फसान जरूर रक गय ह। लेकिन आज वहा जा गाति दिखान् दती है वह तो स्मगानकी गाति है। उस पर किसीकी बाइ नाज नहा हा सकता। काण हिन्दू और मुसलमान दोना मिठ जात और उह आपसक थगणेसे दूर रखनक ठिण बुलाई गई पुलिस जीर सनाकी मदद लेनसे वे इनकार कर दते।

गांधीजीन लोगोको चेतावनी दते हुए कहा कि जब तक वे गाति जीर कानूनकी रक्षाके लिए पुलिस और भागीकी मदद लेते रहेंग तब तक सच्चा आजादीकी बात निरी बकवास ही रहेगी। १



## विभाग - १२ विविध

७६

### प्रातीय गवर्नर कौन हो ?

यह पत्र आचार्य श्रीमन्नारायण जयवाले ने वर्धास हिंदीम लिखा है

एक सवाल है जा मर खयालस महत्त्वका है और जिसके बारेमें म आपका राय जानना चाहता हू। भारतका जा नया विधान बनाया जा रहा है उसमें प्रान्तावे गवर्नर चुननेक लिये नियम रच गय हं। प्रांतका गवर्नर उस प्रांतक सभी नागरिक मतसे चुना जायगा। इसलिए यह साफ जाहिर है कि जिस काँग्रेसवा पार्टीयामटरी बाल चुनगा उसे हा आम तौरम प्रान्तकी जनता गवर्नर चुन लगी। प्रान्तका मुख्यमंत्री भी काँग्रेस पार्टीका हा हागा। प्रांतका गवर्नर एमा ही व्यक्ति हाना चाहिये जा उस प्रांतका पार्टीवाजीस अलग रह। केकिन अगर प्रांतका गवर्नर आम लोगस काँग्रेसी हागा और उसी प्रान्तका हागा ता वह काँग्रेस दलका पार्टीवाजीस अलग नया रह सकेगा। या ता वह काँग्रेसी मुख्यमंत्रीक लिये पर चलेगा या फिर गवर्नर और मुख्यमंत्रीके बीच कुछ न कुछ गाचाताना रहेगा।

मर खयालस ता प्रान्तमें अत्र गवर्नरकी जरूरत हा नहा है। मुख्यमंत्री ही सब कामकाज चला सकेता है। जनताका ५५०० रु मासिक गवर्नरक बतन पर व्यय ही क्या खच किया जाये? फिर भा अगर प्रान्तमें गवर्नर रखने ही हं, ता वे गंगा प्रान्तके नयी हाने चाहिये। बालिय मतसे उन्हें चुननेमें भा

यकारका मत और परगानी हागा। यहा जटा हागा कि मधका राष्ट्रपति हर प्रातमें दूगरे किमी प्रातना एमा प्रनिाणत वाप्रती राजन भज जा उस प्रान्तरी पार्तिप्राजमे अलग रहकर वहाके साबजनिव और राजनीतिव जावना ऊना उा मन। जाज प्राताव जा गवनर केंपीय सरकारन नियुक्त निय ह वे करीव करीम इहा सिद्धान्तान अनुसार चुन गय ह एमा गता है। और इसलिए प्रातना राजनातिक जीवन भी टाक हा षठ रहा है। अगर स्वतंत्र भारतक आगामा विधानमें उसा प्रान्तना आत्मी बालिग मतस चुननका वापस रया गया ता मुय उर है कि प्राताका राजनातिक जीवन ऊचा नहीं रह सकगा।

उस विधानमें ग्राम-पचायतका और राजनीतिक सताको छोटी इकाइयामें बाट देनेका कोई जिन नहीं किया गया है। किन मेरा उद्दय जपा पूय ननाआवी टाका करना जरा भी नहीं है। जो चाज मझ खटकती है उस पर म आपका राय जानना चाहता हू।

आचायजीन प्राताय गवनराके वारमें जा कहा है उसके सम धनमें कहनको तो बहत है। किन मुझ कबूठ करना होगा कि म विधान परिपदकी सब कारवाई नया देख सका हू। मने एतना भी मात्रूम नहीं है कि गवनरके चनावका प्रस्ताव किस तरह पना हुआ। इसको न जानते हुए भी मुन आचायजीकी दलील मजबूत गना है। उसमें यह चीज मय चभती है कि मुख्यमत्रीको गवनर समझा जाय जोर किसी दूसरेको गवनर रहा बनाया जाय। इसके बावजूत कि गगाकी तिजोराकी कौनी-कौडीको बचाना मुझ बत पसद है पसेना बचनके लिए प्रान्तीय गवनराका सस्थानको एतम उठा देना सही जयगास्त नहीं हागा। गवनरको हस्तक्षप करनका बहुत अधिकार दना ठीक नहा है। बसे हा उनको सिफ शोभाके पुतके बना देना भा ठीक नहा हागा। मत्रियाके कामको सुधारनका अधिकार उंह होना चाहिय।

प्रान्तकी सटपट्स अरुग हानके कारण भी वे प्रातका कारोबार ठीक तरहसे दस सकेंगे और मरियाका गलतियामि बचा सकेंगे । गवर्नर योग अपने अपने प्रातकी नीतिये रखव हाने चाहिये ।

आचायजी जसा बताते ह अगर विधानमें ग्राम-पचायत और मत्ताकी छोटी इकाइयामें वाग्न ( विवेकीकरण ) के बारेमें इगारा तर नहा है तो यह गलती दूर हाना चाहिये । अगर आम जनताकी राय ही हमारे लिए सब कुछ है ता पचाका अधिकार जितना ज्यादा हो उतना योगाके लिए अच्छा है । पचाका कारवाई और प्रभाव लाभ दायक हा इसक लिए योगाकी सहा शिक्षा बहुत आग बढनी चाहिये । यह योगाकी फौजी ताकतया बात नहा है बलिन नतिव ताकतकी बात है । इसलिए मेरे मनमें नो ताकीममे नई तागामका ही मनलस है । १

७७

## भारतीय गवर्नर

१ हिन्दुस्ताना गवर्नरका चाहिय कि वह सब पूरे समयका पान्न करे और अपन जागपान समयका वातावरण सदा कर । इसक बिना गराबवदीके बारेमें सोचा भी नहा जा सकता ।

२ उसे अपन आपमें और अपने जासपान हाय-बनाइ और हाय-धुनाईका वातावरण पना करना चाहिय जा हिन्दुस्तानके कराटा मूव लोगाके साथ उसकी एबतामी प्रकट निगानी हा 'मेहनत करके गनी बमाने की जरूरतया और सगलिन हिमाके विचार — निग पर जात्रका समाज तिका हुआ मामूम हाता है — सगलिन अहिमा का जीता-जागना प्रतीक हा ।

३ अगर गवर्नरका अच्छा तरह काम करना है ता उस लागका निगानमि धव हुए और फिर भी गवकी पूढुक्क लायक छानम मरानमें रचना चाहिय । ब्रिटिन गवर्नर

सत्ताको जियाता था। उसके लिए और उमके अंगके लिए सुरक्षित महल बनाया गया था—एसा महल जिसमें वह और उमके साम्राज्यकी टिकाय रखनवाए उसके सेवक रह सके। हिन्दुस्तानी गवर्नर राजा-नवाजा और दुनियाक राजदूताका स्वागत करनके लिए थोनी गान गौकतवाणी इमारतें रख सकत ह। गवर्नरके महमान बननवाले लोगका उसके व्यक्तित्व और जासपासक वातावरणमें ईवन अण्डरिय गस्ट (सर्वोच्च) —सम्पन्न साथ समान बरताव—की सच्ची शिक्षा मिलनी चाहिये। उसके लिए दानी या विदानी महग फर्नीचरकी जरूरत नहा। सादा जीवन और ऊंच विचार उसका आत्म होना चाहिये। यह जान्य सिर्फ उसक दरवाजकी ही गामा न बनाय बल्कि उमके राजके जीवनमें भी जियाई है।

८ उसके लिए न तो किसी रूपमें उन्हाछूत हो गवती है और न जानि घम या रगका भय। हिन्दुस्तानका नागरिक होनका नाते उसे सारी दुनियाका नागरिक होना चाहिये। हम पढते ह कि खनीफा उमर एसी तरह सादगीसे रहत थे हालाकि उनके कदमा पर गला-कराडाकी दौलत गेटती रहती थी। उसी तरह पुराने जमानमें राजा जनक रहते थे। इसी सादगीसे ईटनके मुख्याधिकारी उसा कि मन उहे देखा था अपने भवनमें ब्रिटिश द्वीपके सामन्तों और नवाबोंके आवाक वाच रहा करते थे। तब क्या करोडा भूलाकि देग हिन्दुस्तानके गवर्नर इतनी सादगीसे नहीं रहेंगे?

५ वह जिस प्रान्तका गवर्नर हागा उसकी भाषा और हिन्दुस्तानी बोलेगा जो हिन्दुस्तानकी राष्ट्रभाषा है और नागरी या उर्दू लिपिमें लिखी जाती है। वह न तो संस्कृत भाषासे भरी हुई हिंदी है और न फारसी भाषासे लाना उर्दू। हिन्दुस्तानी दर असल एक भाषा है जिसे विन्ध्यचलके उत्तरमें करोडों गण बोलते ह।

हिन्दुस्तानी गवर्नरम ना जो गुण हान चाहिये उनका यह पूरी सूचा नहा है। यह तो सिर्फ मिसालक तौर पर दा गइ है। १

## गवर्नर और मन्त्रीगण

गवर्नरका वक्तव्य और अधिकार अपने मन्त्रियाका गायकी नीतिकी भाग्य मोटा घाता पर सत्ताह दना और अमुक सत्ताआ पर अमल करनमें रहे खतरेके चारमें उह सावधान कर दना है। परन्तु इतना करनके बाद उह अपन मन्त्रियाका उनक स्वतंत्र निणय पर अमल करनके लिए छात्र दना चाहिये। अगर ऐसा न किया जाय, ता जिम्मे दारी गन्वा कोई अथ नहां रह जायगा और जो मन्त्री अपने मत दाताआव प्रति जिम्मेदार ह उनक हिम्समें अपमान और अनादरक सिवा दूसरा कुछ नहा आवेगा—यदि कानूनक द्वारा उनके हाथमें सीधे गय दनिक राजराममें अपनी जिम्मेदारीका उह गवर्नरके साथ बाटना पः। १

## किसान प्रधानमन्त्री

एक भाईन मुग्ग किसानकी बात की। मन कहा मरा चः तो हमारा गवर्नर-जनरल विमान हागा हमारा प्रधानमन्त्री किसान होगा सब-कुछ विमान हागा क्याकि यहाका राजा विमान है। मुगे बचपनमें सिखाया गया था ह किसान तू बाणाह है। विमान जमीनक अनाज पः न बने ता हम क्या खावेंगे ? हिन्दुस्तानका मल्का राजा ता बही है। किन आज हम उरो गुगाम बातर बडे ह। आज किसान क्या कर एम ए बने ? बी ए बन ? एमा किया ता विमान मिः जायगा। राममें थः बुणाः नही चःपया। जा आत्मी अपनी जमीनमें न अन्न पदा करता है और म्नाता है वह जनरल बन प्रधान बने ता हिन्दुस्तानका गवः बन जायगा। फिर आज जा सहाथ है वह नहा रगा। १

## प्रधानमंत्रीका श्रेष्ठ काय

हिंदू जीर सिवस गरणाधियाक बघ्याना उल्लेस करते हुए गाधीजान कहा पन्तिजीना म जानता हू । उनक पास अगर एक गींग और एक मूखा दा बिछीन हाग तो व मूख पर किसा दु खीको मुगामेंग और गीला खु लय या बसरत करव अपन गरीरका गरम रखेंग । म यह पन्वर बहुत खुग हुआ कि उनका घर महमानसि भरा रहन पर भी वे कहते ह कि म अपन घरमें दा एक कमरे गरणाधियाके लिए निकाल दूगा । उनमें दु खियाको रखूगा । एसा ही दूसरे बडे धनी गोग और फौजी अपसर भी कर तो कार् दु खी नहा रहेगा । उसका बडा असर होगा । इस मुदर देगमें हमार पास एसे रत्न ह । दु खी जब देखगा कि वह अकेला नहा है उसक साथ जीर भी गोग ह तो उसका दु ख दूर हागा और व मसलमानाके साथ दुश्मनी नही करेगा । १

एक भाई लिखते ह कि जवाहरगलजी दूसरे मत्री और फौजी अपसर वगरा सब अपने अपने घरोंमें से कुछ जगह गरणाधियाके लिए निकाले तो भी उनमें कितन गोग बस सकते ह ? कहनवाले ज्याग ह करनवाले कम ।

ठीक है । कुछ हजार ही उनमें रह सकेग । काम बनना बडा नही है पर करनवाले एक उगाहरण सामने रखेंग । इगुडक राजा कुछ भी त्याग कर एक प्यागी गराव भी छोडे तो भी उनकी कदर होती है । सब सम्य देगोंमें एसा होता है । पन्ति नहहन सार देगके सामने एक सुन्दर उदाहरण रखा है । एसीलिए दिल्लीकी तरफ अधिक धरणाधी आकर्षित हो रहे ह । जाहिर है कि उह लगता है कि दिल्लीमें उनके साथ उत्तम व्यवहार होगा । २

## विधान सभाका अध्यक्ष

जो अध्यक्ष (स्पीकर) कानूनका किसी धाराके स्पष्ट अथवा जान-बूझकर उलटा अर्थ करे तो वह अपनेको इस उच्च पदके अयोग्य सिद्ध करेगा और वाग्रसके ध्येयको बदनाम करेगा। उसके लिए यह आवश्यक है कि वह हर तरहसे वाग्रसकी प्रामाणिकता और शुद्धताकी साख बनाय रखे। लेकिन मेरा मत यह तो यही है कि जहां किसी धाराके स्पष्ट दो या दोसे अधिक अर्थ लगाये जा सकत हों वहां अध्यक्ष इस बातके लिए बधा हुआ है कि वह उसका वही अर्थ लगाय जा राष्ट्रीय ध्येयके अनुरूप पड़ता हो। लेकिन जब किसी धाराका सिर्फ एक ही अर्थ निकलता हो तो अध्यक्षको बिना किसी हिचकिचाहटके वही अर्थ बताना चाहिये। मुझे इसमें कोई संशय नहीं कि अध्यक्षकी ऐसी निष्पक्षतास उसकी रियासि बनेगी और उस हद तक वाग्रसका नतिक प्रतिष्ठा भी जरूर बढ़ेगी। हिंसाका परित्याग कर देनेका बात वाग्रसकी शक्ति तो वाग्रसवादियाकी व्यक्तिगत नतिक दृष्टता जीर निभयता पर ही पूणत अवलम्बित है। १

## सरकारी नौकरिया

एसा लगता है कि अगर यूनिफन सार प्रान्तोंका हर जगहमें एसा प्रगति करनी हो तो हर प्रान्तका नौकरिया पूरे हिन्दुस्तानकी प्रगतिक समायम ज्यागानर रहाके रहनेवालाको ही दी जाना चाहिये। अगर हिन्दुस्तानको दुनियाके सामन स्वाभिमानस अपना सिर ऊंचा रखना है तो जिन प्रान्त और जगहों जानि या तयक्का पिछला हुआ नहीं रखा जा सकता। जिन हिन्दुस्तान अपने हथियारोंके बल पर ऐसा नहीं कर सकता जिनसे दुनिया ऊंचा चुरा है। उन अपन हर

नागरिकने जीवनमें और हालमें ही मरे बताय हुए समाजनाम्में प्रकृत होनवागी अपनी मौखिक ससृष्टिक द्वारा हा कमवना चाहिये।

इसका यह मत है कि अपना याजनाआ या उग्रूराका जनप्रिय बनानके लिए किसी भी तरहका गतिन या दशाध काममें न लिया जाय। जो चीज मवमुच जनप्रिय है उस मवस मनमानक लिए जनताकी रायके सिवा दूसरी किसी गतिनकी गामद हा जम्स्त ही। इसलिए विहार उनीमा और आसाममें कुठ गामा द्वारा का गद हिसाक जा बरे दय दयनेमें जाय व कभी लिताई नही दन चाहिये थ। अगर कोई आत्मी नियमके खिलाफ काम करता है या दूसरे प्रातारु लोग किसी प्रातमें आकर वहाके लोगके अधिकार छीनते हैं तो उह दड देन और ध्यवस्था बनाय रखनके लिए जनप्रिय सरकार प्रातामें राय कर रही ह। प्रातीय सरकाराका यह फज है कि व दूसरे प्रातामे अपने यहां जानवाके सब नोगोकी पूरा पूरा रक्षा कर। जिन चीजको तुम अपनी समझते हो उसका इम नरु उपयोग करो कि दूसरेका नुकसान न पडके — यह यायका जाना पहचाना सिद्धांत है। यह नतिक व्यवहारका भी सुदर नियम है। आजकी हात्तमें यह कितना उचित मालूम होता है।

रोममें रोमनाकी तरह रहो यह बहावत जहा तक रामन बुरादयोसे दूर रहती है वहा तक समझदारीस भरी और लाभ पडवाने वाली बहावत है। एक-दूसरेके साथ घुठ मिलकर उतनि करनके काममें यह ध्या रखना चाहिये कि बुरादयोको छोड लिया जाय और जल्दा इसोकी पचा लिया जाय। १

जहा तक सरकारा विभागामें नौकरियाका सवाल है मरी राय है कि यदि हम साम्प्रदायिक भावताको यहा भी दाखिल करग तो यह बात मुगासनके लिए घातक सिद्ध हागी। गासन सुचारु रूपस चके इसके लिए यह जरुरा है कि वह सबसे योग्य जात्मियाक हाधमें रहे। उसमें किसी तरहका पभापात तो होना ही नही चाहिये। अगर हमें



पाच इजीनियरोंकी जम्हूरत हो ता एमा नया हाना चाहिये कि हम हरएक जातिसे एक एक इजानियर ल। हमें ता पाच सबसे सुयोग्य इजीनियर चुन लेने चाहिये भल व सब मुमलमान ह। या पारसा हा। सबसे निचले दरजेकी जगह यदि जरूरा मामूम हो परीक्षा जरिये भरी जाय और यह परीक्षा किमी ऐसी समितिना निगरानामें हा जिसमें विविध जातियाके लोग हा। लेकिन नौकरियाका बन्धारा विविध जातियाकी सख्याव अनुपातमें नहा हाना चाहिये। राष्ट्रीय सरकार बनेगी तब शिक्षामें पिछडा नइ जातियाका शिक्षाके मामूममें जरूर दूत राकी अपक्षा विनाप सुविधायें पानवा अधिनार हागा। ऐमा व्यवस्था करना कठिन नहा हागा। लेकिन जा लोग दाव पासन-तयमें बडे-बडे पनाकी पानवी जाकाशा रखत ह उन्हें उसव लिए जरूरा परीक्षा अवश्य पास करना हागा। २

### सिविल सर्विस और तनताहें

मरे पास शिवायतें आती = कि सिविल सर्विसवागना इतना भारा तनताह क्या दा जानी ह? लेकिन सिविल सर्विसवागना हम एकम हटा नही सकते। अगर हटा नें ता काम कैसे चल? कुछ लोग ता चल गये। इसलिए जा लोग रह गये ह उन्हें अधिक महनतम काम करना पडता है। इसलिए सरकार चलने उह पयसा भी निया है। जा लोग घयसादक लायक ह उह घयसा मिल ता मन कार्द शिवायत नहा हा सकती। परन्तु मच्चा सिविल सर्विस ता हम लोग ह। हम जितना विश्वास सिविल सर्विसके लोग पर ग्यन ह उतना अगर अपन आप पर रखें ता हम बहुत आग बढ़ सकत ह। अगर हम दगा कर ता जम सिविल सर्विसवागना सजा हाना है थग ही हमें भी सजा हानी चाहिये। अमुक काम गीप कर कहा जाय कि इतना काम आओकरना हा है। हा तरल मारी प्रजाता हम जिम्मदार समगते ह। जिन्हें पार्लियामेण्टरी मन्त्रेग यनाने ह उन्हें भा प्रतिमात् भारी वेतन देना पडता है और सिविल सर्विसवागना भा। जब बाधसक

हाथमें कराववा कारागार नही था तब तो हम किसानों मासिक खतन नही देते थे। मासिक खतन दना मवान दना और पार्लियामेंटरी सप्लायरी बनाना यह मुग तो चुभता है। काप्रसवा काम हमगा सवा करना रहा है। पहल हमें आजादी हासिल करना थी। जत्र हमें हिंदुस्तानको ऊचा उठाना है। र यह दखना है कि हिंदू सिक्क मसल मान पारमी श्रीराइ सब गग यहा गात्तिसे रह। इस कामके लिए क्या हम पस नें? आज तक नही दने थ ता थव कमे नें? १४ अगस्तके बाद हमन देगका कितना आग बनाया है? कितना पाना गिरा कितनी उपन बनी? कितन उद्योग ब? इसका हिसाब ता लीजिय। पस क्या कर सकते ह? हिंदवा काम ब? नाम ब? और दाम बढ तब तो बात है। तब गात्रक लोग भी महसूस करग कि कुछ हो रहा है। एसा न हो और हम खच बढान जाय बह कम हो सकता है? हर पेढीको अपना आमदनी और खचका हिसाब रखना पता है। जामनी खचसे ज्यादा हा तो अच्छा गगता है। केकिन इसस उलटी बात हो तो चिंता होता है। हिंदुस्तान एक बडी पेग है। आज हमारे पास पसे ह इमलिण हम नाचते ह। केकिन हम सभठ कर नही चरये तो वे पसे रहनवाडे नही ह। ५

### सिविल सर्विसवालाके कतय

लाकराय तो वही है जिसमें बाई रास्ते चलता जायी उसक विषयमें क्या कहता है इसका अभ्यास किया जाय। और एसा राय वात्सरायके महल या आगीगात मवानमें बठकर नही चर सकता। हम तो गरीब ह। इसलिये पल चलकर काम हो सकता हो तो हम माटरका उपयोग न करे। यदि कभी कोई मोटरमें बठनेको कहेगा तो हम उससे भी कहग कि आपका माटर आपको ही मुबारक हा। हम ता पल ही आफिम जायेंग। महगामें रहनवाला या मोटरमें फिरनवाग आमी राय नही चला सकता कयोकि एसके कारण उस आम जनताकी प्रतिदिया मान्ध होना कठिन हो जाता है। केकिन

यदि यह पत्र घूम फिर और आम जनताके बीच रहे ता उसे सच्ची जानकारा प्राप्त हो सकती है।

दूसरी एक बात और है। मेर पास ऐसी गिनायतें आई ह कि आजकल सरकारने व्यापार भी गलत कर दिया है। उदाहरणके रूपमें अनाजकी व्यवस्था राजद्रवावू मभाऊ रहे ह वस्त्रकी व्यवस्था राजाजा दख रहे ह। एसी जीवनक लिए आवश्यक वस्तुआका व्यापार थ्रैण्ड पुरपाक हाथमें होते हुए भी लोकाको जरूरी वस्त्र और अन्न मिल नहीं रहा है। इसका कारण यह है कि सरकारी नौकर काफी बड़ी मात्रामें रिटायर लेत ह। म नया बह सकता कि यह खबर कहा तक सही है। लेकिन यदि सरकारी नौकर ऐसे ही हा तो उन विभागाक मंत्रियानो इस बातकी उचित जाच अवश्य करनी चाहिये। सरकारी नौकराका जिन पर कृपा हा जिनका बसाला हो अथवा सगे-सम्बन्धी हा उन्हें तुरन्त नौकरी मिल जाय सम्बन्धा अपेक्षा दुगुने-तीगुने रेशन कार्ड मिल जायें—एसी तमाम बातें यदि सच हा तो हमें गरम जाना चाहिये। अब हम पर कोई विदेशी सरकार राय नहीं कर रहा है। और अग्रजाक जमानमें छोट सरकारी कर्मचारिया पर जिस तरहक हुकम बजाये जान थ बस हुकम भी अब आप पर काइ नहा बजा सकता। इसलिए छोट-बड़े सब लागाका कफालतीक माय देगना सवा करनी चाहिये। आपका अपने मनस यह बसि निवाल दना चाहिये कि नौकरा करक पम कमा लिय और अपना पेट भर गया तो हमने मुनिमा जात ली। जिनन भी सिविल सर्विसका कर्मचारा हं उनस म दिनतीपूर्वक बहना चाहता ह कि आजसे आपकी जिम्मेदारी दम गुना ज्यादा बन रही है। आप लाग जितना कफालतीक देगनी सवा करगे उतनी हा जल्दा सरकायमें सुख गान्ति और समृद्धि प्राप्त होगा। ४

### घुड़दौड़ और सिविल सर्विस

नौच दिया हुआ भाग हरिजनसभु में छप एक गुजराना पत्रका सारांग है

बरसातके मौसममें पूनामें घुन्नीठ हाती है। तान स्पगल गांधिया हर राज पूना जाना हं और वागम आना हं। और यह तब होता है जब गांधियामें जगह नहा मिलता और चापा रियारो यात्रियास ठसाठम भरी हुई गांधियामें सफर करना पन्ता है। यात्री अक्सर पापना पर लड लड सफर करते देव जाने ह। नतीजा यह होना है कि कभी कभी प्राणघातक दुघटनाए हो जाती ह। ममें यह बात और जो दाजिय कि जब पट्रोलकी सत्र जगह कभी है तत्र विगप मोटर गांधिया भी चम्बईस पूना दौडती ह। क्या य यात्री चम्बईमें अपना हमगावा रागन नहा लेते? क्या यह स्पगल गांधियामें और घन्नीठके मन्ानमें नात्ता नहा मिन्ता?

इस परसे मेरे मनमें सिविल सविसकी जाच करनकी बात पदा होती है। जिन लागाके घरे प्रबधकी हम पहुँचे निदा करते थ क्या वे ही राग राज देगना राजकाज नहा चला रहे ह? हमारा आज क्या हालत हा रही है? हमें जरूरतवा अनाज और कपडा भी प्राप्त नहीं हो रहा है। फिर भी हम ऐसे खर्चीठे खर-तमागामें फसे हुए ह।

म अक्सर धुडदौडकी बरान्याके वारेमें लिख चुका हू। मकिन उस समय मेरी बात पर काइ ध्यान नहीं देता था। विदेगी शासक इस बुराईका पसद करते थ और उहान इसे एक तरहकी अच्छाया जामा पहना दिया था। लेकिन जब उस गन्दी बुराईस चिपक रहनका काई कारण नहीं है। या कही एसा न हो कि हम विन्नी ठुकू मनकी बुरान्याको तो बनाय रखें और उसकी अच्छाइया उसक साथ ही खतम हो जाय?

पत्र लिखनवाले भाई सिविल सविसके वारेमें जो कहते ह उसमें बहुत सचाई है। वह एक एसी सस्था है जिसक आत्मा नहा है। वह अपने मानिकके ढग पर चन्ती है। इसलिए अगर हमारे प्रतिनिधि

सचेत रह और हम उन पर अपना फज अंग करने के लिए जार डाल तो सिविल सर्विसके जरिये बहुत कुछ काम किया जा सकता है। आग चना किसी भी लोकतांत्रिक सरकारका भाजन है। लेकिन वह रक्षात्मक और समयद्वारास भरी हाना चाहिये। जन-आन्दोलन जारममें काग्रस अपनी जिस बुनियादी पवित्रताके लिए प्रसिद्ध थी उस पर हा जनताका आगा टिकी हुई है। और अगर हमें जिता रहना है ता काग्रेसमें वह पवित्रता हमें फिरम लानी होगी। ५

### सिविल सर्विस और कट्टाल

सिविल सर्विसके कमचारा आफिसामें बठकर काम करने के आग ह। वे दिखावटी कारवाइया और फाइलोंमें ही उलझे रहते ह। उनका काम इगम आगे नहीं चलाता। वे कभा किसानाक सम्पकमें नहा आय। वे किसानाके बारेमें कुछ नहीं जानते। म चाहता हू कि वे नम्र बन कर राष्ट्रमें जो परिवर्तन हुआ है उस पहचानें। कट्टालगी बजहस उनके इस तरहके कामामें कोई रखावट नहीं हाना चाहिये। उन्हें अपनी सूच-बुझ पर निर्भर करनेका मौका देना चाहिये। गारगाहावा यह नतीजा नहीं होना चाहिये कि वे अपने आपका लाचार महसूस कर। मान लीजिय कि इस बारेमें बस बढ डर सब साबित न। और कट्टाल हटानस हास्त ज्याग विगड नाय ता वे फिर कट्टाल ग्या मकते ह। मेरा अपना ता यह विश्वास है कि कट्टाल उठा नैनम हालत सुधरेगी। आग सुद इन सबाना हू करनेका वागिा करण और उन्हें आपसमें लडनेका समय नहीं मिग्या। ६

### सिविल सर्विस पुलित और फौज

आज हिन्दुस्तानमें सिविल सर्विसके कमचारा पुलित और फौज जिनमें ब्रिटिश अफसर भी शामिल ह सब जनताक सबक ह। वे न्नि अब बीग गय जब वे विन्गी सामवासे तनगाह पाकर जनताक साथ मान्निता जता बरनाय करा थे। अब उन्हें पचायन रापक कफा दार मजबूत बनना हागा। यह मन्निपाते पायेन नैन हाग। उन्हें

पुसंगारा अप्रामाणिकता और पक्षपातम उभर उठना होगा। दूसरा तरफ गंगास यह अपेक्षा रखी जाती है कि व गंगसन प्रबन्धमें पूरा पूरा सहयोग दें। अगर सिधिल सर्वगमर कमचारी गुलाम और फौज अपना वनय भूक्त ह तो वे बबफा वरार न्ये जायेंग और स्थितिनो मुधा रनक न्ये उचित वन्म उठाय जायग। इन नौरियामें वाम वरनवाये अप्रामाणिक और पक्षपाती लोगव गिन्गक अपनी गिवायतें जाहिर वरनवा जनतावा पूरा अधिकार है। ७

मिन्गि सर्विसके सन्स्थाको नद सरकारके अनुबूठ वननकी गिगा जभास नी चाहिय। वे विसी वीमवा पक्ष नही ल सक्ते। उनमें सम्प्रणयवाक्का जरासा भी बिह्ल न्येवाई दे तो उनके साथ सक्तीस वाम नेना चाहिये। उसके गिन्गि गन्स्थाको जानना चाहिय कि अब उह भारतकी नद सरकारव प्रति वफानार रहना है न कि पुरानी सरकार और इमन्ये घट गिन्गक प्रति। अपन आपका गंगक और न्ठ माननकी उनकी जादतका स्थान अब जनताकी सच्ची सेवाकी भावना को न्ता चाहिय। ८

८३

### सरकारी नौकरोकी बहाली

मरा फाइलमें एस कागसजनाके कई पत्र पड हुए ह जिहोन असहयोग जागानके दिनमें सरकारी मस्याओंसे असहयोग कर न्यिया था। इन गंगामें वे भी थ जिहान सरकारी नौकरिया छोड दी थी। इनमें म कुठ अब अपनी बहालीके लिए आन्दोलन कर रह ह। अपने इस जागानके समयनमें वे मेरी उस अपीलका हवाला देते ह जो मन जनमाधारणसे की थी और जिनमें सरकारी नौकर भी गंगिल थ। जहा तक मुझ पता है कन् या नकसान उठानवाओमें से जिन्होन मुआवजेके लिए कोई आदोगन नही किया वे ह — सत्याग्रही जिन

पर भारी भारी जुमाने मिय गय कुटुम्बी या रिस्तेदार जा अपने जीविका कमानेवाठ सन्स्यासे हाथ धा बठे, काल जिहाने अपना कबान्त छा दी और मुफ्तमीका हालतमें पहुच गये, और विद्यार्थी जिहाने अपनी पन्नाइ और भविष्यती तमाम आगयें छाड दा। उनका खयाल यह है कि स्वेच्छापूवक किया गया कष्ट-सहन स्वय हा अपना पुरस्कार है और ऐमा कष्ट-सहन बिना और मुजाबजेका दावा नहा करना।

यदि ये सबके मय काप्रेसी मत्रियाके सामन इम तरहका दावा करन लग जायें तब ता उनका सचमच यह दुर्भाग्य ही बहा जायेगा और मुजाबजाके इन मारे दावा पर विचार करनके गिवा व दूसरा कोई काम ही नही कर सकये। इन दावाको पूरा करनके लिए उह रूपया भी बहास पदा करना पडेगा जो बई बराद हागा चाहिये। इसके अगवा जिन सरकारी नौकरोंने अपनी नौकरिया मजबूरन् या अपनी मरजीमे छाड दी थी उनके लिए यह यताना भा बठिन हागा कि दूसर पीडिताने उननी तुन्नामें कम तकरीफें उटाइ था।

भरा रायमें इन मृतपूव सरकारा नौकराने एक बगव नान मवस कम तमगीफ था नुस्सान उटाया है। और अगर इनन बरसा तब उहें कोई काम नही मिला और व मिलनुल बेकार बर रा ह ता व सायत ही रायके योग्य नौरर हा सबत ह। काप्रेसजनार लिए सरकारी नौकरी कोई आर्थिक उन्नतिया द्वार नया है जम ता गन संवापा एव साधन हाना चाहिय। इसलिए सिफ के हा काप्रेसजाना सरकारी नौकरियामें प्रवण कर जिनकी बाजार-नीमत उमर पना ऊकी हो जा वे सरकारसे पा मवन ह। व तमा नियमन मिय जा मक्ने ह जब सरकारको उनका आवश्यकता हा। काप्रेसजा आश्रय जसी कोई चीज ता होनी हा नहा चाहिय। १

## लोकतंत्र और सेना

एक सैनिक अधिकारी अपने मित्रको लिखते हैं

कितना दुःखी बात है कि उन तमाम देशों में जहाँ प्रजावा राज्य है राजनीतिज्ञ सनाके बारेमें बहुत कम जान रखते हैं और उसमें बहुत कम रस लेते हैं। सेनासंबंधी बात कुछ सीखा सकते हैं। उन्हें कमसे कम यह तो सावधानी ही चाहिये कि दूसरे सरकारी नौकराके अनिश्चित सैनिक क्या अपनी नौकरियों इतना प्रेम और नमकहलालीकी भावना रखता है हालांकि सेनामें उसे दूसरी नौकरियासे क्या ज्यादा कष्ट खतरे और मसीबतें उठानी पड़ती हैं? आपके पास एक गानदार सना है। और जब आपके सबसे योग्य व्यक्ति काफी सख्यामें उसके अधिकारी बनेंगे तो वह और भी गानदार हो जायगी। अगर आप लोग सही प्रकारके अधिकारी चुन सकें तो आपको सेनाके बारेमें किसी तरहकी चिंता करनेकी जरूरत नहीं रहेगी। तुर्कानामें यह सेना किसीसे कम नहीं होगी। लेकिन अगर गलत प्रकारके अधिकारी रख लिये गये या राजनीतिको सेनामें घुसना दिया गया तो भारी नुकसान उठाना पड़ेगा। अभी जनक वर्षों तक हिन्दुस्तानको काफी मुश्किलोंसे गुजरना है। मेरा विश्वास है कि आपकी सेना ही सकटके समय आपके काम आयगी। रक्त भी कमसे कम बचेगा। परन्तु बात यह है कि सनाके लिए सही प्रकारके अधिकारी चुन जाय और राजनीतिज्ञ तथा धार्मिक झगडाको उससे दूर रखा जाय।

अगर यह सब हो कि प्रजातंत्रवाले तमाम देशों में राजनीतिमें भाग लेनेवाले लोग सेनामें रस नहीं लेते तो कोई दुःखकी बात नहीं



है। दुर्गमी बात तो यह है कि व सेनामें गन्त प्रकारका रम नैते ह। व ममझने ह कि सेना उनका रखा करती है प्रजातन्त्रका रखा करता है धन लाता है, दूसर दगा पर हमारा अधिकार जमाना है और दगा भीतर दगा-फसाद हाने पर सरकारको अपने सहारे रखा रखना है। क्या हा अच्छा हा कि लाकराय विभा भा बातक लिए सनाका सहारा न ल ताकि वह मच्चा लोकराय हो सक।

जिम सनाका ऊपर बकालन की गई है उसन हिन्दुस्तानके लिए क्या किया है? मुच डर है कि विसा अधमें भा उसने हिन्दुस्तानको गम नहीं पहुचाया है। उनने त्रेचारे गला-बराठा त्रेचकामियाको गुगम बना रखा है। —ह बौड़ी मीनाना मुहताज बना लिया है। उस सेनारा त्रिणि विभाग तितना जली यनाम बापिम नज दिया जाय और किमी अधिक अच्छे कायमें गगा दिया जाय —ना हा हिन्दुस्तानका दगा और दुनियाका नग नागा। सेनाने हिन्दुस्तानी विभागका विभाग भी जितनी जल्द विनागक बायस हटाकर सजनेके कायमें गगा दिया जाय उतना हा लाकरायक लिए वह अधिक उपयोग हागा। जा गवगाय बकल सनाक महाने ही जावित ल सके व एक विवम्भा चाज है। गनित गवित मनक विरागता शरनी है। उसमें मनपवका आत्मा दग जाता है। दग गुमान्य सागत इनने बरगामे विगा दुर्भनको गगमें बापिम रगा है। उसका दृगाम आज म्पित यह हा गर्द है कि कमिन्ट मिगान प्रय ताक बायजूद हिन्दुस्तानको गाय एन छागी या गमी घरदु ल्हामें भे गजरना पड़े। उगका बन्वा अनुभव ही नाय हमें गगान्न गनाक मोहा छज सवेगा। उनमें आगे या निपमक अनुगार चन्त्रा जा रवा है वह तो समाजक हर अगमें हागा बापिय। गग गुरारा निगा दें ना नना आत्मोका हैवान बनाना तिस और कुछ नहीं गिगाना। अगर स्वतन्त्र हिन्दुस्तानको भा आजक जितना हा गनित मच उगना

पता तो भूसा मरावाल् करादा गगारा उसनी स्वाप्रनास को लाम नहा पहुधगा । १

अगर हम स्वराज्यनी दहरी पर ग ह तो हमें सनासो अपनी समगसर रचनात्मक बायमें उगवा उपयोग धरनग जरा भी हिच रिचाना नहा चाहिय । आज सर उसना उपयाम हमार गिगक अधाधुध गागेवार करनमें हुआ है । आज सनावा हल चलाकर अनाज पना कर कुए खाँ पागा साफ कर जीर दूसरे अनर रच नात्मक बाय करवे लागाका आगनी किरकिरी ऽ रहकर सबक प्रिय वने । २

८५

### अनुशासनका गुण

आजाद राष्ट्रमें अनुशासन कसा होना चाहिय इसकी मिसाल हमें अंग्रेजासे लेनी चाहिये । रानी विक्टोरियाके वारमें यह कहानी प्रसिद्ध है कि जब वह १७ बरसानी थी तब एक रात उस मह बहनके लिए जगाया गया कि वह इग्लडकी रानी है । वह जवान बडा भगवान द्वारा सोपी गई तनी भारी जिम्म्गरीसे स्वाभाविक रूपमें धवरा गई और जरूरतसे ज्याना डर ग । बर प्रधानमन्त्रीन रानीके सामन घुटनाके बल झुक्कर उसे डास बधाया । रानी विक्टोरियान सिफ इतना ही कहा कि म ठीक हो जाङगी । इग्लडक अनुशासन पालन वागे गोगान ही रानाको राज्य करनमें मदद की । आज म चाहता हू कि आप यह समझ ले कि आजादी जापक दरयाजे पर खडी है । बास राय मन्त्रि मन्त्रके सिफ नामक अयक्ष ह । आप दगाके राजबाजमें उनकी मदकी जागा न करके ही उहे मदद पहुचायेंग । जापके बतान के वागाह पडित जवाहरलाल नहरू ह । वे आपकी सवा राजा बनकर नहा बल्कि प्रथम पवितके सेवक बनकर ही कर रह ह । वे हिंदुस्तानकी

सेवाके द्वारा सारी दुनियाकी सेवा करना चाहत ह । जवाहरलाल अंतर्राष्ट्रीय चर्किन ह और वे हिंदुस्तानमें रहनवाले सारे विदेशी राजदूतासि मित्रताका सम्बन्ध रखते ह । लेकिन अगर लोग अनुशासन तोडकर जवाहरलालके कामको बिगाड दें तो वे अकेले राज नहा चला सकते । पहलके स्वच्छाचारी शासकाकी तरह वे तलवारके बल पर राज नही कर सकते । एमा राय न तो पचायत राज हागा और न जवाहर राज । हर हिंदुस्तानीका यह कतव्य है कि वह मंत्रियाके कामका जमान बनाये और उसमें किसी तरहका हस्तक्षेप न कर ।

जापको याद होगा कि पडित नहरू किस प्रकार एक साठ पछठ काश्मीर गये थे जब कि उनका जिल्लिम रहना अत्यन्त आवश्यक था और किस प्रकार उस समयके चाप्रस प्रसिडेंट भौगना साहबके आदेशसे वे दिल्ली लौट आय थे । आज पन्तिजी फिर काश्मार जानकी बात कर रहे ह । उनका दिम लुकी है क्याकि काम्मारियाके नेता गण अदुला साहब अभी तक जलमें बन्द ह । लेकिन मुझ लगना है कि पडितजीका जिल्लिममें रहना ज्यादा जरूरी है । इसलिए उनके बन्दे मन काश्मीर जानकी इच्छा प्रकट की है । किन्तु जवाहरलाल मय बहा जानरी आना दें इसका पहल उन्हें चन्तमी बतावना विचार करना हागा । यदि म काश्मीर गया तो वहास भी उसी तरह बिहार और बंगालकी सेवा करूया जस म इन प्रान्नामें धरीरसे मौजूद रह कर करता । १

## मन्त्री और प्रदशन

अब हमें देना ही भिन्न रीतिम मागणन करना पडगा और उसके लिए वापकर्ताआवा एक अच्छा दल गटा करना हागा। इन वापकर्ता आवा यह मतव्य हागा कि वे आगामें घुल मिलकर उनके साथे दुला और कष्टातो जानें और उह यह पाठ सिगारमें कि अब यह दग हमारा है और दगवा गसन चगनवाते मन्त्री हमारे चने हुए ह। अब यदि उनके खिलाफ प्रगणन किय जाय तो उनस मन्त्रिमाकी अपक्षा गगवा ही अपमान अधिक् हाता है। हा यदि कोई मन्त्री एमा काम करता हो जिसस आम जनताके साथ अयाम हो तो जनता उस वान पकड कर मन्त्रीपदस अलग कर सकती है—उमके स्थान पर दूसरेका बठा सकती है। अब यह गकिन भी जनतामें विवसित होनी चाहिय। मन्त्रा अपन पदो पर जनताके स्वामियाके नाते नही बटे ह परन्तु उनके सेवकाके नाते बठ ह। यहा बात म समाजवाग्नियासे भी कह रहा हू। परन्तु जसे लोग भी आज मरी बात समचते नही ह यद्यपि म आगा तो खता ह कि उह समझा सकूगा। वाग्रसन अप्रजाके खिलाफ आजादीकी ल्गाई लडते समय जो काम किया उसे भूल कर अब वाग्रसनो राष्ट्रकी जनताकी राजनीतिक शिक्षण देनेकी मुहिम शुरू करनी चाहिय। १

## नमक-कर

आज मुझ एक दूसरी बात कहनी है। नमकवा कर रद्द करानेके लिए हमन दाडीकूच की थी। बेगव वह कर ता रद्द कर दिया गया। परन्तु नमक आजकल महंगा हो गया है। अगर यह सच हो ता हमारे व्यापारियोंके लिए यह लज्जाकी बात है। गरीब लोग जिम नमक पर निर्वाह करते ह उस नमकसे भी व्यापारी नफा वमानकी इच्छा रखें यह सबमुच घृणास्पद और नित्नीय है। गवकर न मिले ता आत्मी काम चला सकता है परन्तु नमकके बिना गरीबाक गलेके नीच रोटी नहीं उतर सकती। सरकारसे भी मरी बिनती है कि इस बारेमें वह जाग्रत रह। सरकारको चाहिये कि वह अपनी देखरेखमें नमकके आगरा और कारखानाका काम चलाये जिससे गरीब जनताको भूल बीमत पर नमक मिल सक। नमक-कर रद्द होनवा लाभ दानकी जननास मिलता ही चाहिये। अगर योग चाह तो य गावामें और शहरामें घर घर नमक बना सकते ह। ऐसा करनेमें कोई उह रोक नहीं सकता। अगर हम अपना आलस्य छोड दें ता एम अनेक गह उद्योगारा बिबाम हो सकता है और हमारी आर्थिक और नतिक स्थिति सुधर सकती है। अगर लोग रद्द नमक बनायें और उमके बितरणकी व्यवस्था कर तथा उसन नफा वमानस लोभ छोड दें तो नाममात्रकी कामत पर ही नमक मिल सकता है। परन्तु हमारे दामें आज गवत्र स्थाय और भ्रष्टाचारवा बोलबाग है। एसा परिस्थितिमें रामरानकी बलना कम सिद्ध हो सगता है? अकिन एक बात निश्चित है कि यदि पाकिस्तान या भारतकी सरकार अपनी सत्ताक गवमें आबर नमक पर कर लगायगी तो य एक लज्जाजनक और दुस्त कृत्य हागा। भरा आगा तो यह है कि ऐसा नहीं हागा। आज हम नमक हटाम बन गये ह। १

## अपराध और जेल

अहिंसक मांग पर चक्रवर्ती स्वतंत्र भारतमें अपराध तो हाग परन्तु अपराधी नहीं हाग। उह सजा नहीं दी जायगी। दमर विसा रागवी तरह अपराध भा एव राग है और वह प्रचलित सामाजिक व्यवस्थाकी उपज है। इगलैंड सारे अपराध—जिमें हत्या भी शामिल होगी—राग मान जायग और रागवी तरह ही उनका इलाज होगा। यह अलग प्रश्न है कि एसा भारत कभा जम्मित्वमें आयगा या नहीं। १

आजाद हिन्दुस्तानमें कलियाके जल बस हान चाहिये? बहुत समयस मरी यह राय रही है कि सारे अपराधियोंके साथ बीमारा नसा चरताव किया जाय और जऊ उनके अस्पताल हा जहा इस बगके बीमार इलाजके लिए भरती किय जाय। कोई आत्मी अपराध इसलिए नहीं करता कि एसा करनमें उस मजा आता है। अपराध उसके रागी दिमागकी निगानी है। जलमें एसी किसी खास बीमारीके कारणका पता लगाकर उन्हें दूर करना चाहिये। जब अपराधियोंके जल उनके अस्पताल बन जायग तब उनके लिए आशुतात इमारतोंकी जरूरत नहीं होगी। कोई भी देश एसा नहीं कर सकता। तब हिन्दुस्तान जसा गरीब देश तो अपराधियोंके लिए बड़ी बड़ी इमारतें बना ही कैसे सकता है? लेकिन जलके कमचारियोंकी दृष्टि अस्पतालके डाक्टरों और नर्सों जसी हानी चाहिये। कलियाको यह महसूस करना चाहिये कि जलके अपसर उनके मित्र ह। अपसर वहां इसलिए ह कि व अपराधियोंको फिरसे मानसिक तदुरस्ती प्राप्त करनमें मदद कर। उनका काम अपराधियोंको किसी तरह सनानका नहीं है। लोकप्रिय सरकारोंको इसके लिए जरूरी आदेश निकालने होंग। लेकिन इस बाब जलके कमचारी अपनी व्यवस्था को मानवतापूर्ण बनानेके लिए बहुत-कुछ कर सकते ह। २

## स्रोत

[इसमें य इ यग इडिया क लिए ह हरिजन के लिए ह से हरिजनमक्क'के लिए हि न हिंदी नवावन के लिए तथा नटेशन स्पेचिड एण्ड रान्टिग्स आफ महात्मा गाधी (चौथा संस्करण) नटरान, मगन के लिए आया है।]

### विभाग-१

प्रकरण-१

१ य ड १०-९-३१ प २२५

२ ह २५-१-३९ प ६५

३ ह १८-५-४, प १२९

प्रकरण-२

१ हि न २९-१-२५ प १९८

२ य इ २९-१२-२० प ६

३ हि स्वराय (१९५९) प २३

४ नटमन प ४०६-०८

### विभाग-२

प्रकरण-३

१ ह स १-५-३७ प ८९९०

प्रकरण-६

१ ह म ८-५-७ प ९१९२

प्रकरण-५

१ ह म १०-२-४६ प ८

प्रकरण-६

१ ह मे २०-५-७ प ११० ११

### विभाग-३

प्रकरण-७

१ ह म १७-८-४७ प २३४

प्रकरण-८

१ ह स १६-७-३८ प १७० ७३

प्रकरण-९

१ ह म १ - - ६० प ७२

प्रकरण-१

१ ह म ०१-७-४६ प ००७

### विभाग-४

प्रकरण-११

१ ह से ११-१-४० प ३८६  
(आ)

प्रकरण-१२

१ ह स २-६-४६ प १६२ ६३

### विभाग-५

प्रकरण-१३

१ ह से ०८-७-४६ प २३७ ३८

प्रकरण-१४

१ ह स १६-६-४६ प १८४

प्रकरण-१५

१ दिल्ली नायरी (१ ६०) प  
१२४ २५

२ दिल्ली डायरी (१९६०) प  
३३० ३१

प्रकरण-१६

१ ह म २ -४-३८ प ७६

२ ह मे १४-८-१७ प २०७

### विभाग-६

प्रकरण-१७

१ ह म २५-१-४२ प १६

२ ह ०-१-७ प ७५

३ रचनात्मक नायक (१९५८),  
प १० १४

प्रकरण-१८

१ ह ७-८-४६ प ७६

२ ह म २८-८-४६ प १०९

ह स ७-४-६६ पृ ७०

प्रकरण-१९

१ य स ८-१०-११ पृ २९७

२ ह स २-३-४७ पृ १८

३ ह स २८-१-३० प ४०४ ०५

प्रकरण-२०

१ य इ ७-७-२७ पृ २१९

२ य स ८-१२-२७ पृ ६१५

१ मत्स्याग्रह इन माउथ जात्रिका  
(१९६१) प ८८

४ नगस हाइस (१९५८) पृ  
५१५२

विभाग-७

प्रकरण-२१

१ ह स १७-७-३७ पृ १७४ ७५

प्रकरण-२२

१ ह स २४-७-३७ प १८२

प्रकरण-२३

१ ह स ७-८-३७ प १९८

प्रकरण-२४

१ ह से २१-८-३७ प २१४

प्रकरण-२५

१ ह से ४-९-३७ प २३ ३१

प्रकरण-२६

१ ह से ३१-७-३७ पृ १९ ९३

प्रकरण-२७

१ ह से १५-११-३७ प ३१०

प्रकरण-२८

१ ह से २८-८-३७ पृ २२२ २३

२ ह से २४-१२-३८ प ३६०

ह स १-४-३९ प ४९

ह से १५-७-१९ प १७५ ७६

प्रकरण-२०

१ विहार पछा लिही (मुजराना)  
(१९६१) पृ ४४०

२ ह १०-१२-३८ पृ ३६८ ६९

३ ह स २१-१०-३९ प २८४  
८५

४ ह स २८-४-४६ प १०४

५ ह १-९-४६ पृ २८८

६ ह स २-१-४६ प ३६२

७ ह स २७-१०-४६ पृ ३६८

प्रकरण-३०

१ ह स २५-८-४६ पृ २८१ ८२

प्रकरण-३१

१ ह स २५-८-४६ पृ २८६ ८८

प्रकरण-३२

१ य इ १-९-२१ प २७७

२ ह स ९-७-३८ पृ १६१ ६३

३ ह स ३-७-३८ पृ १८९

प्रकरण-३३

१ ह ११-९-३७ पृ २५

प्रकरण-३४

१ ह स १५-१०-३८ प २७७  
७८

प्रकरण-३५

१ ह ४-९-३७ पृ २३३ ३४

२ ह से २५-८-४६ प २७४

प्रकरण-३६

१ ह से २५-९-१७ पृ २५५

प्रकरण-३७

१ ह स २३-६-४६ प १९८

२ ह से १५-९-४६ पृ ३११

३ ह स ३-११-४६ पृ ३७६ ७७

प्रकरण-३८

१ ह स २८-१२-४७ पृ ४१६



प्रकरण-३९

१ ह म, १७-१२-३८ प १५२  
५३

विभाग-८

प्रकरण-६०

१ ह म ३-९-३८ प २२८ २९

प्रकरण-४१

१ ह म १४-४-६६ प ८९

प्रकरण-४७

१ ह म ०१-४-४६ पृ ९६

प्रकरण-४३

१ ह म ०-६-४६ प १७६

प्रकरण-४४

१ ह म ९-११-४७, पृ ३२७ ३८

विभाग-९

प्रकरण-४५

१ कवतवा चमत्कार (१९५६)

पृ ६२

प्रकरण-४६

१ त्रिहारकी कौमा आगमें (१९५९)

पृ ०१० १७

प्रकरण-६७

१ ह म २५-९-३७ पृ ०५१

प्रकरण-४८

१ ह म १६-१०-३७ पृ २७७

प्रकरण-४०

१ ह म ९-६-४६ पृ १७० ७१

प्रकरण-५०

१ ह म १९-१०-४७ पृ ३१७-१८

प्रकरण-५१

१ तिली कापरी (१९६०) पृ

३६३ ६४

प्रकरण-५२

१ दुक्कम न्यु हाराद्वय (१९५९)  
पृ १०१ ०२

प्रकरण-५१

१ ह म ६-८-४६ पृ २४८

प्रकरण-५६

१ ह म २०-९-६६ प ३२०

प्रकरण-५५

१ ह म ०९-०-६६ प ३०३

प्रकरण-५६

१ कला चंगार (१०६१) पृ ६७

प्रकरण-५७

१ ह म ०-११-४७ पृ ३३१

प्रकरण-५८

१ ह म १६-११-४७ पृ ३४०

विभाग-१०

प्रकरण-५९

१ ह म २५-६-४८ पृ १६८

प्रकरण-६०

१ ह म २१-४-४६ पृ १७

प्रकरण-६१

१ ह म १०-९-३८ पृ २१६

प्रकरण-६२

१ ह म ८-९-६६ पृ १०१ ०२

प्रकरण-६३

१ ह म २१-०-४७ पृ २७३

प्रकरण-६४

१ ह म २२-७-४९ पृ १८३

प्रकरण-६५

१ ह म २६-१०-४७ प ३२२  
२३

प्रकरण-६६

१ ह म ४-१-४८ पृ ४५०

२ ह म १-६-४७ पृ



## अथ लेखकोकी पठनीय पुस्तके

अग्रजाक वारमें हम क्या करगे ?	० ६०
अभिनव रामायण	४ ००
आधुनिक जगनमें गांधाजाका काय-पढतिसा	१ ००
आगाका एकमात्र माग	२ ००
एकला पत्रा र	२ ००
उस पारके पत्रामा	५०
एस थ वापू	१ ७५
गांधाजा एक इलक	१ ५०
गांधाजा जीर गरुथेव	० ८०
गांधी जीर माम्यवाक	१ २५
गांधीजाका भाषना	३ ००
गांधा विचार-दाहन	२ ५०
ग्राम ससृष्टिका अगला चरण	१ ८०
जन्मूलस नानि	१ ५०
जावन-लाग	३ ००
जावन गोधन	१ ००
तागीमता बनिषाँ	२ ००
नेहरूजा—अपना या भाषामें	१ ५०
वापूका विराट बत्सलता	१ ०
मनादमा गांधा पूजाति—ग्राम म्	८ ००
नवोत्थ सत्त्व-ज्ञान	६ ००
न्मारी वा	२ ००

नवजीवन टस्ट, अहमदाबाद-१४